Here's The Difference

as

इन अन्तरों का ध्यान रखें

बाइबल की अनेक सच्चाइयों में पाए जाने वाले भेद, अन्तर, विशेषता

और विभिन्न प्रकार व पहलुओं का स्पष्ट प्रस्तुतीकरण

विलियम मैकडोनाल्ड

OPERATION BARNABAS

Here's The Difference!
as
INN ANTARON KA DHYAN RAKHEIN!

William MacDonald

Subject: Bible Doctrine

Copyright: Christians Missions in many lands, Inc.
P.O. Box 13, Spring Lake, NJ 07762, USA

This Hindi Edition is brought out with the kind permission granted by the copyright owners.

First Print - 2017 - 2000 Copies

Hindi Edition Published by
OPERATION BARNABAS (for Project Ezra)
'Benaiah,' Palmpeak layout, Kalkeri Road, Ramamurthy Nagar,
P.O. Box 1633, Bangalore 560016 INDIA,
Tel: (080) 25654427, Fax: (080) 25651166

Translated and Coordinated By ***PROJECT EZRA***
(Office) C/O Nishant Sidh
Near Khan Nursing Home, Stadium Road,
Rajnandgaon, (Chhattisgarh) India 491441
Contact: 9406330075, 07744224713
Email: projectezra@rediffmail.com.
Website: projectezrahindi.blogspot.co.in

Project Ezra Committee Coordinator
Atulya Prashant Masih
Rehoboth Christian Assembly
"Anugrah Nilayam" AB-2; Nehru Nagar Rajnandgaon
(Chhattisgarh) India 491441
Contact: 07744224720, 9301726085 Email:apmasih_cg@rediffmail.com

Acknowledgement
Atulya Prashant Masih & Nishant Sidh (Translators)

With Sincere Love and Prayers

Project Ezra Committee

Dr. Johnson C. Philip, Dr. Mathew Varghese, Dr. Babu Varghese, Bro. Roy T Daniel,
Bro. Babu Thomas, Dr. Shalu T. Nainan, Bro. Rabbi John, Bro. Sam Siju Philip,
Bro. Atulya Prashant Masih

विषय वस्तु

प्रस्तावना

भाग 1: उद्धार सम्बन्धी कुछ अन्तर

1. उद्धार के तीन काल
2. धर्मी ठहराए जाने के विभिन्न पहलू
3. अनन्त जीवन के विभिन्न पहलू
4. प्रायश्चित तब और अब

भाग 2: मसीही जीवन सम्बन्धी कुछ अन्तर

5. पद्वी और व्यावहारिक आचरण
6. सम्बन्ध और संगति
7. न्याय के दृष्टिकोण से क्षमा और पिता के दृष्टिकोण से क्षमा
8. दो स्वभाव
9. पवित्र बनाए जाने के प्रकार
10. पवित्र आत्मा का वास, बपतिस्मा, और पवित्र आत्मा से परिपूर्ण होना
11. उद्धार और सेवा
12. व्यक्तिगत महानता तथा पद्वी सम्बन्धी महानता
13. बुनियादी, महत्वपूर्ण, या गैर-अनिवार्य मुद्दे

भाग 3: परमेश्वर की कार्यप्रणाली सम्बन्धी कुछ अन्तर

14. विभिन्न समय(काल)खण्ड
15. पवित्रशास्त्र में पाई जाने वाली प्रमुख वाचाएं
16. इस्राएल, अन्यजाति, और कलीसिया

17. व्यवस्था और अनुग्रह
18. कलीसिया और परमेश्वर का राज्य

भाग 4: भविष्य में घटने वाली घटनाओं सम्बन्धी कुछ अन्तर

19. मसीह के दो आगमन
20. मसीह के आगमन के विभिन्न चरण
21. प्रभु का दिन, मसीह का दिन, परमेश्वर का दिन
22. दोहरी पूर्णताएं

भाग 5: पवित्रशास्त्र में पाए जाने वाले कुछ अन्तर

23. सात न्याय
24. अधोलोक और नर्क
25. पवित्रशास्त्र के भेद
26. मसीह की महिमाओं के विभिन्न पहलू
27. सुसमाचारों में अन्तर

प्रस्तावना

इस पुस्तक का उद्देश्य है कि पवित्रशास्त्र का अध्ययन करने के लिए कुछ मूल्यवान कुंजियों को आपके लिए उपलब्ध कराए। यह पुस्तक विशेष रूप से नया नियम का अध्ययन करने में अत्यन्त सहायक सिद्ध होगी। यह आवश्यक है कि हर एक मसीही बाइबल का अध्ययन करने वाला बने। परन्तु हम में से अधिकांश को इस अध्ययन के लिए सहायता की आवश्यकता है। इस पुस्तक को आपकी सहायता के लिए ही तैयार किया गया है।

इस पुस्तक को पढ़ने से मालूम होगा कि परिभाषाएं महत्वपूर्ण होती हैं। बाइबल में पाए जाने वाले शब्दों के जो अर्थ होते हैं, वे अर्थ सामान्य शब्द–कोश (डिक्शनरी) में नहीं दिए जाते। परमेश्वर के वचन का ''भेद'' आम धारणा से भिन्न है।

सिद्धान्तों की पूरी तरह से सही समझ रखना महत्वपूर्ण है। किसी भी विषय का अध्ययन करते समय पवित्रशास्त्र में उस विषय पर दिए गए सारे के सारे स्थलों को ध्यान में रखना आवश्यक है, तभी इस विषय की एक सही और उचित समझ प्राप्त की जा सकती है।

यह भी महत्वपूर्ण है कि हम ऐसी बातों को पहचान सकें जिनमें अन्तर है। किसी एक सुसमाचार में पाए जाने वाले कुछ स्थल दूसरे सुसमाचार में पाए जाने वाले स्थलों के समान दिखाई देते हैं। किन्तु, जब इनके सन्दर्भ का ध्यान रख कर इनका अध्ययन किया जाता है, तो यह स्पष्ट हो जाता है कि इनमें अलग–अलग शिक्षाएं पाई जाती हैं।

धर्मी ठहराया जाना और पवित्र बनाया जाना जैसे अनेक विषयों के अलग–अलग पहलू होते हैं; तथा प्रभु का आगमन जैसे विषयों के अलग–अलग चरण होते हैं। इन बातों को ध्यान में रखने से हम उलझनों को दूर कर सकते हैं।

जिन विश्वासियों ने इस पुस्तक को पढ़ा है वे सब इस बात से सहमत है कि यह पुस्तक परमेश्वर के वचन के अध्ययन में विशेष रूप से सहायक है और बाइबल अध्ययन के रोमांच को बढ़ा देती है। अब यह पुस्तक हिन्दी में उपलब्ध है, हम ऐसी आशा करते हैं कि अब हिन्दीभाषी विश्वासी भी इस पुस्तक के द्वारा बहुतायत की आशीष और लाभ प्राप्त करेंगे।

मूल प्रकाशक

भाग 1

उद्धार सम्बन्धी कुछ अन्तर

अध्याय 1

उद्धार के तीन काल

जब हम मसीही बनते हैं, तब शुरु-शुरु में हममें से अधिकांश की सोच सिर्फ एक ही प्रकार के उद्धार तक सीमित रहती है, हमारी *आत्मा* का उद्धार। उस समय जब हम बाइबल का अध्ययन करते हैं, तो हम सिर्फ इसी अर्थ को उद्धार का एकमात्र अर्थ समझकर इसे हर स्थल पर लागू कर उसकी व्याख्या करते हैं। परन्तु कभी न कभी हम यह समझ जाते हैं कि यही अर्थ हर जगह सन्दर्भ से मेल नहीं खाता।

उसके बाद हम यह समझ जाते हैं कि *उद्धार* एक सामान्य शब्द है जिसके अनेक अर्थ हैं, जैसे, ''छुटकारा,'' ''सुरक्षा,'' या ''अच्छा स्वास्थ्य या अच्छी स्थिति।'' उदाहरण के लिए, फिलिप्पियों 1:19 में, पौलुस ने *उद्धार* शब्द का प्रयोग जेल से उसकी सम्भावित रिहाई/छुटकारे के लिए किया है:

क्योंकि मैं जानता हूं, कि तुम्हारी बिनती के द्वारा,
और यीशु मसीह की आत्मा के दान के द्वारा, इस का प्रतिफल मेरा उद्धार होगा।
(एन.के.जे.वी. बाइबल में इस सन्दर्भ में *छुटकारा* अनुवाद किया गया है।)

फिलिप्पयों 2:12 में, *उद्धार* का अर्थ काफी भिन्न है; यहाँ इसका अर्थ है, फिलिप्पी में उत्पन्न हुई समस्या का समाधान। फिलिप्पी की कलीसिया में गम्भीर रूप से फूट पड़ गई थी (फिलि. 2:14; 4:2)। पौलुस इस कलीसिया के मसीहियों को यह स्मरण दिलाता है कि उनके लिए इस समस्या का हल यह है कि जैसा यीशु का स्वभाव दीन और त्याग करने वाला था, वैसा ही उनका भी स्वभाव हो। उसके बाद वह 2:12 में कहता है:

सो हे मेरे प्यारो, जिस प्रकार तुम सदा से आज्ञा मानते आए हो,
वैसे ही अब भी न केवल मेरे साथ रहते हुए पर विशेष करके अब मेरे दूर रहने पर भी डरते और कांपते हुएअपने अपने उद्धार का कार्य पूरा करते जाओ।

दूसरे शब्दों में, ''मैंने तुम्हें उस समस्या का समाधान बता दिया है जो तुम्हें तकलीफ दे रही है। अब डरते और काँपते हुए इस समाधान पर अमल करो।''

मूल में, तीन स्थलों में *उद्धार* शब्द का प्रयोग डूबने से बच जाने के लिए किया गया है:

30 परन्तु जब मल्लाह जहाज पर से भागना चाहते थे,
और गलही से लंगर डालने के बहाने डोंगी समुद्र में उतार दी।

31 तो पौलुस ने सूबेदार और सिपाहियों से कहा;
यदि ये जहाज पर न रहें, तो तुम नहीं बच सकते (प्रेरित. 27:30.31)।
विश्वास ही से नूह ने उन बातों के विषय में जो उस समय दिखाई न पड़ती थीं,
चितौनी पाकर भक्ति के साथ अपने घराने के बचाव के लिए जहाज बनाया,
और उसके द्वारा उस ने संसार को दोषी ठहराया;
और उस धर्म का वारिस हुआ, जो विश्वास से होता है (इब्रा.11:7)।

19 उसी में उस ने जाकर कैदी आत्माओं को भी प्रचार किया।
20 जिन्हों ने उस बीते समय में आज्ञा न माना
जब परमेश्वर नूह के दिनों में धीरज धरकर ठहरा रहा,
और वह जहाज बन रहा था, जिस में बैठकर थोड़े लोग अर्थात् आठ प्राणी पानी के द्वारा बच गए (1 पत.3:19,20)।

परमेश्वर इस अर्थ में सब मनुष्यों का उद्धारकर्ता है कि वह उन्हें बचाए और सम्भाले रखता है:

क्योंकि हम परिश्रम और यत्न इसीलिये करते हैं,
कि हमारी आशा उस जीवते परमेश्वर पर है; जो सब मनुष्यों का,
और निज करके विश्वासियों का उद्धारकर्ता है (1 तीमु. 4:10)।

परन्तु *उद्धार* शब्द के जिस प्रयोग पर हम प्रमुख रूप से महत्व दे रहे हैं, वह पाप से छुटकारा के सम्बन्ध में है। यह अर्थ नया नियम में सामान्य रूप से पाया जाता है।

इस सम्बन्ध में हमें उद्धार के तीन कालों के बीच के अन्तर या भेद की पहचान कर पाना और उन्हें जानना आवश्यक है – भूतकाल, वर्तमानकाल, और भविष्यकाल:

भूतकाल – मैं पाप के दण्ड से बचाया गया: धर्मी या निर्दोष ठहराया जाना।
वर्तमानकाल – मैं पाप की सामर्थ से बचाया जाता हूँ : पवित्र बनाया जाना।
भविष्यकाल – मैं पाप की उपस्थिति से बचा लिया जाऊंगा: महिमा दिया जाना।

भूतकाल

निम्नलिखित कुछ पद प्रमुख रूप से पाप के दण्ड से उद्धार के बारे में बताते हैं:

क्योंकि विश्वास के द्वारा अनुग्रह ही से तुम्हारा उद्धार हुआ है,
और यह तुम्हारी ओर से नहीं, वरन् परमेश्वर का दान है (इफि. 2:8)।
जिस ने हमारा उद्धार किया, और पवित्र बुलाहट से बुलाया (2 तीमु. 1:9अ)।
तो उसने हमारा उद्धार किया : और यह धर्म के कामों के कारण नहीं,

जो हमने आप किए, पर अपनी दया के अनुसार, नए जन्म के स्नान,
और पवित्र आत्मा के हमें नया बनाने के द्वारा हुआ (तीतुस 3:5)।

निम्नलिखित तीन उदाहरणों को देखें जिनमें *उद्धार* शब्द भूतकाल में है। किन्तु कुछ अन्य पद भी हैं, जो पाप के दण्ड से हमारे छुटकारे के विषय में हैं, परन्तु क्रिया भूतकाल में *नहीं* है।

और किसी दूसरे के द्वारा उद्धार नहीं;
क्योंकि स्वर्ग के नीचे मनुष्यों में और कोई दूसरा नाम नहीं दिया गया,
जिस के द्वारा हम उद्धार पा सकें (प्रेरित 4:12)।

कि यदि तू अपने मुंह से यीशु को प्रभु जानकर अंगीकार करे
और अपने मन से विश्वास करे, कि परमेश्वर ने उसे मरे हुओं में से जिलाया,
तो तू निश्चय उद्धार पाएगा (रोमि. 10:9)।

इसलिए यह आवश्यक है कि क्रिया के *काल* को नहीं बल्कि पद की विषय–वस्तु को ध्यान में रखते हुए यह तय करें कि उद्धार भूतकाल के अर्थ में है या नहीं। यदि पद पाप के लिए दोषी ठहराए जाने से एक ही बार में हमेशा के लिए बचा लिए जाने के विषय में है, तो यहाँ उद्धार भूतकाल में है।

वर्तमान काल

यद्यपि यह सत्य है कि मेरा *उद्धार हो गया है*, परन्तु यह भी उतना ही सत्य है कि दिन प्रतिदिन मेरा उद्धार होता है। मैं दोषी ठहराए जाने से बचाया गया हूँ। मैं हानि से बचाया जाता हूँ। मैं पाप के दण्ड से बचा लिया गया हूँ; मैं पाप की सामर्थ से बचाया जाता हूँ। मैं मसीह के द्वारा क्रूस पर पूर्ण किए गए कार्य के द्वारा बचाया गया हूँ; परमेश्वर के दाहिने हाथ पर बैठे हुए उसके जीवन और मेरे लिए उसकी सेवकाई के द्वारा मैं बचाया जाता हूँ। रोमियों 5:10 जैसे पदों में यही अर्थ पाया जाता है।

क्योंकि बैरी होने की दशा में तो उसके पुत्र की मृत्यु के द्वारा
हमारा मेल परमेश्वर के साथ हुआ फिर मेल हो जाने पर
उसके जीवन के कारण हम उद्धार क्यों न पाएंगे? (रोमियों 5:10)

उद्धार का वर्तमानकाल पवित्र बनाए जाने के काफी कुछ समान है – पाप और पाप की अशुद्धता से परमेश्वर के लिए अलग किए जाने की सतत् प्रक्रिया। इब्रानियों 7:25 में हम उद्धार की इसी निरन्तर चलने वाली प्रक्रिया के विषय में पढ़ते हैं:

इसी लिए जो उसके द्वारा परमेश्वर के पास आते हैं,
वह उनका पूरा पूरा उद्धार कर सकता है,

क्योंकि वह उनके लिए विनती करने को सर्वदा जीवित है (इब्रा.7:25)।

एक और स्थल जिसमें हम उद्धार को वर्तमान काल में पढ़ते हैं, वह है, 1 कुरिन्थियों 1:18।

क्योंकि क्रूस की कथा नाश होनेवालों के निकट मूर्खता है,
परन्तु हम उद्धार पानेवालों के निकट परमेश्वर की सामर्थ है।

भविष्यकाल

अन्तिम बात, उद्धार का भविष्यकाल वाला पहलू भी है। जब हम उद्धारकर्ता को आमने–सामने देखेंगे, हम पाप की उपस्थिति से बचा *लिए जाएंगे।* हमारी देह छुटकारा प्राप्त कर लेगी और हमें महिमा की देह प्रदान की जाएंगी। निम्नलिखित पदों में हमारे उद्धार के भविष्यकाल के पहलू की महिमामय पूर्णता के बारे में बताया गया है:

उस समय के विचार से अब हमारा उद्धार निकट है (रोमियों 13:11ब)।

8 पर हम जो दिन के हैं, विश्वास और प्रेम की झिलम पहिनकर और उद्धार की आशा का टोप पहिनकर सावधान रहें।

9 क्योंकि परमेश्वर ने हमें क्रोध के लिये नहीं, परन्तु इसलिये ठहराया कि हम अपने प्रभु यीशु मसीह के द्वारा उद्धार प्राप्त करें (1 थिस्स.5:8,9)।

उन के उद्धार के लिए दूसरी बार बिना पाप के दिखाई देगा (इबानियों 9:28ब)।

जो तुम्हारे लिये स्वर्ग में रखी है, जिन की रक्षा परमेश्वर की सामर्थ से, विश्वास के द्वारा उस उद्धार के लिये, जो आनेवाले समय में प्रगट होनेवाली है, की जाती है (1 पतरस 1:5)।

सभी तीन काल

यदि आपको किसी पद में इन तीन प्रकारों में से किसी एक के साथ ताल–मेल बैठा पाने में परेशानी हो रही है, तो ध्यान रखें कि यहाँ *तीनों* कालों के विषय में कहा गया होगा। उदाहरण के लिए,

वह पुत्र जनेगी और तू उसका नाम यीशु रखना;
क्योंकि वह अपने लोगों का उन के पापों से उद्धार करेगा (मत्ती 1:21)।
और उसी में तुम पर भी जब तुमने सत्य का वचन सुना,
जो तुम्हारे उद्धार का सुसमाचार है, और जिस पर तुम ने विश्वास किया,
प्रतिज्ञा किए हुए पवित्र आत्मा की छाप लगी (इफि.1:13)।

इसलिए इस प्रकार के पदों में आपको तीनों में से एक को चुनने की आवश्यकता नहीं है, क्योंकि वे उद्धार के तीनों पहलुओं पर बराबरी से लागू होते हैं।

अध्याय 2

धर्मी ठहराए जाने के पहलू

नया नियम में यह शिक्षा दी गई है कि हमें अनुग्रह के द्वारा, विश्वास के द्वारा, सामर्थ के द्वारा, कार्यों के द्वारा, और परमेश्वर के द्वारा धर्मी ठहराया गया है। जब तक हम इस बात की ओर ध्यान नहीं देते कि प्रत्येक स्थल में *एक ही विषय के भिन्न भिन्न पहलुओं को प्रस्तुत किया गया है*, तब भले ही यह परस्पर विरोधी न लगे, पर यह काफी उलझाने वाली बात लगती है।

धर्मी ठहराए जाने का अर्थ क्या है?

सबसे पहली बात, *धर्मी ठहराए जाने* का अर्थ क्या है? धर्मी ठहराए जाने का अर्थ है, 'धर्मी मान लेना।' इसका अर्थ, 'धर्मी बना देना' नहीं है, परन्तु 'धर्मी घोषित कर दिया जाना' है। वास्तव में यह एक कानूनी शब्द है; यह कचहरी में प्रयोग में लाया जाता है।

हम अपने आप में धर्मी या निर्दोष नहीं हैं। हममें कोई धार्मिकता नहीं है। परन्तु जब हम यीशु मसीह को अपना प्रभु और उद्धारकर्ता स्वीकार करते हैं, तो परमेश्वर मसीह के द्वारा हमारे बदले में किए गए कार्य के आधार पर हमें धर्मी मान लेता है। यदि हम ''मसीह में'' हैं, तो परमेश्वर पूरी धार्मिकता के साथ और न्यायसंगत हो कर हमें धर्मी या निर्दोष घोषित कर देता है क्योंकि हमारे सारे पापों के लिए कलवरी पर सारा हिसाब चुकता कर दिया गया है। विश्वास करने वाले पापी को परमेश्वर की धार्मिकता पहिना दी जाती है। ''जो पाप से अज्ञात था, उसी को उस ने हमारे लिए पाप ठहराया, कि हम उसमें होकर परमेश्वर की धार्मिकता बन जाएं'' (2 कुरि. 5:21)।

जैसा कि हमने आरम्भ में ही उल्लेख किया था, कि धर्मी ठहराया जाना अनुग्रह के द्वारा, विश्वास के द्वारा, लोहू के द्वारा, सामर्थ के द्वारा, कार्यों के द्वारा, और परमेश्वर के द्वारा होता है। इन सभी छः तरीकों से यह कैसे हो सकता है?

अनुग्रह के द्वारा धर्मी ठहराया जाना

सबसे पहले हम *अनुग्रह* के द्वारा धर्मी ठहराए जाने के विषय में देखेंगे। रोमियों 3:24 में हम यह पढ़ते हैं, ''परन्तु उसके अनुग्रह से उस छुटकारे के द्वारा जो मसीह यीशु में है, सेंतमेंत धर्मी ठहराए जाते हैं।'' इसका अर्थ यह है कि मनुष्य धर्मी ठहराए जाने के लायक नहीं है। वह

इसे अपने गुणों के द्वारा हासिल नहीं कर सकता, न ही इसे कमा सकता है; इसे एक भेंट के रूप में स्वीकार करना आवश्यक है। अनुग्रह की शर्त पर ही परमेश्वर मनुष्य को धर्मी ठहराता है – कोई भी व्यक्ति धर्मी ठहराए जाने के बिल्कुल लायक नहीं है और इसे खरीद पाना पूरी तरह से अनहोना है – यह सेंतमेंत या मुफ्त में एक भेंट के रूप में प्राप्त किया जाता है।

विश्वास के द्वारा धर्मी ठहराया जाना

दूसरा, *विश्वास के द्वारा* धर्मी ठहराया जाना। ''सो जब हम विश्वास से धर्मी ठहरे, तो अपने प्रभु यीशु मसीह के द्वारा परमेश्वर के साथ मेल रखें'' (रोमि. 5:1)। इसका अर्थ यह है कि एक पापी को उद्धारकर्ता पर विश्वास लाने के माध्यम से धर्मी ठहराए जाने की इस भेंट को ग्रहण करना है। यह अंगीकार करते हुए कि वह सिर्फ नरक के ही लायक है, यह आवश्यक है कि वह प्रभु यीशु मसीह को यह मानते हुए स्वीकार करे कि उसी ने (प्रभु यीशु ने) उस पापी के पापों का दण्ड चुका दिया है।

अनुग्रह का अर्थ यह है कि परमेश्वर दोषी मनुष्य के पास नीचे आ कर क्रूस पर मसीह के द्वारा पूर्ण किए गए छुटकारे के कार्य के आधार पर दोषी मनुष्य को धर्मी ठहराए जाने का प्रस्ताव देता है। विश्वास का अर्थ यह है कि मनुष्य मन फिरा कर खड़ा होता है और यह मानते हुए परमेश्वर की इस भेंट को ग्रहण करता है कि उसके चरित्र में ऐसा कुछ नहीं जो उसे इस भेंट के योग्य बनाए और न ही उसके कार्यों में ऐसा कुछ है कि वह अपने कार्यों के आधार पर इसे कमा कर हासिल कर सके।

लोहू के द्वारा धर्मी ठहराया जाना

धर्मी ठहराया जाना *लोहू के द्वारा* भी होता है। ''सो जब कि हम, अब उसके लोहू के कारण धर्मी ठहरे, तो उसके द्वारा क्रोध से क्यों न बचेंगे'' (रोमि. 5:9)। अवश्य ही, यह उस दाम को कहा गया है जो इसलिए चुकाया गया ताकि मैं धर्मी ठहराया जाऊं। निष्पाप उद्धारकर्ता ने अपना बहुमूल्य लोहू बहा कर उस कर्ज को उतार दिया जो मेरे पापों के कारण इकट्ठा हो गया है। मुझे धर्मी ठहराए जाने का भारी भरकम मूल्य उस भारी भरकम दाम में देखा जा सकता है जो मुझे धर्मी ठहराने के लिए चुकाया गया।

सामर्थ के द्वारा धर्मी ठहराया जाना

यद्यपि पवित्रशास्त्र में सीधे सीधे शब्दों में यह लिखा हुआ नहीं पाया जाता कि हम *सामर्थ* के द्वारा धर्मी ठहराए गए हैं, परन्तु यह सच्चाई रोमियों 4:25 में पाई जाती है: ''और यदि मसीह नहीं जी उठा, तो तुम्हारा विश्वास व्यर्थ है; और तुम अब तक अपने पापों में फंसे हो''

यहाँ पर हमें धर्मी ठहराया जाना सीधे सीधे मसीह के जी उठने से सम्बन्धित है। और यह बिल्कुल सच है! यदि वह जी न उठा होता, तो हमारा विश्वास करना व्यर्थ होता, और हम अब भी अपने पापों में पड़े होते (1 कुरि. 15:17)। इसलिए हमें धर्मी ठहराया जाना उस सामर्थ से एक अटूट कड़ी के द्वारा जुड़ा हुआ है जिससे हमारा प्रभु यीशु मसीह मृतकों में से जिलाया गया। इसलिए हमारा यह कहना उचित है कि हम सामर्थ के द्वारा धर्मी ठहराए गए हैं।

कार्यों के द्वारा धर्मी ठहराया जाना

हम *कार्यों* के द्वारा धर्मी ठहराए गए हैं। ''सो तुम ने देख लिया कि मनुष्य केवल विश्वास से ही नहीं, वरन् कर्मों से भी धर्मी ठहरता है'' (याकूब 2:24)। इसी पद में एक अलग विरोधाभास दिखाई देता हुआ प्रतीत होता है। पौलुस प्रेरित ने यह अचूक शिक्षा दी है कि हम सिर्फ विश्वास के द्वारा ही धर्मी ठहराए गए हैं। परन्तु ऐसा लगता है कि याकूब यह कह रहा है, ''ऐसा नहीं है। हम कार्यों के द्वारा धर्मी ठहराए गए हैं।'' किन्तु याकूब ऐसा नहीं कह रहा है। वह यह शिक्षा नहीं दे रहा है कि धर्मी ठहराया जाना मूल रूप से अच्छे कार्य करने से होता है। न ही वह यह कहता है कि हम विश्वास + कार्य (विश्वास और कार्य) से धर्मी ठहराए गए हैं। वह कहता है कि हम उस *प्रकार के विश्वास से धर्मी ठहराए गए हैं जिसका परिणाम अच्छे कार्य के रूप में सामने आता है*।

यह *कहना* व्यर्थ है कि हमारे पास विश्वास है, यदि हमारे कार्य इसकी पुष्टि नहीं करते। लोग हम पर विश्वास नहीं करेंगे। इस प्रकार का विश्वास – अर्थात्, शब्दों तक विश्वास व्यर्थ है (याकूब 2:14–17)। सच्चा विश्वास अदृश्य है परन्तु यह कार्यों के द्वारा प्रदर्शित किया जा सकता है (याकूब 2:18)। अब्राहम यहोवा पर विश्वास लाने के द्वारा धर्मी ठहराया गया (उत्प. 15:6), परन्तु वर्षों बाद उसने अपने पुत्र इसहाक को होमबलि के रूप में बलिदान करने के लिए तैयार हो जाने के द्वारा यह दर्शा दिया कि उसका विश्वास सच्चा है (उत्प. 22:9–14)। राहाब ने इस्राएली भेदियों को छिपाने और बच निकलने में उनकी सहायता करने के द्वारा अपने विश्वास की सच्चाई को सिद्ध किया (याकूब 2:25)। इसलिए जब हम कार्यों के द्वारा धर्मी ठहराए जाने की बात करते हैं, तो हमारे कहने का अर्थ यह है कि कार्य इस बात का बाहरी प्रगटीकरण है कि हम सचमुच में विश्वास के द्वारा धर्मी ठहराए गए हैं।

परमेश्वर के द्वारा धर्मी ठहराया जाना

अन्तिम बात, हम *परमेश्वर के द्वारा* धर्मी ठहराए गए हैं: ''परमेश्वर के चुने हुओं पर दोष कौन लगाएगा? परमेश्वर वह है जो उनको धर्मी ठहरानेवाला है'' (रोमि.8:33)। वह परमेश्वर ही है जो हमें धर्मी ठहराता है।

सारांश

इन सारी बातों को एक साथ रखने पर, हम यह पाते हैं कि नया नियम यह सिखाती है कि हम निम्नलिखित के द्वारा धर्मी ठहराए गए हैं:

अनुग्रह – इसका अर्थ यह है कि हम इसकी योग्यता नहीं रखते।
विश्वास – इसका अर्थ यह है कि हमें इसे ग्रहण करना आवश्यक है।
लोहू – इसका अर्थ यह है कि यह उद्धारकर्ता की मृत्यु के द्वारा खरीदा गया है।
सामर्थ – इसका अर्थ यह है कि मसीह का जी उठना यह प्रमाणित करता है कि परमेश्वर उद्धारकर्ता के द्वारा किए गए कार्य से संतुष्ट है।
कार्य – इसका अर्थ यह है कि जब हम सचमुच में विश्वास के द्वारा धर्मी ठहराए जाते हैं तो यह अच्छे कार्यों के द्वारा दूसरों के सामने प्रदर्शित होगा।
परमेश्वर – इसका अर्थ यह है कि वह उस व्यक्ति को धर्मी ठहराने वाला जन है जो प्रभु यीशु मसीह पर विश्वास लाता है।

धर्मी ठहराए जाने के इन सारे पहलुओं को काव्य रूप में इस तरह से व्यक्त किया गया है:

परमेश्वर के सर्वाधिकारी अनुग्रह ने मुझे नेवता दिया, कि मैं स्वर्ग में एक स्थान प्राप्त करूं;
यह उसकी सुइच्छा से हुआ, मैं अनुग्रह के द्वारा धर्मी ठहराया गया।

ठहराए हुए समय में मसीह कलवरी पर मरा, वहाँ अर्गवानी रंग की बाढ़ आ गई;
जो घोरतम गन्दगी को भी हिम के समान श्वेत कर देती है, मैं लोहू के द्वारा धर्मी ठहराया गया।

परमेश्वर ने उसे मरे हुओं में से जिलाया; यह एक बयाना है, कि बुरे सन्देह कम होते जाएं;
उसका जी उठना सारे डर को समाप्त कर देता है, मैं सामर्थ के द्वारा धर्मी ठहराया गया।

पवित्र आत्मा ने मेरी अगुवाई की, जिससे मैं जान सका कि पवित्रशास्त्र क्या कहता है;
मैं इस सच्चाई को जान गया; मसीह मेरे लिए मरा! मैं विश्वास के द्वारा धर्मी ठहराया गया।

अब यदि तुम सन्देह करो कि मैं मसीह का नहीं हूँ, यदि एक भी शंका उत्पन्न होते दिखाई दे;
मैं कार्यों के द्वारा यह दर्शाऊंगा, मैं कार्यों के द्वारा धर्मी ठहराया गया।

मैं प्रभु की स्तुति करूंगा, सब कुछ उसी का है, अनुग्रह, विश्वास, लोहू,
जी उठने की सामर्थ, कार्य; मैं परमेश्वर के द्वारा धर्मी ठहराया गया।

– हेलन एच. शॉ

अध्याय 3

अनन्त जीवन के पहलू

एक विशेष प्रकार का जीवन

अनन्त जीवन और अन्तहीन अस्तित्व एक ही बात नहीं हैं। हर व्यक्ति, चाहे उसने उद्धार पाया हो, या नहीं, वह सदा तक जीवित रहेगा, परन्तु सिर्फ विश्वासियों को ही अनन्त जीवन प्राप्त होगा। यह जीवन की एक *अवधि* मात्र नहीं है, परन्तु यह जीवन का एक विशेष प्रकार है। यह स्वयं परमेश्वर का जीवन है, यह परमेश्वर के साथ मिलन और एक हो जाने से किसी तरह कम नहीं है, और यह प्रभु यीशु मसीह में साकार होता है।

यह जीवन प्रगट हुआ, और हम ने उसे देखा, और उस की गवाही देते हैं, और तुम्हें उस अनन्त जीवन का समाचार देते हैं, जो पिता के साथ था, और हम पर प्रगट हुआ (1 यूहन्ना 1:2; 1 यूहन्ना 5:20 भी देखें)।

जब आदम का पतन नहीं हुआ था, और वह अपनी निर्दोष दशा में था, तब उसके पास अनन्त जीवन नहीं था। जब तक वह पाप नहीं करता, हम ऐसा मान सकते हैं कि, पृथ्वी पर उसका अस्तित्व बना रहता, परन्तु उसके पास मसीह के साथ स्वर्ग में महिमा पाने की कोई आशा नहीं रहती। और यह भयानक सम्भावना हमेशा बनी रहती कि वह कभी भी पाप कर सकता है और मरने के लिए ठहराया जा सकता है – और ऐसा ही हुआ भी। जब तक उसने प्रभु को अपना उद्धारकर्ता ग्रहण कर उस पर विश्वास नहीं किया उसने अनन्त जीवन और उससे जुड़ी सदाकाल की आशीषों को नहीं पाया।

कहीं कहीं सदा बने रहने वाले जीवन के लिए कहा गया है कि यह वर्तमान में ही प्राप्त हो गया है, और कहीं कहीं इसे भविष्य की आशा और मीरास के रूप में प्रस्तुत किया गया है।

वर्तमान में प्राप्त अनन्त जीवन

यह एक ऐसी भेंट है जो वर्तमान में विश्वासी को मिल गई है। इस वरदान की प्रतिज्ञा प्रभु यीशु मसीह ने की थी (1 यूहन्ना 2:25), और यह उसी में पाया जाता है (यूहन्ना 6:68; 1 यूहन्ना 5:11)। यह उस पर विश्वास लाने के द्वारा ग्रहण किया जाता है:

मैं तुम से सच सच कहता हूँ, कि जो कोई विश्वास करता है, अनन्त जीवन उसी का है (यूहन्ना 6:47; यूहन्ना 3:15–16,36; 5:24; 6:40; 1 तीमु. 1:16)।

कुछ अन्य अभिव्यक्तियाँ हैं जिनका अर्थ भी उस पर विश्वास लाना है, ये अभिव्यक्तियाँ हैं, उसके द्वारा दिए गए जल को पीना (यूहन्ना 4:14); उसका माँस खाना और उसका लोहू पीना (यूहन्ना 6:54); उसके पीछे चलना (यूहन्ना 10:27); और उसे जानना (यूहन्ना 17:13)। यूहन्ना कहता है कि किसी हत्यारे में अनन्त जीवन नहीं रहता (1 यूहन्ना 3:15), परन्तु उसने अवश्य ही यह बात शेष सभी अविश्वासी पापियों के लिए भी कही होगी।

अनन्त जीवन परमेश्वर की ओर से दिया जाने वाला वरदान है (रोमि. 6:23; 1 यूहन्ना 5:11)।

अनन्त जीवन पुत्र के द्वारा भी दिया जाता है।

मेरी भेड़ें मेरा शब्द सुनती हैं, और मैं उन्हें जानता हूँ, और वे मेरे पीछे पीछे चलती हैं। और मैं उन्हें अनन्त जीवन देता हूँ, और वे कभी नाश नहीं होंगी, और कोई उन्हें मेरे हाथ से छीन न लेगा।

(यूहन्ना 10:27–28। यूहन्ना 17:2 भी देखें)।

पिता ने मसीह को लोगों से जो कुछ कहने की आज्ञा दी थी उसके पीछे उद्देश्य यह था कि वह उन्हें अनन्त जीवन दे (यूहन्ना 12:50)।

जो भी अनन्त जीवन पाने के लिए ठहराए गए हैं, वे विश्वास करते हैं (प्रेरित 13:48), यह सच्चाई का एक पहलू है। दूसरा पहलू यह है कि जो विश्वास करने से मना कर देते हैं वे अपने आप को स्वयं ही अनन्त जीवन के अयोग्य ठहरा देते हैं (प्रेरित 13:46)। यह जीवन अनुग्रह के राज्य के द्वारा उत्पन्न होता है (रोमि. 5:21), और जो कोई विश्वास करता है वह यह जान सकता है कि उसने इसे परमेश्वर के वचन के अधिकार से प्राप्त किया है:

मैंने तुम्हें जो परमेश्वर के पुत्र के नाम पर विश्वास करते हो, इसलिए लिखा है; कि तुम जानो, कि अनन्त जीवन तुम्हारा है (1 यूहन्ना 5:13)।

जितनों के पास अनन्त जीवन है, उनसे यह अपेक्षा की जाती है कि वे दिन प्रतिदिन इसे व्यावहारिक रूप से साकार करें।

विश्वास की अच्छी कुश्ती लड़; और उस अनन्त जीवन को धर ले, जिस के लिए तू बुलाया गया, और बहुत गवाहों के सामने अच्छा अंगीकार किया था (1 तीमु. 6:12)।

और आगे के लिए अच्छी नेव डाल रखें, कि सत्य जीवन को वश में कर लें (1 तीमु. 6:19, साथ ही यूहन्ना 6:27 भी देखें)।

भविष्य की आशा

अनन्त जीवन न सिर्फ वर्तमान में प्राप्त हो चुकी कोई चीज़ है, बल्कि इसके भविष्यकाल का भी एक पहलू है:

उस अनन्त जीवन की आशा पर, जिस की प्रतिज्ञा परमेश्वर ने जो झूठ नहीं बोल सकता है सनातन से की है (तीतुस 1:2)।

अपने आप को परमेश्वर के प्रेम में बनाए रखो; और अनन्त जीवन के लिए हमारे प्रभु यीशु मसीह की दया की आशा देखते रहो (यहूदा 21)।

यह अनन्त जीवन की परिपूर्णता के विषय में है, जब विश्वासी हमेशा हमेशा से पाप, बीमारी, दु:ख, और मृत्यु से मुक्त हो जाएगा। यह अन्तिम और महिमा की अवस्था के विषय में है।

कहीं कहीं अनन्त जीवन की बात एक मीरास के रूप में भी कही गई है:

और जिस किसी ने घरों या भाइयों या बहिनों या माता या लड़केवालों या खेतों को मेरे नाम के लिए छोड़ दिया है, उस को सौ गुना मिलेगा; और वह अनन्त जीवन का अधिकारी होगा (मत्ती 19:2; साथ ही मरकुस 10:29–30; लूका 18:30 भी देखें)।

जिस से हम उसके अनुग्रह से धर्मी ठहरकर, अनन्त जीवन की आशा के अनुसार वारिस बनें (तीतुस 3:7)।

यह कार्यों के द्वारा नहीं कमाया या हासिल किया जा सकता

कुछ ऐसे पद हैं जिन्हें पढ़कर लगता है कि अनन्त जीवन एक व्यक्ति को पृथ्वी पर उसके द्वारा किए गए अच्छे आचरण के कारण प्रतिफल के रूप में मिलता है। मत्ती 25:45–46; लूका 18:29–30; यूहन्ना 4:36; 12:25; रोमियों 2:7; गलातियों 6:8 ऐसे ही पदों में से कुछ हैं। किन्तु, यह सम्भव नहीं है कि ये पद उन अनेक स्थल के विपरीत हैं जो इस महान सच्चाई की शिक्षा देते हैं कि उद्धार सिर्फ अनुग्रह से मिलता है, यह एक भेंट है, जो सिर्फ विश्वास से ग्रहण किया जा सकता है, और कार्यों के द्वारा इसे प्राप्त करना पूरी तरह असम्भव है।

तो फिर इन समस्या उत्पन्न करने वाले पदों का अर्थ क्या है? ये हमें यह स्मरण दिलाते हैं कि स्वर्ग में दिया जाने वाला*प्रतिफल* अलग अलग होगा। मसीह के न्याय सिंहासन के सामने, कुछ को मुकुट मिलेगा, और कुछ को प्रतिफल से वंचित होना पड़ेगा। यद्यपि सभी विश्वासियों को अनन्त जीवन मिलेगा, परन्तु इसका आनन्द उठाने की क्षमता सबको एक समान नहीं मिलेगी (1 कुरि. 15:41ब)। इसका निर्धारण पृथ्वी पर की गई सेवा में विश्वासयोग्यता (गला. 6:7–9) और पवित्रता में प्रगति (रोमि. 6:22) के आधार पर किया जाएगा।

अच्छे कार्य जिनका उल्लेख इन पदों में किया गया है वे एक व्यक्ति के अनन्त जीवन के

फल हैं, वह तरीका नहीं जिसके द्वारा उसने अनन्त जीवन को प्राप्त किया है। उदाहरण के लिए, मत्ती 25:46 में लिखा है, ''और यह अनन्त दण्ड भोगेंगे परन्तु धर्मी अनन्त जीवन में प्रवेश करेंगे।'' इस पद में यह सिखाया गया है कि जो लोग क्लेशकाल के समय मसीह के यहूदी भाइयों के साथ सद्भावना दर्शाएंगे वे ऐसा करने के द्वारा यह दर्शाएंगे कि उन्होंने सचमुच में उद्धार पाया है, और इसलिए वे अनन्त जीवन के भागी होंगे। उनके भले कार्य उनके उद्धार का प्रमाण सिद्ध होंगे।

यूहन्ना 4:36 और 12:25 में स्पष्ट रूप से विश्वासयोग्य सेवा के लिए मिलने वाले प्रतिफल के विषय में कहा गया है, उद्धार के मार्ग के विषय में नहीं।

और काटनेवाला मजदूरी पाता, और अनन्त जीवन के लिए फल बटोरता है; ताकि बोनेवाला और काटनेवाला दोनों मिलकर आनन्द करें। (यूहन्ना 4:36)

जो अपने प्राण को प्रिय जानता है, वह उसे खो देता है; और जो इस जगत में अपने प्राण को अप्रिय जानता है, वह अनन्त जीवन के लिए उस की रक्षा करता रहेगा। (12:25)

रोमियों 2:7 एक ऐसा पद है जो सचमुच में बहुत से लोगों के लिए समझने में कठिन है।

जो सुकर्म में स्थिर रहकर महिमा, और आदर, और अमरता की खोज में है, उन्हें अनन्त जीवन देगा।

इस पद को पढ़ने से ऐसा लगता है कि अनन्त जीवन अच्छा बनने या अच्छा करने की शर्त पर मिलता है। परन्तु पवित्रशास्त्र की सभी प्रमुख शिक्षाओं के प्रकाश में यह व्याख्या सही नहीं है। दो तरीकों से हम बाइबल की प्रमुख शिक्षाओं के प्रकाश में इसे समझ सकते हैं। सबसे पहली बात, यह एक सैद्धान्तिक बात है, यह एक मापदण्ड है जिसके द्वारा परमेश्वर नाश होने वालों का न्याय करेगा। यदि एक अविश्वासी यह सिद्ध कर *सकता* कि वह अपनी सामर्थ से लगातार भले काम करते रहेगा, तो उसे अनन्त जीवन दे दिया जाएगा। परन्तु यह असम्भव है। ''कोई भलाई करने वाला नहीं, एक भी नहीं'' (रोमियों 3:12स)। या फिर यह हो सकता है कि एक विश्वासी, पवित्र आत्मा की सामर्थ से, ऐसा कर सकता है। और इस स्थिति में, अवश्य ही भले कार्य उद्धार का परिणाम होंगे, स्रोत नहीं।

सारांश

अनन्त जीवन एक आत्मिक जीवन है जो नया–जन्म के द्वारा ग्रहण किया जाता है। यह वर्तमान में प्राप्त चीज़ और भविष्य की आशा है। एक व्यक्ति जो सचमुच में मसीह पर विश्वास करता है वह यह जान सकता है कि परमेश्वर के वचन के अधिकार पर उसके पास अनन्त जीवन है। *अनन्त जीवन होने की निश्चयता पवित्रशास्त्र से मिलती है।*

विश्वासी अनन्त जीवन की पूर्णता की आशा की ओर ताकता है, इसे हम शरीर का छुटकारा भी कहते हैं।

जब अनन्त जीवन की बात प्रतिफल के सम्बन्ध में भी की जाती है, तो इसका अर्थ यह नहीं हो सकता कि यह पवित्रता, सेवा, या अच्छे कार्यों का प्रतिफल है। प्रतिफल एक विश्वासयोग्य प्रदर्शन के लिये दिये जाते हैं क्योंकि एक विश्वासी में मसीह का जीवन एक फ़र्क बना देता है।

अन्त्य टिप्पणी

1. *अनन्त जीवन* और *सदा बने रहने वाला जीवन* दोनों यूनानी शब्द *अनियोस* के अनुवाद हैं। दोनों शब्दों का प्रयोग सिर्फ विविधता के उद्देश्य से किया गया है और हमें दोनों का अलग अलग अर्थ निकालने का प्रयास नहीं करना चाहिए।

अध्याय 4

प्रायश्चित तब और अब

प्रायश्चित बाइबल के उन मनोहर शब्दों में से एक है जो विभिन्न अर्थों में प्रयोग किए जाते हैं। किसी भी स्थल में इस शब्द के अर्थ को सन्दर्भ को ध्यान में रखते हुए समझना पड़ेगा। हम इस शब्द के प्रयोग के आधार पर इसका अर्थ समझ सकते हैं।

परन्तु इससे पहले कि हम इस विषय पर आगे बढ़ें, हम पुराना नियम में उद्धार के उपाय के विषय को स्मरण करें। लोग उद्धार पाते थे जब वे अपना विश्वास प्रभु पर रखते थे। जब परमेश्वर उन पर कोई बात प्रगट करता था, और वे उस पर विश्वास करते, तो वे धर्मी ठहराए जाते थे। इसलिए जब परमेश्वर ने अब्राहम से यह प्रतिज्ञा की कि उसके सन्तानों की संख्या तारों के समान होगी, तो इस कुलपिता ने ''यहोवा पर विश्वास किया; और यहोवा ने इस बात को उसके लेखे में धर्म गिना'' (उत्प. 15:6)। अब्राहम को मसीह के द्वारा भविष्य में पूर्ण किए जाने वाले कार्य के आधार पर धर्मी ठहराया गया था। इस बात में सन्देह है कि अब्राहम इस कार्य के विषय में अधिक जानता हो, परन्तु परमेश्वर सब जानता था, और उसने इस कार्य के सारे मूल्य को अब्राहम के खाते में जोड़ दिया। परमेश्वर ने उद्धारकर्ता के द्वारा क्रूस पर बहाए गए बहुमूल्य लोहू के आधार पर उसे उसके सारे पापों से न्याय के दृष्टिकोण से क्षमा कर दिया। हर समय–काल में उद्धार प्रभु पर विश्वास करने और प्रभु यीशु के द्वारा हमारे बदले किए गए कार्य के आधार पर दिया जाता है। एक सदा बने रहने वाला सम्बन्ध स्थापित हो जाता है।

पुराना नियम में प्रायश्चित का अर्थ

पुराना नियम में, प्रायश्चित शब्द ''ढांपना'' या ''ढंकना'' या ''ऊपर से परत चढ़ाना'' का अर्थ लिए एक इब्रानी शब्द का अनुवाद है।[1] इसलिए जब परमेश्वर ने नूह से कहा कि वह जहाज के भीतर बाहर राल लगाए, तब उसने इसी इब्रानी शब्द का प्रयोग किया था जिसका अनुवाद, ''प्रायश्चित करना'' भी किया जाता है। प्रायश्चित पाप को ढांप देता था या उस पर एक परत चढ़ा देता था, जब तक कि मसीह के द्वारा पूरी तरह से, सिद्धता के साथ, और अन्तिम तौर पर कलवरी पर पूर्ण किए कार्य के द्वारा पाप का हिसाब चुकता नहीं कर दिया गया था।

कुछ स्थलों में, *प्रायश्चित* शब्द का प्रयोग सुधार या बदलाव करने, शुद्ध करने, दण्ड से छूट देने, या पवित्र करने के लिए भी लाया गया है।

यह शब्द सामान्यत: लोगों, याजकों, और इस्राएली जाति के सम्बन्ध में प्रयोग में लाया जाता था। परन्तु प्रायश्चित के वास्तविक अर्थ, अर्थात्, पाप के दोष से शुद्ध कर देने या पाप का पूर्ण संतोषजनक निराकरण करने के सम्बन्ध में यह लगभग नहीं के बराबर प्रयोग किया गया है। इब्रानियों की पत्री का लेखक यह स्पष्ट करता है कि पुराना नियम के बलिदानों के द्वारा एक भी पाप दूर नहीं हो सका। यदि प्रायश्चित का प्राथमिक अर्थ पाप को दूर करना है, तो फिर बलिदान व्यर्थ ठहर गए। ''क्योंकि अनहोना है, कि बैलों और बकरों का लोहू पापों को दूर करे'' (इब्रानियों 10:4)। प्रायश्चित के दिन, वर्ष में एक बार पापों का स्मरण किया जाता था (इब्रानियों 10:3)। इस कारण, बलिदान की व्यवस्था के द्वारा परमेश्वर के लोगों को कभी भी पाप के विषय में एक शुद्ध विवेक नहीं दिया जा सका। ''नहीं तो उन का चढ़ाना बन्द क्यों न हो जाता? इसलिए कि जब सेवा करने वाले एक ही बार शुद्ध हो जाते, तो फिर उन का विवेक उन्हें पापी न ठहराता'' (इब्रा. 10:2)।

कभी कभी निर्जीव वस्तुओं के लिए प्रायश्चित किया जाता था – वेदी, पवित्रस्थान, परमपवित्र स्थान, मिलापवाला तम्बू, और मन्दिर। स्पष्ट है कि इस प्रकार का प्रायश्चित पाप को दूर करने के लिए नहीं किया जाता था, क्योंकि निर्जीव वस्तुएं पाप नहीं कर सकतीं। एक वेदी जिसके लिए प्रायश्चित किया जाता था वह प्रायश्चित के द्वारा ईश्वरीय सेवकाई के योग्य बनाई जाती थी, तभी यह वेदी संस्कारपूर्ति की दृष्टि से शुद्ध मानी जाती थी। प्रायश्चित की कोई भी परिभाषा अधूरी होगी जो यह स्पष्ट कर पाने में सफल न हो कि क्यों कुछ ''विशेष वस्तुओं'' का प्रायिश्चत करना पड़ता था।

जब प्रायश्चित शब्द का प्रयोग लोगों के सम्बन्ध में किया जाता था, तब यह संस्कार और रीतिविधि की दृष्टि से शुद्धता के उद्देश्य से होता था। यदि किसी विश्वासी यहूदी से पाप हो जाता था और जब वह आवश्यक बलिदान लेकर आता था, तो ऐसा करने के द्वारा, वह अपने पापों का अंगीकार करता था। जैसे ही वह अपने पाप का अंगीकार करता था, वह क्षमा कर दिया जाता था। पशु को बलिदान किए जाने के कारण उसे क्षमा नहीं, बल्कि मसीह के बलिदान के द्वारा उसे क्षमा मिलती थी, और पशु का बलिदान इसकी एक छाया थी। उसके पाप का अनन्त दण्ड उसी समय क्षमा हो जाता था जब वह प्रभु यहोवा पर विश्वास करता था, परन्तु पाप का अंगीकार करने के द्वारा परमेश्वर के साथ उसकी संगति फिर से नयी हो जाती थी। उसके द्वारा लाया गया बलिदान उसे बाहरी तौर पर और रीतिविधि के दृष्टिकोण से इस योग्य बनाता था कि वह यहोवा की आराधना और सेवकाई में फिर से भाग ले सके। वह पहले से ही परमेश्वर के साथ वाचा के सम्बन्ध में था, परन्तु अब वह रीतिविधि

की दृष्टि से शुद्ध हो जाता है। लेवीय व्यवस्था के बलिदान शरीर को शुद्ध करने की दृष्टि से पवित्र करते थे[2], अर्थात्, वे रस्म के भाग लेने योग्य बना देने वाली एक बाहरी शुद्धिकरण प्रदान करते थे। सिर्फ मसीह के द्वारा क्रूस पर पूर्ण किया गया कार्य ही विवेक को मरे हुए कामों से शुद्ध कर सकता है ताकि वह जीवित परमेश्वर की सेवा कर सके।[3]

अपवाद

पुराना नियम में कम से कम एक बार इस शब्द का प्रयोग *पाप को दूर कर देने* के अर्थ में किया गया है:

> *तेरे लोगों और तेरे पवित्र नगर के लिए सत्तर सप्ताह ठहराए गए हैं कि उनके अन्त तक अपराध का होना बन्द हो, और पापों का अन्त और अधर्म का प्रायश्चित किया जाए, और युगयुग की धार्मिकता प्रगट हो; और दर्शन की बात पर और भविष्यद्वाणी पर छाप दी जाए, और परमपवित्र का अभिषेक किया जाए* (दानि. 9:24)।

अंग्रेजी केजेवी और एनकेजेवी अनुवादों में ''*अधर्म का प्रायश्चित किया जाए*'' के बदले ''*अधर्म के लिए मेलमिलाप किया जाए*'' अनुवाद किया गया है। इन दोनों ही अनुवादों के अनुवादक किसी भी तरह से यह सन्देश नहीं देना चाहते थे कि मसीह का कार्य पापों को सिर्फ ढंकता है, और इसलिए उन्होंने ''*अधर्म के लिए मेलमिलाप*'' अनुवाद किया।

यह स्थल प्रभु यीशु के दूसरे आगमन की ओर संकेत करता है जब उसकी प्रजा इस्राएल अन्ततः स्थापित की जाएगी। वास्तव में, जिस बलिदान की आवश्यकता थी वह कलवरी के क्रूस पर चढ़ा दिया गया था, परन्तु इस्राएल एक जाति के रूप में इसका लाभ नहीं उठा पाएंगे जब तक कि वे उसकी ओर न देखें जिसे उन्होंने बेधा था और उसके लिए ऐसा विलाप न करें जैसा कि वे अपने एकलौते पुत्र के लिए करते हैं (जक. 12:10; यूह. 19:37)। पुराना नियम में प्रायश्चित जिस चीज़ को ढांकता था, मसीह ने क्रूस पर उसका पूरा और हमेशा के लिए हिसाब चुकता कर दिया।

वर्तमान अर्थ

प्रायश्चित शब्द मूल रूप से नया नियम का शब्द नहीं है। पुराना नियम में प्रायश्चित का जो अर्थ है, वह अर्थ नया नियम में कहीं पाया नहीं जाता। नया नियम में कहीं भी यह उल्लेख नहीं है कि निर्जीव वस्तुओं के लिए या लोगों के लिए ढांकने या परत चढ़ाने के अर्थ में प्रायश्चित किया गया। (अंग्रेजी के केजेवी अनुवाद में, यह शब्द रोमियों 5:11 में आया है, परन्तु इसका उचित अनुवाद *मेल* होगा,[4] जैसा कि हिन्दी में भी किया गया है)। व्यावहारिक बातों को ध्यान में रखते हुए, सभी वर्तमान अनुवादकों ने *प्रायश्चित* के स्थान पर *मेल* का प्रयोग किया है।

वर्तमान समय में, प्रायश्चित शब्द ने एक अर्थ हासिल कर लिया है। जब हम मसीह के प्रायश्चित की बात करते हैं, तो हम यह समझते हैं कि उसने अपनी मृत्यु, गाड़े जाने, और जी उठने के द्वारा पाप के लिए एक संतोषप्रद वाजिब हिसाब किया। उपदेशों और गीतों में, हम आनन्द के साथ यह कहते है कि उसके प्रायश्चित के लोहू के द्वारा हमारे पाप एक ही बार में हमेशा के लिए दूर कर दिए गए। परन्तु यह अर्थ सिर्फ प्रचलन और व्यावहारिकता तक सीमित है, और पुराना नियम में दिए गए सामान्य अर्थ से इसका कोई सम्बन्ध नहीं है।

यदि हम पुराना नियम में दिए गए प्रायश्चित के अर्थ और वर्तमान में प्रचलन में आए अर्थ के बीच में अन्तर का ध्यान रखेंगे तो इससे हम बहुत से उलझनों और गलत समझ से बच सकेंगे। मसीह के द्वारा किए गए प्रायश्चित के कार्य के बारे में बात करना तब तक गलत नहीं है, जब तक हम यह समझ रखते है कि उसका कार्य सिद्ध, एक ही बार में हमेशा के लिए, और आन्तरिक था, जबकि पुराना नियम का प्रायश्चित, कम से एक अपवाद के साथ, अपूर्ण, बार बार दोहराया जाने वाला था, और बाहरी था।

परमेश्वर के राज्य में प्रायश्चित

इस शब्द का प्रयोग यहेजकेल के द्वारा भविष्य में हजार वर्ष के समय के मन्दिर की सेवकाई के सम्बन्ध में किया गया है।[5] परमेश्वर के राज्य की ओर संकेत करते हुए, यहेजकेल ने वेदी, लोगों, अर्थात्, इस्राएल के घराने, और मन्दिर के प्रायश्चित के विषय में यह बात कही है। कुछ लोगों को इसमें समस्या दिखाई देती है। उनके अनुसार यह इब्रानियों **10:12** से मेल नहीं खाता, ''पर यह व्यक्ति तो पापों के बदले एक ही बलिदान सर्वदा के लिए चढ़ाकर परमेश्वर के दाहिने जा बैठा।''

समस्या इसलिए उत्पन्न होती है क्योंकि हम *प्रायश्चित* शब्द को बुनियादी अर्थ देने के बजाय आधुनिक शब्दकोष में पाया जाने वाला अर्थ दे देते हैं। इस बात का कोई संकेत नहीं पाया जाता कि हजार वर्ष के राज्य के समय के मन्दिर में चढ़ाए जाने वाले बलिदान पुराना नियम समय के बलिदानों की तुलना में पाप के दण्ड और दोष को दूर करने में अधिक असरकारक होंगे। वे सिर्फ मन्दिर की रीतिविधियों तक सीमित रहेंगे। रीतिविधियों को पूरा करने के द्वारा छुटकारा प्राप्त इस्राएल रीतिविधियों की कमजोरियों को देख सकेगा जब इसकी तुलना मसीह के कार्य की सिद्धता के द्वारा की जाएगी। वे इस बात को समझ जाएंगे कि ये रीतिविधियाँ छाया थीं, जबकि मसीह ही वास्तविक रूप है। जिस तरह से पुराना नियम के बलिदान आगे की ओर मसीह के कार्य की ओर संकेत करते हैं, उसी तरह हजार वर्ष के समय चढ़ाए जाने वाले बलिदान कलवरी की ओर – पीछे की ओर संकेत करेंगे, जैसा कि इस समय प्रभु–भोज पीछे की ओर संकेत करता है। वे स्मरण कराने वाली वस्तुएं होंगी।

अन्त्य टिप्पणी

1. क्रिया *का फॉर* संयोगवश अंग्रेजी अर्थ ''कवर'' (ढांपना) की तरह ही सुनाई देता है। इसका संज्ञा रूप यहूदी अवकाश *योम किप्पर,* शब्दश: ''ढांकने का दिन'' (अर्थात्, प्रायश्चित का दिन) में आता है।

2. इब्रानियों 9:13।

3. इब्रानियों 9:14।

4. यहाँ प्रयोग की गई संज्ञा *काटालागे* ''मेल'' के लिए प्रयोग में लाया जाने वाला प्रमुख यूनानी शब्द है।

5. यहेजकेल 43:20, 26; 45:15, 17, 20।

भाग 2

मसीही जीवन सम्बन्धी कुछ अन्तर

अध्याय 5

पद्वी और व्यावहारिक आचरण

नया नियम को समझने के लिए सबसे अधिक सहायक कुंजी और कोई दूसरी नहीं है जितना कि विश्वासी की *पद्वी* और उसके *व्यावहारिक आचरण* के बीच में अन्तर की समझ। यदि हमें इन दोनों के बीच में अन्तर दिखाई नहीं देता, तो अनेक अवसरों पर कुछ स्थलों में आप उलझ जाएंगे और विरोधाभास प्रतीत होती हुई परिस्थितियों का भी सामना करेंगे।

पद्वी और व्यावहारिक आचरण को *पद* और *अवस्था* भी कहा जाता है, दोनों के ही अर्थ समान हैं। संक्षेप में, एक मसीही की पद्वी मसीह में उसका पद है – वह जो कुछ मसीह में है। व्यावहारिक आचरण का अर्थ है, वह जो कुछ अपने आप में है – या और भी बेहतर अर्थ में, उसे *जो होना चाहिए*। पहला *सिद्धान्त* से सम्बन्धित है, और दूसरा *कर्तव्य* से। पहला तथ्य है और दूसरा *अनुभव*। पहला *मिलन* है, और दूसरा *संगति*।

इन दोनों बातों के बीच में अन्तर है कि एक मसीही मसीह में क्या है और अपने आप में क्या है। अनुग्रह ने व्यक्ति को मसीह में परमेश्वर की दृष्टि में एक पूर्णत: सिद्ध पद दिया है। वह उस प्यारे में ग्रहण किया गया है (इफि. 1:6) और मसीह में भरपूर है (कुलु. 2:10)। उसके पापों को क्षमा कर दिया गया है और उसे परमेश्वर की धार्मिकता पहनाया गया है (2 कुरि. 5:21)। उसका यह मानना गलत नहीं होगा:

निकट, परमेश्वर के बिल्कुल निकट,
इससे और निकट नहीं आ सकता;
क्योंकि परमेश्वर के पुत्र में,
मैं परमेश्वर के उतना ही निकट हूँ, जितना कि मैं।
प्रिय, परमेश्वर का बिल्कुल प्रिय,
इससे अधिक प्रिय नहीं हो सकता;
जो प्रेम वह अपने पुत्र से करता है,
वही प्रेम मेरे लिए भी है।

– केट्सबी पैजिट

एक विश्वासी का व्यावहारिक आचरण एक अलग बात है। यह दुखद है, कि यह सिद्धता से कोसों दूर है! अधिकांशत: यह दिन प्रतिदिन अलग अलग रहता है। कभी एक विश्वासी अपनी आत्मिकता की शिखर पर होता है। कभी वह पराजय की तराई में होता है।

परमेश्वर की इच्छा यह है कि हमारा व्यावहारिक आचरण लगातार हमारी पदवी के अनुरूप बनता जाए। जो हमारे बदले में मरा, उसके प्रति प्रेम के कारण, हमारा हर दिन का जीवन लगातार मसीह की समानता की ओर बढ़ता जाए। जैसा कि लोकप्रिय क्रिसमस केरोल ''ऐ छोटे नगर बैतलहम'' के लेखक फिलिप्स ब्रूक्स ने कहा है, ''मसीही विश्वास में ऐसी कोई सच्चाई नहीं जो कर्तव्य को महत्व न दे।'' यह सच है कि इस जीवन में हम कभी भी सिद्धता की अवस्था तक नहीं पहुँच पाएंगे; ऐसा तब तक नहीं हो सकेगा जब तक हमारी मृत्यु नहीं हो जाएगी या जब तक मसीह का आगमन नहीं होगा। परन्तु यह प्रक्रिया जारी रहना चाहिए; हमें अपने आचरण और व्यवहार में वैसा ही बनते जाना है जैसा कि हम हमें दिए गए पद *(पोजिशन)* में हैं।

हम मसीह को देखते ही तुरन्त उसके समान हो जाएंगे (1 यूह. 3:2)। यह बदलाव ईश्वरीय सामर्थ से होगा, और इसमें हमारा कोई योगदान नहीं होगा। परन्तु यदि उसके लोग मसीह की समानता की ओर इसी जीवन में बढ़ते जाते हैं, तो इससे परमेश्वर की अधिक महिमा होती है, और यह कहने की आवश्यकता नहीं है कि यह मसीह विश्वास की सच्चाई का अधिक बेहतर प्रचार है।

पद्वी और व्यावहारिक आचरण व्यवहार के बीच में अन्तर

हम यह कैसे जान सकते हैं कि कोई स्थल हमारे पद के विषय में कह रहा है या फिर व्यावहारिक आचरण के विषय में? इसके लिए हम ''मसीह में,'' ''प्यारे में,'' या ''उस में'' जैसे वाक्यांशों की ओर ध्यान दें। जब हम इस प्रकार के वाक्यांशों को देखें, तो हम सामान्यत: निश्चित हो सकते हैं कि लेखक हमारे पद के बारे में बात कर रहा है (इफि. 1:3–14)। अपने व्यावहारिक आचरण से सम्बन्धित पद को पहचान पाने का सबसे अच्छा तरीका यह है कि हम ऐसे पद को देखें जिसमें हमसे यह कहा गया है कि *हमें क्या करना या बनना है*।

हम नया नियम में हमेशा जो क्रम दिया गया है, उसमें पद के विषय पहले और व्यावहारिक आचरण के विषय में उसके बाद लिखा गया है। अनेक पत्रियों को इसी क्रम में रूप दिया गया है। उदाहरण के लिए, इफिसियों की पत्री में, पहले तीन अध्याय यह वर्णन करते हैं कि हम मसीह में क्या हैं; अन्तिम तीन अध्याय यह वर्णन करते हैं कि हमें अपने दैनिक जीवन में क्या *बनना है*। पहले तीन अध्यायों में हम अपने आप को मसीह के साथ स्वर्गीय स्थानों में देखते हैं; अन्तिम तीन में हम अपने आप को अपने परिवार व कार्यक्षेत्र की दिनचर्या की छोटी बड़ी समस्याओं से निपटते हुए देखते हैं।

अन्तरों के उदाहरण

आइये अब हम यह देखें कि इन अन्तरों का ध्यान रखना नया नियम के अध्ययन में हमारे लिए कितना सहायक है।

उदाहरण 1

पद्‌वी	*व्यावहारिक आचरण*
क्योंकि उस ने एक ही चढ़ावे के द्वारा उन्हें जो पवित्र किए जाते हैं, सर्वदा के लिए सिद्ध कर दिया है। (इब्रानियों 10:14)	*इसलिए चाहिए कि तुम सिद्ध बनो, जैसा तुम्हारा स्वर्गीय पिता सिद्ध है।* (मत्ती 5:48)

पहला पद स्पष्ट रूप से यह बताता है कि सभी विश्वासी *सिद्ध* हैं; दूसरा पद यह कहता है कि सभी विश्वासियों को सिद्ध *बनना* है। यह दोहरी बात की तरह लगती है यदि हम यह ध्यान न रखें कि पहले स्थल में हमारी पद्‌वी के बारे में और दूसरे में हमारी अवस्था के बारे में कहा गया है।

उदाहरण 2

पद्‌वी	*व्यावहारिक आचरण*
कदापि नहीं, हम जब पाप के लिए मर गए तो फिर आगे को उस में क्यों कर जीवन बिताएं? (रोमि. 6:2)	*ऐसे ही तुम भी अपने आप को पाप के लिए तो मरा . . . समझो।* (रोमि. 6:11अ)

हम पाप के लिए मर *गए* – यह वह पद्‌वी है जिसे अनुग्रह ने हमें प्रदान किया है। अब अपने आप को प्रतिदिन पाप के लिए *मरा समझो* – यही हमारा व्यावहारिक आचरण होना चाहिए।

उदाहरण 3

पद्‌वी	*व्यावहारिक आचरण*
परन्तु जितनों ने उसे ग्रहण किया, उस ने उन्हें परमेश्वर की सन्तान होने का अधिकार दिया, अर्थात्, उन्हें जो उसके नाम पर विश्वास रखते हैं। (यूहन्ना 1:12)।	*इसलिए प्रिय, बालकों की नाईं परमेश्वर के सदृश बनो।* (इफि. 5:1)।

जैसे ही एक व्यक्ति नया–जन्म प्राप्त करता है, वह परमेश्वर की सन्तान बन जाता है। उसके बाद से उसे एक प्रिय सन्तान के समान परमेश्वर के पीछे चलने वाला व्यक्ति बनना चाहिए। जो परमेश्वर की सन्तान हैं उन्हें उसके परिवार के सदस्य के समान बनना है, अर्थात्, उन्हें परमेश्वर का भय मानने वाला जीवन जीना है।

उदाहरण 4

पद्वी	*व्यावहारिक आचरण*
परमेश्वर सच्चा है, जिस ने तुम को अपने पुत्र हमारे प्रभु यीशु मसीह की संगति में बुलाया है । (1 कुरि. 1:9)।	*सो मैं जो प्रभु में बन्धुआ हूँ, तुम से विनती करता हूँ, कि जिस बुलाहट से तुम बुलाए गए थे, उसके योग्य चाल चलो।* (इफि. 4:1) ।

हमें एक अद्भुत संगति में बुलाया गया है। विशेषाधिकार के साथ कर्तव्य भी जुड़े होते हैं। हमारा चालचलन हमारी बुलाहट के अनुसार होना चाहिए।

उदाहरण 5

पद्वी	*व्यावहारिक आचरण*
उन सब के नाम जो रोम में परमेश्वर के प्यारे हैं और पवित्र होने के लिए बुलाए गए हैं (रोमि. 1:7)।	*कि तुम जैसा कि पवित्र लोगों को चाहिए, उसे प्रभु में ग्रहण करो* (रोमि. 16:2)

पौलुस रोम के मसीहियों को ''सन्त'' कहकर संबोधित करता है; ये मसीही ''अलग किये हुए'' या ''पवित्र किये हुए'' लोग हैं। यदि उनका उद्धार हो चुका था, तो वे सन्त थे। परन्तु सन्तजनों को सन्तों के समान जीवन जीने की ज़रूरत है; यही इसका व्यावहारिक पहलु है, जिसे कि रोमि. 16:2 में प्रस्तुत किया गया है।

उदाहरण 6

पद्वी	*व्यावहारिक आचरण*
क्योंकि विश्वास के द्वारा अनुग्रह ही से तुम्हारा उद्धार हुआ है। (इफि. 2:8अ)	*. . . अपने अपने उद्धार का कार्य पूरा करते जाओ।* (फिलि. 2:12ब)

हमारा पद *(पोजिशन)* परमेश्वर के द्वारा हमें दिया गया दान है। हमारी अवस्था वह

तरीका है जिसके द्वारा हमें परमेश्वर के प्रति अपनी कृतज्ञता प्रगट करनी चाहिए। ध्यान रखें कि पद्वी हमेशा पहले रहती है, उसके बाद अवस्था। हम मसीही जीवन जीने के द्वारा मसीही नहीं बनते। बल्कि, हम मसीही जीवन इसलिए जीते हैं क्योंकि हम मसीही बन चुके हैं।

उदाहरण 7:

पद्वी:	*व्यावहारिक आचरण*
जिस के द्वारा विश्वास के कारण उस अनुग्रह तक, जिस में हम बने हुए हैं, हमारी पहुँच भी हुई। (रोमि. 5:2अ)।	*मुझे प्रभु यीशु मसीह में आशा है, कि मैं तीमुथियुस को तुम्हारे पास तुरन्त भेजूंगा, ताकि तुम्हारी दशा सुनकर मुझे शान्ति मिले।*(फिलि. 2:19)।

अनुग्रह जिसके कारण हम इस अवस्था को पाते हैं, वह मसीह में हमारी वह पदवी है जिसे परमेश्वर कृपादृष्टि से देखता है। हमारा व्याव्हारिक आचरण एक विश्वासी के रूप में हमारा दैनिक चाल चलन है।

उदाहरण 8

अन्तिम उदाहरण के रूप में हम कुलुस्सियों 3:1–5 की ओर ध्यान देंगे और यह देखेंगे कि किस तरह से पौलुस ने पद्वी और व्यावहारिक आचरण के बीच अन्तर किया है:

पद्वी	*व्यावहारिक आचरण*
सो जब तुम मसीह के साथ जिलाए गए . . .। (कुलु. 3: 1)	*तो स्वर्गीय वस्तुओं की खोज में रहो, जहाँ मसीह वर्तमान है और परमेश्वर के दहिनी ओर बैठा है।* (कुलु. 3:1)।
	पृथ्वी पर की नहीं परन्तु स्वर्गीय वस्तुओं पर ध्यान लगाओ। (कुलु. 3:2)।
क्योंकि तुम तो मर गए, और तुम्हारा जीवन मसीह के साथ परमेश्वर में छिपा हुआ है।(कुलु. 3:3)	*इसलिए अपने उन अंगों को मार डालो, जो पृथ्वी पर हैं . . .।* (कुलु.3: 5अ)।

पौलुस कुछ इस तरह से कह रहा है, ''तुम मरे हुए हो; अब तुम मरे हुए ही रहो। तुम जी उठे हो, अब पुनरुत्थान का जीवन जीओ।'' जो बात अब तक अस्पष्ट और समझ से बाहर थी अब स्पष्ट हो जाती है जब हम इस बात को ध्यान में रखते हैं कि पौलुस एक ओर यह कह रहा है कि हम मसीह में क्या हैं, और दूसरी ओर यह कि हमें अपने आप में क्या होना चाहिए।

एक व्यक्तिगत उदाहरण

समापन में, मैं आपको यह बताना चाहता हूँ कि मेरे जीवन के एक बहुत ही कठिन समय में पद और अवस्था के बीच के अन्तर की समझ ने मेरी बड़ी सहायता की। जब मैंने उद्धार पाया, तब लोगों के द्वारा गवाही देते समय 2 कुरिन्थियों 5:17 उद्धरित करते सुना करता था, ''सो यदि कोई मसीह में है तो वह नई सृष्टि है; पुरानी बातें बीत गई हैं; देखो, वे सब नई हो गईं।''

वे अपने जीवन में आए अद्‌भुत परिवर्तन के बारे में बताया करते थे – किस प्रकार से सब पुरानी बातें बीत गईं और सब बातें नई हो गईं। मैं चुपचाप बैठे बैठे यह विचार किया करता था, ''क्या ही अच्छा होता यदि मैं यह कह पाता कि मेरे जीवन की सब पुरानी बातें बीत गईं, और सब बातें नई हो गईं हैं।'' परन्तु मेरे जीवन में ऐसा नहीं था। मेरे मनफिराव के पूर्व के दिनों से लेकर अब भी मेरे जीवन में कुछ पुरानी आदतें, कुछ बुरे विचार, क्रोध, और अनेक ताबूत ढांकने वाले कपड़े थे। समय समय पर मुझे अपने उद्धार पर भी सन्देह होता था।

तब एक दिन इस वाक्यांश की ओर मेरा ध्यान गया, ''मसीह में,'' और मेरा हृदय आनन्द से उछल पड़ा। मुझे बोध हो गया कि यह स्थल मेरी पदवी के बारे में कह रहा है – मेरे व्यावहारिक आचरण के बारे में नहीं। और अवश्य ही ''मसीह में'' सब बातें सत्य थीं। उस में पुरानी बातें सचमुच बीत चुकी थीं – दोष, शैतान का वश, मृत्यु का भय, इत्यादि। उस में हर एक वस्तु नई थी – क्षमा, ग्रहण किया जाना, धर्मी ठहराया जाना, पवित्र बनाया जाना, और अन्य अनगिनत आशीषें। उस समय से, यह पद मुझे आतंकित नहीं करता। अब मैं इस पद को बहुत पसन्द करता हूँ। और इस बात का ज्ञान कि मैं मसीह में क्या हूँ मुझे प्रेरित करता है कि मैं उसे अपने जीवन का प्रभु मान कर उसके लिए जीवन बिताऊं।

प्रश्न: पदवी और अवस्था के विषय में 1 कुरिन्थियों 5:7, इफिसियों 5:8, और 1 पतरस 2:9 में बताया गया है। क्या आप यहाँ पर अन्तरों को पहचान सकते हैं?

अध्याय 6

सम्बन्ध और संगति

यह अध्ययन भी पदवी और व्यावहारिक आचरण से मिलता–जुलता है। परन्तु दोनों के बीच का अन्तर इतना महत्वपूर्ण है कि हम एक अलग अध्याय के रूप में इसका अध्ययन करें।

परमेश्वर के साथ सम्बन्ध/रिश्ता

जब किसी व्यक्ति का नया जन्म होता है, तो एक नया सम्बन्ध बनता है; वह परमेश्वर की सन्तान बन जाता है या जाती है।

परन्तु जितनों ने उसे ग्रहण किया, उस ने उन्हें परमेश्वर के सन्तान होने का अधिकार दिया, अर्थात्, उन्हें जो उसके नाम पर विश्वास करते हैं (यूहन्ना 1:12)।

हे प्रियो, अभी हम परमेश्वर की सन्तान हैं, और अब तक यह प्रगट नहीं हुआ, कि हम क्या कुछ होंगे! इतना जानते हैं, कि जब वह प्रगट होगा तो हम भी उसके समान होंगे, क्योंकि उस को वैसा ही देखेंगे जैसा वह है (1 यूहन्ना 3:2)।

जन्म के विषय में एक बात अपरिवर्तनीय है! क्या आपने कभी इस बारे में सोचा है? एक बार जन्म हो गया, तो यह सदा के लिए हो जाता है। आप फिर से वापस जा कर इसे निरस्त नहीं कर सकते। एक ऐसा रिश्ता कायम हो जाता है जिसमें कोई बदलाव नहीं लाया जा सकता। उदाहरण के लिए, राजन के परिवार में एक बेटे का जन्म हुआ। अब चाहे जो हो जाए, यह बच्चा हमेशा श्रीमान और श्रीमती राजन का ही बेटा रहेगा, और वे दोनों हमेशा उसके माता–पिता बने रहेंगे। हो सकता है कि यह बच्चा बड़ा हो कर अपने परिवार का आदर न करें और उन्हें गहरी पीड़ा पहुँचाए। परन्तु रिश्ता हमेशा कायम रहेगा – श्री राजन अब भी उसके पिता रहेंगे, और वह हमेशा उनका पुत्र रहेगा।

अब इस बात को हम एक विश्वासी पर लागू करें। नए जन्म के द्वारा पिता के साथ एक रिश्ता कायम हो जाता है:

आत्मा आप ही हमारी आत्मा के साथ गवाही देता है, कि हम परमेश्वर की सन्तान हैं (रोमि. 8:16)।

इसलिए तू अब दास नहीं, परन्तु पुत्र है; और जब पुत्र हुआ, तो परमेश्वर के द्वारा वारिस भी हुआ (गला. 4:7)।

यह एक ऐसा रिश्ता है जिसे तोड़ा नहीं जा सकता। एक बार के लिए हम उसके पुत्र और पुत्री बन गए, तो हमेशा हम उसके पुत्र और पुत्री बने रहेंगे।

पिता के साथ संगति

परन्तु इस सच्चाई का एक दूसरा पहलू भी है, और यह पहलू है संगति। संगति शब्द एक प्रचलित यूनानी शब्द *कोईनोनिया* का अनुवाद है, जिसका अर्थ होता है, सब कुछ साझे में बांटना। यदि रिश्ता एक जोड़ है, तो संगति एक सहभागिता है। और यदि रिश्ता एक कड़ी है जिसे तोड़ा नहीं जा सकता, तो संगति एक कमजोर तागा है जो आसानी से टूट जाता है।

पाप परमेश्वर के साथ हमारी संगति को तोड़ देता है। दो लोग एक साथ नहीं चल सकते यदि दोनों एक साथ चलने का राजी न हों (आमोस 3:3), और परमेश्वर अपनी सन्तानों की संगति में नहीं चल सकता यदि वे पाप करते हैं; ''परमेश्वर ज्योति है: और उस में कुछ भी अन्धकार नहीं'' (1 यूहन्ना 1:5ब)। वह ऐसे लोगों का साझेदार नहीं बन सकता जो अपने जीवनों को बुराई से ढांक देना चाहते हैं।

जब संगति टूट जाती है, तो विश्वासी अपना आनन्द, अपना गीत, सेवा करने की सामर्थ, अपनी गवाही, और प्रभावशाली प्रार्थना का जीवन खो बैठता है।

संगति तब तक टूटी रहती है जब तक उस पाप का अंगीकार कर उसे त्याग नहीं दिया जाता। और टूटी हुई संगति एक बहुत ही गम्भीर बात है। उदाहरण के लिए, जब कोई विश्वासी प्रभु के सम्पर्क में नहीं रहता तो वह कोई ऐसा निर्णय भी ले सकता है जो उसके शेष जीवन में विनाश ला सकता है। विश्वास से फिसल जाने वाले अनेक मसीहियों ने एक अविश्वासी जीवनसाथी का चुनाव किया और अपने जीवन को परमेश्वर के लिए उपयोगिता के लिहाज से बर्बाद कर डाला! उनकी आत्मा बच गई, परन्तु जीवन नष्ट हो गया।

टूटी संगति परमेश्वर की ओर से ताड़ना और अनुशासित करने के लिये दण्ड ले कर आती है। यद्यपि यह विश्वासी पाप के अनन्त दण्ड से मुक्त हो जाता है, परन्तु वह अपने जीवन में पाप के प्रभावों और परिणामों से मुक्त नहीं हो पाता। कुरिन्थुस के कुछ विश्वासी बीमार क्यों हो गए थे? क्योंकि वे मेज की सहभागिता में अपने पापों का अंगीकार और सुधार किए बिना ही शामिल हो रहे थे (1 कुरि. 11:29–32)। उनमें से कुछ के प्राण तक चले गए। उन्हें मसीह यीशु में पाए जाने वाले छुटकारे के द्वारा स्वर्ग के योग्य तो बना दिया गया, परन्तु वे इस पृथ्वी पर आगे जीवन बिताने और गवाही देने के अयोग्य ठहर गए।

टूटी हुई संगति का परिणाम यह होगा कि हम मसीह के न्याय सिंहासन के सामने अपने प्रतिफल से वंचित हो जाएंगे (1 कुरि. 11:29–32)। परमेश्वर की संगति से बाहर जा कर बिताया गया सारा समय हमेशा के लिए बर्बाद हो जाएगा।

इसलिए यद्यपि हम इस सच्चाई का आनन्द उठाते हैं कि परमेश्वर के साथ हमारा रिश्ता अटूट है, फिर भी हमें किसी भी ऐसी चीज़ से बड़ा भय खाना चाहिए जिससे हमारे पिता के साथ हमारी संगति टूट सकती है। वास्तव में यह बोध कि अनुग्रह ने हमें ऐसा अद्‌भुत रिश्ता दिया है हमारे लिए सबसे सशक्त प्रेरणा हो कि हम लगातार परमेश्वर के साथ संगति कायम रखें। अनुग्रह पाप करने के लिए उत्साहित नहीं करता; यह पाप के विरुद्ध सबसे शक्तिशाली निवारक है।

बाइबल से उदाहरण+

पुराना नियम में, दाऊद एक ऐसे विश्वासी का उपयुक्त उदाहरण है जिसका सम्बन्ध पाप के कारण परमेश्वर से टूट गया था। भजन संहिता 32 और 51 में हम प्रभु से उसके अंगीकार और परमेश्वर के साथ उसकी संगति फिर से स्थापित होने के विषय में पढ़ते हैं।

नया नियम में, यद्यपि उड़ाऊ पुत्र की कहानी की व्याख्या सामान्यत: पाप से मन फिराने के रूप में की जाती है, तौभी हम उड़ाऊ पुत्र को विश्वास से फिसलने के बाद दुबारा संगति में लौटने के उदाहरण के रूप में सामने रख सकते हैं (लूका 15:11–24)। पुत्र के भटक जाने और उसके विद्रोह के कारण संगति टूट गई थी। परन्तु दूर देश में चले जाने के बाद भी वह उसका पुत्र ही था। जैसे ही वह वापस आया और अंगीकार करना आरम्भ किया, संगति फिर से स्थापित हो गई। उसका पिता दौड़ पड़ा, उससे लिपट गया, और उसे चूमा।

1 यूहन्ना 2:1 में हम पढ़ते हैं, ''हे मेरे बालको, मैं ये बातें तुम्हें इसलिए लिखता हूँ, कि तुम पाप न करो; और यदि कोई पाप करे, तो पिता के पास हमारा एक सहायक है, अर्थात्, धार्मिक यीशु मसीह'' यह बात उन लोगों को लिखी गई है जिन्होंने परमेश्वर के परिवार में जन्म लिया है। (जिस शब्द का अनुवाद ''बालको'' *(टेकना)* किया गया है, उसका शब्दश: अर्थ ''जन्में हुए छोटे बच्चे'' होता है)। परमेश्वर ने यह आदर्श तय किया है कि उसकी सन्तान पाप न करें। परन्तु हम पाप करते हैं, और पिता ने इसका उपाय कर दिया है: ''तो पिता के पास हमारा एक सहायक है'' ध्यान दें – ''*पिता के पास*'' वह अब भी हमारा पिता है, तब भी जब हम पाप करते हैं। यह कैसे हो सकता है? क्योंकि रिश्ता एक ऐसा बन्धन होता है जिसे तोड़ा नहीं जा सकता। जब हम पाप करते हैं तब क्या होता है? ''तो *पिता के पास* हमारा एक सहायक है, अर्थात्, धार्मिक यीशु मसीह,'' वह तुरन्त हमारे जीवन पर काम करने के लिए जुट जाता है, और हमें उस अवस्था तक लाता है जहाँ से हम अपने पापों का अंगीकार कर उसे त्यागने के लिए तैयार हो जाते हैं, और एक बार फिर से पिता की संगति का आनन्द उठाते हैं।

जब मैं रिश्ते और संगति के बीच का अन्तर देखता हूँ, तो इससे मुझे इन स्थलों को समझने में सहायता मिलती है। इसके कारण मैं मसीह में मुझे मिली अनन्त सुरक्षा की सच्चाई को भी समझ सकता हूँ और यह मुझे प्रेरित करती है कि मैं अपने पिता की संगति में जीवन व्यतीत करूं जो मुझसे इतना प्रेम रखता है।

अध्याय 7
न्याय के दृष्टिकोण से क्षमा
और
पिता के दृष्टिकोण से क्षमा

परमेश्वर के वचन में दो प्रकार की क्षमा के बारे में बताया गया है, और यदि हम पवित्रशास्त्र का गम्भीरता से अध्ययन करना चाहते हैं, तो हमें इन दोनों के बीच कैसे अन्तर करें यह सीखना आवश्यक है। हम इन्हें *न्याय के दृष्टिकोण से क्षमा* और *पिता के दृष्टिकोण से क्षमा* कहेंगे।

परिभाषा

सरल शब्दों में, न्याय के दृष्टिकोण से क्षमा एक न्यायधीश द्वारा दी जाने वाली क्षमा है, और पिता के दृष्टिकोण से क्षमा एक पिता के द्वारा दी जाने वाली क्षमा है। पहले प्रकार की क्षमा कचहरी की भाषा में है और दूसरे प्रकार की क्षमा परिवार की भाषा में है।

न्याय के दृष्टिकोण से क्षमा

आइये पहले हम न्यायकक्ष की ओर चलें। परमेश्वर न्यायधीश है और पापी मनुष्य का मुकद्दमा हो रहा है। मनुष्य पाप का दोषी है, और इसका दण्ड अनन्त मृत्यु है। परन्तु प्रभु यीशु वहाँ हाजिर होता है और यह घोषणा करता है, ''मैं उस दण्ड की कीमत चुकाऊंगा जो मनुष्य के पाप के कारण उसे मिलने वाला है; मैं मनुष्य के स्थान पर उसके बदले में अपना प्राण दूंगा!'' उद्धारकर्ता ने कलवरी के क्रूस पर ठीक ऐसा ही किया। अब न्यायधीश पापी मनुष्य से कहता है, ''यदि तुम मेरे पुत्र को अपने प्रभु और उद्धारकर्ता के रूप में स्वीकार करते हो, तो मैं तुम्हें क्षमा कर दूंगा।'' जैसे ही मनुष्य उद्धारकर्ता पर विश्वास करता है, वह न्याय के दृष्टिकोण से अपने सब पापों से क्षमा प्राप्त कर लेता है। अब उसे अपने पापों का दण्ड नरक में जा कर कभी चुकाना नहीं पड़ेगा, क्योंकि मसीह ने इसे पूरी तरह से चुका दिया है। क्षमा प्राप्त पापी अब एक नए सम्बन्ध में प्रवेश करता है: परमेश्वर अब उसका न्यायधीश नहीं रहा; अब वह उसका पिता है।

पिता के दृष्टिकोण से क्षमा

इसलिए पिता के दृष्टिकोण से क्षमा के विषय में समझने के लिए आइये अब हम परमेश्वर के परिवार की ओर चलें। परमेश्वर पिता है और विश्वासी उसकी सन्तान। पिता से दूर होकर सन्तान पाप कर देता है। तब क्या होगा? क्या परमेश्वर इस सन्तान को पाप के लिए मर जाने का दण्ड देगा? कदापि नहीं! क्यों नहीं? क्योंकि अब परमेश्वर न्यायधीश नहीं रहा, परन्तु अब वह पिता है! अब वास्तव में क्या होता है? सबसे पहले, परिवार के भीतर की संगति टूट जाती है। आनन्दित परिवार का उत्साह चला जाता है। सन्तान अपने उद्धार को खोता नहीं है, परन्तु वह अपने उद्धार के आनन्द को खो देता है। शीघ्र ही वह अपने पिता की ओर से अनुशासन का सामना कर सकता है, जिसका उद्देश्य उसे संगति में दुबारा लौटाना है। जैसे ही सन्तान अपने पापों का अंगीकार करता है, वह पिता के दृष्टिकोण से क्षमा को प्राप्त कर लेता है।

न्याय के दृष्टिकोण से क्षमा एक ही बार में हमेशा के लिए मन–फिराव के समय प्राप्त हो जाती है; पिता के दृष्टिकोण से क्षमा हर बार मिलती है जब एक विश्वासी अपने पापों को अंगीकार कर उसे छोड़ देता है। यीशु मसीह ने यूहन्ना 13:8–10 में यही शिक्षा दी है। हमें पापों के दण्ड से छुटकारा पाने के लिए नया जन्म का स्नान एक ही बार लेने की आवश्यकता है, परन्तु पिता के दृष्टिकोण से क्षमा प्राप्त करने के लिए हमें अपने सारे मसीही जीवन में शुद्ध किए जाने की आवश्यकता पड़ सकती है।

दोनों प्रकार के बीच का अन्तर

क्षमा के इन दो प्रकार के अन्तर को सारांश में निम्नलिखित रूप से समझा जा सकता है:

(अगला पृष्ठ देखें)

	न्याय के दृष्टिकोण से	**पिता के दृष्टिकोण से**
व्यक्ति का पद	पापी *(रोमियों 3:23)*	सन्तान *(1 यूह. 3:2)*
परमेश्वर का सम्बन्ध	न्यायधीश *(भजन 96:13)*	पिता *(गला. 4:6)*
पाप का परिणाम	अनन्त मृत्यु *(रोमियों 6:33)*	संगति का टूट जाना *(1 यूह. 1:6)*
मसीह की भूमिका	उद्धारकर्ता *(1 तीमु. 1:15)*	महायाजक और वकील/सहायक *(इब्रा. 4:14–16; 1 यूह. 2:1)*
व्यक्ति की आवश्यकता	विश्वास *(प्रेरित 16:31)*	उद्धार का हर्ष *(भजन 51:12)*
क्षमा का माध्यम	उद्धार *(प्रेरित 16:30)*	अंगीकार *(1 यूह. 1:9)*
क्षमा के प्रकार	न्याय के दृष्टिकोण से *(रोमि. 8:1)*	पिता के दृष्टिकोण से *(लूका 15:21–22)*
परिणाम से बचाया गया	नरक *(यूह. 5:24)*	ताड़ना *(1 कुरि. 11:31–32)* मसीह के न्याय सिंहासन के सामने प्रतिफल की हानि *(1 कुरि. 3:15)*
सकारात्मक परिणाम	नया सम्बन्ध *(यूह. 1:12)*	संगति पुन: स्थापित *(भजन 32:5)*
कितनी बार	एक ही बार में सदा के लिए (नया जन्म का एक ही स्नान) *(यूह. 13:10)*	अनेक बार (अनेक बार शुद्ध किया जाना) *(यूह. 13:8)* ‘‘’’

न्याय के दृष्टिकोण से क्षमा से सम्बन्धित पवित्रशास्त्र स्थल

आगे से, जब हम किसी ऐसे पद को पढ़ते हैं जो हमें पापियों के रूप में मसीह के कार्य के आधार पर एक ही बार में हमेशा के लिए क्षमा किए जाने के विषय में कहता है, तो हम समझ जाएं कि यह न्याय के दृष्टिकोण से क्षमा के विषय में है। निम्नलिखित पद इस बात को दर्शाते हैं:

हम को उसमें उसके लोहू के द्वारा छुटकारा, अर्थात्, अपराधों की क्षमा, उसके उस अनुग्रह के धन के अनुसार मिला है (इफि. 1:7)।

और एक दूसरे पर कृपाल और करुणामय हो, और जैसे परमेश्वर ने मसीह में तुम्हारे अपराध क्षमा किए, वैसे ही तुम भी एक-दूसरे के अपराध क्षमा करो (इफि. 4:32)।

और उस ने तुम्हें भी, जो अपने अपराधों, और अपने शरीर की खतनारहित दशा में मुर्दा थे, उसके साथ जिलाया, और हमारे सबअपराधों को क्षमा किया (कुलु. 2:13)।

पिता के दृष्टिकोण से क्षमा से सम्बन्धित पवित्रशास्त्र स्थल

कुछ ऐसे स्थल भी पवित्रशास्त्र में पाए जाते हैं जो पिता के दृष्टिकोण से क्षमा के विषय में हैं:

इसलिए यदि तुम मनुष्य के अपराध क्षमा करोगे, तो तुम्हारा स्वर्गीय पिता भी तुम्हें क्षमा करेगा। और यदि तुम मनुष्यों के अपराध क्षमा न करोगे, तो तुम्हारा पिता भी तुम्हारे अपराध क्षमा न करेगा (मत्ती 6:14-15)।

दोष मत लगाओ; तो तुम पर भी दोष नहीं लगाया जाएगा; दोषी न ठहराओ, तो तुम भी दोषी नहीं ठहराए जाओगे; क्षमा करो, तो तुम्हारी भी क्षमा की जाएगी (लूका 6:37)।

और जब कभी तुम खड़े हुए प्रार्थना करते हो, तो यदि तुम्हारे मन में किसी की ओर से कुछ विरोध हो, तो क्षमा करो; इसलिए कि तुम्हारा स्वर्गीय पिता भी तुम्हारे अपराध क्षमा करे (मरकुस 11:25)।

ध्यान दें कि इनमें से तीन पदों में परमेश्वर को स्पष्ट रूप से *पिता* कहा गया है: यहाँ पर पिता के द्वारा दी जाने वाली क्षमा के विषय में कहा जा रहा है। यह भी ध्यान दें कि हमारी क्षमा हमारे द्वारा दूसरों को क्षमा किए जाने की इच्छा पर निर्भर करती है। न्याय के दृष्टिकोण से क्षमा पर यह बात लागू नहीं होती; अनन्त उद्धार के लिए दूसरों को क्षमा करना जैसी कोई शर्त नहीं है। परन्तु यह बात पिता के दृष्टिकोण से क्षमा पर लागू होती है; हमारा पिता हमें क्षमा नहीं करेगा यदि हम एक दूसरे को क्षमा नहीं करेंगे।

न्याय के दृष्टिकोण से क्षमा और पिता के दृष्टिकोण से क्षमा

मत्ती 18:23–35 में, यीशु ने एक दास का दृष्टांत बताया जिस पर दस हजार तोड़े (भारी भरकम रकम) उधार थे और राजा के द्वारा उसका यह कर्ज माफ कर दिया गया। परन्तु इसी दास ने अपने दूसरे संगी दास को क्षमा नहीं किया जिस पर उसका सिर्फ 100 दीनार (बहुत बड़ी रकम नहीं) का कर्ज था। इसलिए राजा इस दास पर अत्याधिक क्रोधित हो गया और उसे तब तक के लिए बन्दीगृह में डाल दिया जब तक कि वह अपना सारा कर्ज न चुका दे। प्रभु यीशु ने इस दृष्टान्त का समापन यह कहते हुए किया था, ''इसी प्रकार यदि तुम में से हर एक अपने भाई को मन से क्षमा न करेगा, तो मेरा पिता जो स्वर्ग में है, तुम से भी वैसा ही करेगा'' (पद 35)। यहाँ पर भी पिता के दृष्टिकोण से क्षमा का एक उदाहरण है। क्षमा न करने वाली आत्मा (मनोभाव) रखना एक पाप है, और परमेश्वर पिता के दृष्टिकोण से, वह हमें तब तक क्षमा नहीं कर सकता जब तक हम उस पाप का अंगीकार कर उसे छोड़ न दें।

बाइबल अध्ययन का एक रोमांच यह है कि हम इन बुनियादी अन्तरों को देख पाएं और उन्हें अपने दैनिक बाइबल पठन में लागू कर पाएं। आगे से, जब कभी आप वचन में क्षमा के विषय में पढ़ें, तो आप यह कह सकें, ''हाँ, यह न्याय के दृष्टिकोण से क्षमा के विषय में है'' या ''यह पिता के दृष्टिकोण से अपनी सन्तान को क्षमा किए जाने के विषय में है।'' स्मरण रखें: पापी न्याय के दृष्टिकोण से क्षमा प्राप्त करता है जब वह प्रभु यीशु मसीह पर विश्वास लाता है; विश्वासी पिता के दृष्टिकोण से क्षमा प्राप्त करता है जब वह अपने पापों का अंगीकार करता है।

अध्याय 8

दो स्वभाव

बाइबल में पाए जाने वाले अन्तरों पर जब हम चर्चा करते हैं, तब विश्वासी के दो स्वभावों के बीच के अन्तर से अधिक व्यावहारिक विषय और कोई दूसरा नहीं है। यदि एक मसीही इस अन्तर से अनजान रहता है, तो अधिक सम्भावना है कि वह ग्लानि, सन्देह, और हताशा में फँस कर टूट जाए। इसलिए यह जानना महत्वपूर्ण है कि हर एक मसीही के दो स्वभाव होते हैं, एक पुराना स्वभाव और एक नया, साथ ही दोनों की विशेषताओं को जानना भी महत्वपूर्ण है।

पुराना स्वभाव

प्रत्येक मनुष्य में, चाहे उसने उद्धार पाया हो या नहीं, एक पुराना स्वभाव होता है। अविश्वासी के पास सिर्फ पुराना स्वभाव होता है। यह स्वभाव अनुवांशिक रूप से उसमें आदम से आता है और जीवनभर उसमें बना रहता है। इसे हम आदम का स्वभाव, पुराना मनुष्यत्व, या शारीरिक स्वभाव कह सकते हैं। दाऊद ने यह कहते हुए इसे स्वीकार किया है: ''देख, मैं अधर्म के साथ उत्पन्न हुआ, और पाप के साथ अपनी माता के गर्भ में पड़ा'' (भजन 51:5)। पौलुस इसी स्वभाव के विषय में कह रहा है जब वह लिखता है, ''क्योंकि मैं जानता हूँ, कि मुझ में अर्थात्, मेरे शरीर में कोई अच्छी वस्तु वास नहीं करती'' (रोमि. 7:18अ)। हमें इस स्वभाव में किसी भी अच्छी बात की आशा नहीं करनी चाहिए, और जब हमें इसमें कोई अच्छी बात न मिलें तो हमें निराश नहीं होना चाहिए। यह ध्यान रखना समझदारी है कि हम में से प्रत्येक में एक ऐसा स्वभाव है जो किसी भी प्रकार का पाप कर सकता है।

आदम का स्वभाव विश्वासी के तीन शत्रुओं में से एक है, अन्य दो शत्रु संसार और शैतान हैं। पुराना स्वभाव हमारे भीतर रहने वाला शत्रु है और एक विश्वासघाती द्रोही है। यह उन्नतिहीनता और अशुद्धता के सहारे अपना पोषण करना पसन्द करता है। यह परमेश्वर के विरुद्ध मनुष्य के स्वाभाविक झुकाव का कारण है। यह परमेश्वर के विरुद्ध शत्रुता बढ़ाता जाता है, और परमेश्वर की व्यवस्था के आधीन नहीं रहता, और परमेश्वर को प्रसन्न नहीं कर सकता। इसी के कारण, लोग सत्य की तुलना में गलत को स्वीकार करना अधिक पसन्द करते हैं।

आदम का स्वभाव एक असाध्य बुराई है। भले ही कोई व्यक्ति अनेक वर्षों तक पवित्र जीवन व्यतीत कर ले, फिर भी उसके पुराने स्वभाव में कोई सुधार नहीं आ सकता। परमेश्वर इसमें सुधार लाने या इसे बेहतर बनाने का कोई प्रयास नहीं करता। परमेश्वर ने कलवरी के क्रूस पर इस स्वभाव को दोषी ठहराया है, ''परमेश्वर ने . . .अपने ही पुत्र को पापमय शरीर की समानता में, और पाप के बलिदान होने के लिए भेजकर, शरीर में पाप पर दण्ड की आज्ञा दी'' (रोमि. 8:3)। ''हमारा पुराना मनुष्य उसके साथ क्रूस पर चढ़ाया गया'' (रोमि. 6:6)। अब परमेश्वर विश्वासी को यह आज्ञा देता है कि वह इस स्वभाव को मरा हुआ मान ले, अर्थात्, उसे कोई प्रतिक्रिया न दे, एक मृत व्यक्ति जैसा।

जब एक व्यक्ति को किसी काम को करने से मना किया जाता है, तो पुराना स्वभाव तुरन्त उसे करना चाहता है। पौलुस ने इस भयानक अनुभव का वर्णन रोमियों 7:7स–9 में किया है):

व्यवस्था यदि न कहती, कि लालच मत कर तो मैं लालच को न जानता। परन्तु पाप ने अवसर पाकर आज्ञा के द्वारा मुझ में सब प्रकार का लालच उत्पन्न किया, क्योंकि बिना व्यवस्था के पाप मुर्दा है। मैं तो व्यवस्था बिना पहिले जीवित था, परन्तु जब आज्ञा आई, तो पाप जी गया, और मैं मर गया।

पौलुस ने भी पुराना स्वभाव को एक लोथ के समान बताया है जो उसकी पीठ पर लाद दिया गया है। यह चित्रण नि:सन्देह एक सड़ती और दुर्गन्ध से भरी लोथ का है। यह हर जगह उसके पीछे पीछे जाती है, जिसके कारण वह वेदना से यह चीख उठता है, ''मैं कैसा अभागा मनुष्य हूँ! मुझे इस मृत्यु की देह से कौन छुड़ाएगा'' (रोमि. 7:24)।

पुराना स्वभाव वह है जो हम आदम में हैं। प्रभु यीशु मसीह इसी के लिए और हमारे द्वारा किए गए सारे पापों के लिए मरा। यह एक राहत की बात है, क्योंकि हम जो हैं, वह हमारे द्वारा किए गए सारे पापों की तुलना में अत्याधिक बदतर है।

हमने जो कुछ अभी देखा, उसका अर्थ यह नहीं है कि एक अविश्वासी भला, दयालु, प्रेमी, और उदार नहीं हो सकता। इस प्रकार के व्यवहार के अनेक कारण हो सकते हैं। ऐसा व्यवहार एक स्वाभाविक प्रवृत्ति हो सकता है, उदाहरण के लिए, अपने बच्चे के प्रति एक माता का प्रेम। ऐसा व्यवहार किसी से मिली प्रेरणा या शिक्षा के कारण भी किया जा सकता है। यह मसीही विश्वास से प्रभावित हो कर किया जा सकता है, जो कि पृथ्वी का नमक और इसकी ज्योति है। या फिर यह उद्धार पाने की लालसा से किया जाने वाला व्यवहार हो सकता है। इसका स्रोत चाहे जो कुछ हो, एक बात निश्चित है। सबसे पहला सच्चा भला काम जो एक उद्धार न पाया हुआ व्यक्ति कर सकता है वह है मसीह पर विश्वास लाना (यूहन्ना 6:39–40)।

नया स्वभाव

जब एक व्यक्ति का नया–जन्म होता है, तो उसे एक नया स्वभाव दिया जाता है, यह ईश्वरीय स्वभाव होता है (2 पतरस 1:4)। यह स्वभाव पाप नहीं कर सकता क्योंकि यह परमेश्वर से जन्मा है (1 यूहन्ना 3:9)।

यह अच्छा स्वभाव होता है और यह सिर्फ अच्छा ही कर सकता है। हमें इसे मसीह का स्वभाव या नया मनुष्यत्व कह सकते हैं।

यह अपना पोषण शुद्ध और पवित्र बातों से करना पसन्द करता है। यह परमेश्वर के वचन का पालन करने के लिए आतुर होता है। यह यहोवा की व्यवस्था से प्रसन्न रहता है। उसे परमेश्वर की आज्ञाएं बोझ नहीं लगतीं; बल्कि वह इन्हीं बातों को करना पसन्द करता है। वे मानों एक माता को दी जाने वाली आज्ञाएं हैं कि वह अपने बच्चे की अच्छी देखभाल करे; यही काम तो वह (माता) करना चाहती है।

इन दो स्वभावों की तुलना नूह के द्वारा जहाज में से छोड़े गए कौंवे और कबूतरी के साथ की जा सकती है। कौंवा फिर वापस न लौटा; वह जल के ऊपर बह रहे सड़ते हुए मांस के टुकड़ों को खा खा कर संतुष्ट था। कबूतरी नए स्वभाव को दर्शाती है, वह लौट कर जहाज में तब तक रही जब तक उसे रहने और खाने के लिए स्वच्छता नहीं मिल गई।

प्रभु यीशु के वचन क्या ही सत्य हैं, ''क्योंकि जो शरीर से जन्मा है, वह शरीर है; और जो आत्मा से जन्मा है, वह आत्मा है।'' (यूहन्ना 3:6)।

लड़ाई जारी है!

मन–फिराये हुए एक नये विश्वासी ने अपनी इस दोहरी दशा का चित्रण बहुत ही सजीव रीति से किया। उसने कहा, ''पाप मेरे हृदय से निकाल दिया गया, परन्तु मेरे दादा जी अभी भी मेरी हड्डियों में पाए जाते हैं।''

जैसे ही एक व्यक्ति उद्धार प्राप्त करता है, दो स्वभाव आपस में एक दूसरे से लड़ने लगते हैं। यह आश्चर्य की बात नहीं है। दो स्वभाव, जो पूरी तरह से एक–दूसरे के विपरीत हैं, एक साथ मेल से कैसे रह सकते हैं? इस लड़ाई का चित्रण दो बच्चों के द्वारा किया जाता है जो रिबका के गर्भ में एक दूसरे से संघर्ष कर रहे थे (उत्प. 25:22–23)। उसने पूछा, ''मेरी जो ऐसी ही दशा रहेगी तो मैं क्योंकर जीवित रहूंगी?''

पौलुस ने रोमियों 7:14–25 में इस संघर्ष का सजीव चित्रण किया है:

हम जानते हैं कि व्यवस्था तो आत्मिक है, परन्तु मैं शारीरिक और पाप के हाथ बिका हुआ हूँ। जो मैं करता हूँ उस को नहीं जानता; क्योंकि जो मैं चाहता हूँ वह नहीं किया

करता, परन्तु जिस से मुझे घृणा आती है वही करता हूँ। यदि जो मैं नहीं चाहता वही करता हूँ, तो मैं मान लेता हूँ कि व्यवस्था भली है। तो ऐसी दशा में उसका करने वाला मैं नहीं, बरन पाप है जो मुझ में बसा हुआ है। क्योंकि मैं जानता हूँ कि मुझ में अर्थात् मेरे शरीर में कोई अच्छी वस्तु वास नहीं करती। इच्छा तो मुझ में है, परन्तु भले काम मुझ से बन नहीं पड़ते। क्योंकि जिस अच्छे काम की मैं इच्छा करता हूँ, वह तो नहीं करता, परन्तु जिस बुराई की इच्छा नहीं करता, वही किया करता हूँ। अत: यदि मैं वही करता हूँ जिस की इच्छा नहीं करता, तो उसका करनेवाला मैं न रहा, परन्तु पाप जो मुझ में बसा हुआ है।

इस प्रकार मैं यह व्यवस्था पाता हूँ कि जब भलाई करने की इच्छा करता हूँ, तो बुराई मेरे पास आती है। क्योंकि मैं भीतरी मनुष्यत्व से तो परमेश्वर की व्यवस्था से बहुत प्रसन्न रहता हूँ, परन्तु मुझे अपने अंगों में दूसरे प्रकार की व्यवस्था दिखाई पड़ती है, जो मेरी बुद्धि की व्यवस्था से लड़ती है और मुझे पाप की व्यवस्था के बन्धन में डालती है जो मेरे अंगों में हैं। मैं कैसा अभागा मनुष्य हूँ! मुझे इस मृत्यु की देह से कौन छुड़ाएगा? हमारे प्रभु यीशु मसीह के द्वारा परमेश्वर का धन्यवाद हो। इसलिए मैं आप बुद्धि से तो परमेश्वर की व्यवस्था का, परन्तु शरीर से पाप की व्यवस्था का सेवन करता हूँ।

ऐसा ही चित्रण जो सम्बन्धित तो है किन्तु समान नहीं, वह है, शरीर और पवित्र आत्मा के बीच का संघर्ष (गला. 5:17)।

क्योंकि शरीर आत्मा के विरोध में और आत्मा शरीर के विरोध में लालसा करता है, और ये एक-दूसरे के विरोधी हैं, इसलिए कि जो तुम करना चाहते हो वह न करने पाओ।

इसी लिए आश्चर्य नहीं होना चाहिए जब अक्सर एक विश्वासी को ऐसा लगता है कि उसे स्किज़ोफ्रेनिया मनोरोग है (जिसमें एक ही व्यक्ति दो प्रकार का बर्ताव करने लगता है) और जब उसका व्यक्तित्व खण्डित हो कर दो व्यक्तित्व की तरह व्यवहार कर रहा है। इस बात पर कोई आश्चर्य नहीं होना चाहिए कि रिबका के समान, वह इस भीतरी संघर्ष को लेकर उलझन में पड़ जाता है। उसने यह (सहीं) सोचा था कि जब वह प्रभु पर विश्वास लाएगा तो यह संघर्ष समाप्त हो जाएगा, परन्तु अब वह यह पाता है कि एक और भयानक युद्ध आरम्भ हो गया है, और अब वह व्याकुल हो गया है। वह शायद अपने उद्धार पर भी सन्देह करने लगता है।

उसे यह जान लेना चाहिए कि प्रत्येक मसीही, यहाँ तक कि एक बहुत अच्छा विश्वासी भी, इस युद्ध का अनुभव करता है (1 कुरि. 10:13), और यह उसकी मृत्यु या कलीसिया के बादलों पर उठाए जाने के समय तक चलता रहेगा। यह इस बात का प्रमाण नहीं है कि उसने उद्धार नहीं पाया है, बल्कि इस बात का प्रमाण है कि उसने सचमुच उद्धार पा लिया है।

कौन सा स्वभाव विजयी होता है?

पवित्र आत्मा ही भीतर निवास करने वाले पाप से छुटकारा देता है (गला. 5:17)। अच्छे से अच्छा विश्वासी भी अपने आप में यह सामर्थ नहीं रखता। यद्यपि प्रत्येक मसीही की आज्ञाकारिता और उसका सहयोग करना आवश्यक है।

विश्वासी ही यह तय करता है कि कौन साथ स्वभाव विजयी होता है। वही स्वभाव विजयी होता है जिसका वह पोषण करता है। वह अपने शरीर का पोषण टीवी, सिनेमा, और सांसारिक साहित्यों और मनोरंजन से करके यह आशा नहीं कर सकता कि नया स्वभाव प्रबल हो जाए। वह भेड़िये का पोषण कर मेम्ने की विजय की आशा नहीं कर सकता।

इसीलिए उसे रोमियों 13:14 में यह बताया गया है कि वह ''शरीर की अभिलाषाओं को पूरा करने का उपाय न'' करे और 1 पतरस 2:11 में कि वह ''उन शारीरिक अभिलाषाओं से जो आत्मा से युद्ध करती हैं, बचे'' रहे।

इसका सकारात्क पक्ष यह है, कि उसका यह कर्तव्य है कि वह अपना अधिक समय वचन का मनन करने, प्रार्थना करने, और प्रभु की सेवा करने में व्यतीत करे।

कृपया कोई बहाना न बनाएं!

पाप करने पर हम पुराने स्वभाव पर सारा दोष डाल देने का बहाना न बनाएं! यह दूसरों पर दोष डाल देने जैसा है और यह बहाना काम नहीं आएगा। परमेश्वर व्यक्ति को जवाबदेह बनाता है, पुराने स्वभाव को नहीं।

पाप करने का बहाना बनाना, पाप करने को सरल बना देता है। यह पाप का सामना करने की क्षमता को कम कर देता है।

निष्कर्ष

बाइबल और हमारे अनुभव यह बताते हैं कि हमारे दो स्वभाव होते हैं। उन्हें अलग-अलग नामों से जाना जाता है, परन्तु चाहे जो भी हो, ये दो स्वभाव हमारे भीतर होते हैं। यदि कोई विश्वासी इस बात को समझ नहीं पाता, तो उसे लग सकता है कि यह परस्पर विरोधी बातें हैं। या उसे उसके मन-फिराव की सच्चाई पर सन्देह हो सकता है। या फिर वह एक पराजित जीवन व्यतीत करेगा।

उसकी इस दुर्दशा का समाधान पुराने स्वभाव की बुरी अभिलाषाओं को मरे हुए व्यक्ति के समान प्रतिक्रिया देने में, और अपने आप को पवित्र आत्मा के नियंत्रण में सौंप देने में पाया जाता है। जब तक वह ऐसा करता रहेगा, वह अपने शरीर की लालसाओं को पूरा नहीं करेगा (गला. 5:16)।

अध्याय 9

पवित्र किए जाने के प्रकार

(Kinds of Sanctification)

पवित्र किए जाने के लिए प्रयोग में लाए जाने वाले अंग्रेजी शब्द *सैंक्टीफॉय* का अर्थ होता है, ''अलग किया जाना।'' इससे सम्बन्धित अंग्रेजी शब्दों का एक पूरा परिवार है – *सैंक्टीफॉय, सैंक्टीफिकेशन, सेन्ट, होली, होलिनेस, कॉन्सिक्रेट, कॉन्सिक्रेशन* – जिनका मूल अर्थ समान है। पवित्र बनाए जाने के लिए उपयोग किए जाने वाले अंग्रेजी शब्द *सैंक्टीफिकेशन* का अर्थ अधिकांशत: यह होता है: सामान्य या अशुद्ध उपयोग से हटा कर ईश्वरीय सेवा के लिए अलग करने की प्रक्रिया। परन्तु इस शब्द का अर्थ हमेशा यही नहीं होता। यदि हम सिर्फ इतना ही स्मरण रखें कि पवित्र बनाए जाने का अर्थ अलग करना होता है, तो आपको एक ऐसी परिभाषा मिल जाएगी जो सभी प्रयोगों में उपयुक्त होगी।

पुराना नियम में परमेश्वर ने सातवें दिन को पवित्र ठहराया था (उत्प. 2:3)। मनुष्यों और पशुओं के पहिलौठों को परमेश्वर के लिए पवित्र ठहराया गया था (निर्ग. 13:2)। याजकों से कहा गया था कि वे यहोवा के लिए अपने आप को पवित्र करें (निर्ग. 19:22)। सीनै पर्वत को पवित्र ठहराया गया था (निर्ग. 19:23)। निवासवाले तम्बू और उसके सारे साजो–समान को पवित्र ठहराया गया था (निर्ग. 40:9)। यशायाह 66:17 में, हम यह पढ़ते हैं कि लोगों ने अपने आप को मूर्तिपूजा करने के लिए पवित्र किया था।

नया नियम में, पवित्र किया जाना (*सैंक्टीफिकेशन)* मुख्यत: लोगों के सम्बन्ध में प्रयोग में लाया गया है। किन्तु, प्रभु यीशु ने कहा कि मन्दिर उसमें रखे सोने को पवित्र करता है, और वेदी उस पर रखी भेंट को पवित्र करती है (मत्ती 23:17,19)। पौलुस ने यह शिक्षा दी है कि जब हम अपने भोजन के लिए धन्यवाद देते हैं, तो यह परमेश्वर के वचन और प्रार्थना के द्वारा शुद्ध हो जाता है (1 तीमु. 4:5)।

व्यक्तियों को पवित्र किए जाने के सम्बन्ध में, परमेश्वर ने मसीह को पवित्र ठहराया और उसे संसार में भेजा (यूहन्ना 10:36); अर्थात्, परमेश्वर ने अपने पुत्र को अलग किया कि वह हमारे पापों से हमें उद्धार देने के कार्य को पूरा करें। प्रभु यीशु ने अपने आप को पवित्र किया (यूहन्ना 17:19); दूसरे शब्दों में, उसने अपने आप को अलग किया कि अपने लोगों के लिए बिचवई बन कर प्रार्थना करें।

एक अर्थ में अविश्वासी लोग भी पवित्र ठहरते हैं: ''क्योंकि ऐसा पति जो विश्वास न रखता हो, वह पत्नी के कारण पवित्र ठहरता है; और ऐसी पत्नी जो विश्वास नहीं रखती, पति के कारण पवित्र ठहरती है'' (1 कुरि. 7:14अ)। इसका अर्थ यह है कि अविश्वासी जीवनसाथी एक मसीही जीवनसाथी को पाने के द्वारा, जो उसके उद्धार के लिए प्रार्थना करे, एक विशेषाधिकार के स्थान में अलग किया जाता है।

और एक अन्य अर्थ में मसीह को सब विश्वासियों के द्वारा पवित्र किया जाना है। ''पर मसीह को प्रभु जानकर अपने अपने मन में पवित्र समझो'' (1 पतरस 3:15)। हम उसे अपने जीवनों का निर्विवाद सर्वोच्च प्रभु मानने के द्वारा अलग करते हैं।

किन्तु, उपरोक्त बातों के अतिरिक्त, पवित्र किए जाने के चार अन्य महत्वपूर्ण प्रकार हैं जिनके बीच का अन्तर और जिनकी विशेषताओं को हमें नया नियम का अध्ययन करते समय ध्यान में रखना चाहिए। इन्हें मन फिराव से पहले का पवित्र किया जाना, पदवी में पवित्र किया जाना, लगातार पवित्र किया जाना, और सिद्ध रूप से पवित्र किया जाना नाम दिया जा सकता है।

मन फिराव से पहले का पवित्र किया जाना

एक व्यक्ति के द्वारा नया–जन्म प्राप्त करने के बहुत पहले से ही, पवित्र आत्मा उसके जीवन में कार्य करता है, उसे संसार से अलग और मसीह की ओर आकर्षित करता जाता है। पौलुस ने जान लिया कि उसे उसके जन्म से पहले ही अलग कर दिया गया था (गला. 1:15)। 2 थिस्सलुनीकियों 2:13 में, प्रेरित थिस्सलुनीकियों को यह स्मरण दिलाता है कि उनके उद्धार के तीन चरण थे:

1. परमेश्वर के द्वारा उन्हें चुना जाना।
2. आत्मा के द्वारा उन्हें पवित्र किया जाना।
3. सच्चाई पर उनके द्वारा विश्वास लाया जाना।

ध्यान दें कि यह पवित्र किया जाना उनके विश्वास लाने और उनके उद्धार पाने से पहले हुआ।

1 पतरस 1:2 में, उद्धार से जुड़ी बातों का क्रम इस प्रकार से है:

1. परमेश्वर पिता के द्वारा चुना जाना।
2. आत्मा के द्वारा पवित्र किया जाना।
3. यीशु मसीह के प्रति आज्ञाकारिता।
4. उसका लोहू छिड़का जाना।

जगत की उत्पत्ति के पहले से ही परमेश्वर ने हमें मसीह में चुन लिया है (इफि. 1:4)। उसके बाद हमने सुसमाचार का पालन किया। जैसे ही हमने ऐसा किया, मसीह के द्वारा बहाए गए लोहू का सारा मूल्य हमारे खाते में जोड़ दिया गया। परन्तु यहाँ हमें जिस बात का ध्यान रखना है, वह यह है, कि पौलुस यहाँ पर जिस पवित्र बनाए जाने की बात कर रहा है वह नया–जन्म प्राप्त करने से पहले का विषय है।

पद सम्बन्धी पवित्र किया जाना

जिस क्षण एक व्यक्ति का नया जन्म होता है, वह पद में पवित्र हो जाता है। इसका अर्थ यह है कि परमेश्वर की दृष्टि में वह पवित्र समझा जाता है, वह परमेश्वर के लिए संसार से पूरी तरह अलग मान लिया जाता है क्योंकि वह ''मसीह में'' है। वास्तविक अर्थों में, मसीह स्वयं ही उसका पवित्रीकरण है (1 कुरि. 1:30)।

हर एक सच्चा विश्वासी एक पवित्र जन है; वह प्रभु के लिए अलग किया गया है। यह उसका पद है। इसलिए 1 कुरिन्थियों 1:2 में कुरिन्थुस की स्थानीय कलीसिया के सभी मसीहियों को ''मसीह में पवित्र किए गए, और पवित्र होने के लिए बुलाए गए'' कहा गया है। कुरिन्थुस के पवित्र लोग वास्तव में हमेशा पवित्र नहीं थे! वे कलीसिया में भयानक पाप होने देते थे (1 कुरिन्थियों 5:1–2)। वे एक दूसरे के विरुद्ध कचहरी में जाते थे (1 कुरि. 6:1)। उनके बीच कुछ लोग पुनरुत्थान की सच्चाई के विरुद्ध शिक्षा देते थे (1 कुरि. 15:12–14)। परन्तु जहाँ तक उनके पद की बात है, यह सत्य है कि वे पवित्र लोग थे – वे मसीह में पवित्र किए गए थे।

अब आइये हम कुछ ऐसे स्थलों की ओर ध्यान दें जो पद में पवित्र किए जाने की बात करते हैं। प्रेरित 20:32 में, ''सब पवित्र किए गए लोगों'' का अर्थ सभी विश्वासियों से है। प्रेरित 26:18 में प्रभु ने अपने लोगों को ''जो मुझ पर विश्वास करने से पवित्र किए गए हैं'' कहा है। कुरिन्थुस के लोगों को ''प्रभु यीशु मसीह के नाम से और हमारे परमेश्वर के आत्मा से धोए गए और पवित्र हुए और धर्मी ठहरे'' कहा गया है (1 कुरि. 6:11)। और इब्रानियों की पत्री का लेखक हमें यह स्मरण दिलाता है कि ''हम यीशु मसीह की देह के एक ही बार बलिदान चढ़ाए जाने के द्वारा पवित्र किए गए हैं'' (इब्रा. 10:10)। ''क्योंकि उस ने एक ही चढ़ावे के द्वारा उन्हें जो पवित्र किए जाते हैं, सर्वदा के लिए सिद्ध कर दिया है'' (इब्रा. 10:14)।

पद में पवित्र किए जाने को पवित्रशास्त्र में पवित्र शब्द के प्रयोग के द्वारा भी व्यक्त किया गया है। इसलिए कुलुस्सियों 3:12 में, जब पौलुस मसीहियों को पवित्र कहता है, तो वह परमेश्वर की दृष्टि में उनके पद की बात कर रहा है।

लगातार पवित्र किया जाना

यद्यपि पवित्रशास्त्र में ऐसे अनेक स्थल पाए जाते हैं जो यह कहते हैं कि सब मसीहियों को पवित्र किया गया है, अनेक ऐसे स्थल भी पाए जाते हैं जो यह कहते हैं कि उन्हें पवित्र बनना है। यदि हम इन दोनों प्रकारों के बीच में अन्तर नहीं कर पाते, तो हम बुरी तरह से उलझन में पड़ सकते हैं।

लगातार या व्यवहार में पवित्र किया जाना इस विषय में है कि हमें अपना दैनिक जीवन कैसे व्यतीत करना है। हमें पाप और बुराई से परमेश्वर के लिए अलग हो कर जीवन व्यतीत करना है। पवित्र लोगों को पूरे समय और भी पवित्र होते जाना है।

प्रभु यीशु ने यूहन्ना 17:17 में पवित्र बनने के इसी पहलू के विषय में कहा था, जब उसने अपने 'अपनों' के लिए यह प्रार्थना की थी, ''सत्य के द्वारा उन्हें पवित्र कर: तेरा वचन सत्य है।''

इसमें विश्वासी को भी सहयोग करना है (2 तीमु. 2:21)। पवित्रशास्त्र में जहाँ कहीं हमें पवित्र बनने या पवित्रता के सम्बन्ध में कोई उपदेश या आज्ञा दिखाई दे तो हम समझ जाएं कि यहाँ पर व्यवहार में पवित्र बनने की बात की जा रही है। इसलिए पौलुस कुरिन्थियों से विनती करता है, ''तो आओ, हम अपने आप को शरीर और आत्मा की सब मलिनता से शुद्ध करें, और परमेश्वर का भय रखते हुए पवित्रता को सिद्ध करें'' (2 कुरि. 7:1)। और इसी कड़ी में पतरस ने लिखा है, ''जैसा तुम्हारा बुलानेवाला पवित्र है, वैसे ही तुम भी अपने सारे चाल-चलन में पवित्र बनो'' (1 पतरस 1:15)।

व्यावहारिक रूप से पवित्र बनने का रूप अनैतिकता से अलगाव के सम्बन्ध में है:

क्योंकि परमेश्वर की इच्छा यह है कि तुम पवित्र बनो: अर्थात्, व्यभिचार से बचे रहो, और तुम में हर एक पवित्रता और आदर के साथ अपनी पत्नी को प्राप्त करना जाने। (1 थिस्स. 4:3-4)।

एक मसीही अधिक पवित्र, या और अधिक प्रभु यीशु के समान कैसे बन सकता है? इसका उत्तर 2 कुरिन्थियों 3:18 में पाया जाता है:

परन्तु जब हम सब के उघाड़े चेहरे से प्रभु का प्रताप इस प्रकार प्रगट होता है, जिस प्रकार दर्पण से, तो प्रभु के द्वारा जो आत्मा है, हम उसी तेजस्वी रूप में अंश अंश करके बदलते जाते हैं।

व्यावहारिक पवित्रता प्रभु के साथ अधिक से अधिक समय व्यतीत करने से आती है। जीवन का यह एक सिद्धान्त है कि हम जिसकी आराधना करते हैं, उसी के समान बन जाते

हैं। हम मसीह की ओर ध्यान केन्द्रित कर उसके विषय में जितना अधिक मनन करते हैं, हम उतना ही अधिक उसके समान बनते जाते हैं। पवित्र आत्मा इस अद्‌भुत परिवर्तन को रूप देता है – एक ही बार में नहीं, परन्तु महिमा के एक अंश से दूसरे अंश तक।

सिद्ध रूप में पवित्र किया जाना

पवित्र बनने का यह पहलू विश्वासी के लिए अब भी भविष्य में पूरा होने वाला विषय है। जब वह उद्धारकर्ता को आमने–सामने देखेगा तो वह सदा के लिए सारे पाप और अशुद्धता से अलग हो जाएगा। वह नैतिक रूप से यीशु मसीह के समान हो जाएगा सिद्ध रूप में पवित्र किया हुआ।

कुलुस्सियों 1:22 में हम यही पढ़ते हैं, ''उसने अब उसकी शारीरिक देह में मृत्यु के द्वारा तुम्हारा भी मेल कर लिया ताकि तुम्हें अपने सम्मुख पवित्र और निष्कलंक, और निर्दोष बना कर उपस्थित करे।''

उस दिन कलीसिया पूरी तरह से अपनी पवित्रता को प्राप्त कर लेगी: ''और उसे एक ऐसी तेजस्वी कलीसिया बनाकर अपने पास खड़ी करे, जिसमें न कलंक, न झुर्री, न कोई और ऐसी वस्तु हो वरन पवित्र और निर्दोष हो'' (इफि. 5:27)।

कुछ अन्य स्थल है जो हमारी सिद्ध पवित्रता की बात करते हैं परन्तु इन पदों में इस शब्द का उल्लेख नहीं पाया जाता। उदाहरण के लिए, यूहन्ना कहता है, ''अभी तक यह प्रगट नहीं हुआ कि हम क्या कुछ होंगे, क्योंकि उसको वैसा ही देखेंगे जैसा वह है'' (1 यूहन्ना 3:2ब)। और यहूदा हमें यह स्मरण दिलाता है कि हमारा प्रभु हमें ''अपनी महिमा की भरपूरी के सामने मगन और निर्दोष करके खड़ा कर सकता है'' (के रूप में) प्रस्तुत करेगा (यहूदा 24ब)।

सारांश

पवित्र किए जाने के इन तीन विभिन्न पहलुओं के बीच के अन्तर और उनकी विशेषताओं को जानने के बाद यह बाइबल अध्ययन में आपके लिए अत्याधिक सहायक होगा। जब कभी आप ऐसे शब्द को देखें जो पवित्रता या पवित्रीकरण से सम्बन्धित हो, तो अपने आप से प्रश्न करें, ''क्या यह मनफिराव से पहले हुआ था? क्या यह इस विषय में है कि मैं मसीह में क्या हूँ? क्या यह इस विषय में है कि अपने दैनिक जीवन में मुझे कैसा बनना चाहिए? या यह तब होगा जब मैं हमारे प्रभु यीशु मसीह की महिमामय उपस्थिति में प्रवेश करुंगा?''

अध्याय 10

पवित्र आत्मा का वास, बपतिस्मा,

और

पवित्र आत्मा से परिपूर्ण होना

जब हम पवित्र आत्मा के सिद्धान्त का अध्ययन आरम्भ करते हैं, तो अनेक ऐसे महत्वपूर्ण अन्तरों वाली बातें आती हैं जिनका ध्यान रखना हमारे लिये अत्यंत महत्वपूर्ण है। हमें पवित्र आत्मा का वास, बपतिस्मा, और पवित्र आत्मा से परिपूर्ण होना, तीनों के बीच में अन्तर को जानना आवश्यक है। हमें यह समझना आवश्यक है कि आत्मा का बपतिस्मा और आग का बपतिस्मा एक ही बात नहीं है। और हमें यह पवित्र आत्मा से प्रभु की सर्वोच्च इच्छा के द्वारा परिपूर्ण किया जाना और पवित्र आत्मा से परिपूर्ण होने की हमारी जिम्मेदारी के बीच में अन्तर करना आवश्यक है।

पवित्र आत्मा का वास

जैसे ही एक व्यक्ति का नया–जन्म होता है, परमेश्वर का पवित्र आत्मा उस व्यक्ति की देह में आ कर वास करता है (1 कुरि. 6:19): ''क्या तुम नहीं जानते कि तुम्हारी देह पवित्र आत्मा का मन्दिर है, जो तुम में बसा हुआ है और तुम्हें परमेश्वर की ओर से मिला है; और तुम अपने नहीं हो?'' जिस व्यक्ति के पास पवित्र आत्मा नहीं है वह व्यक्ति मसीही नहीं है (रोमि. 8:9ब)। एक बार जब त्रिएक परमेश्वर का तीसरा व्यक्ति (अर्थात् पवित्र आत्मा परमेश्वर) किसी व्यक्ति के भीतर वास करने लगता है, तो उसके बाद वह उसे कभी नहीं छोड़ता (यूहन्ना 14:16)। हम यह कैसे जान सकते हैं कि वह हमारे भीतर स्थायी रूप से वास करता है? हम यह तुरन्त ही जान लेते हैं क्योंकि परमेश्वर का वचन ऐसा ही कहता है। परन्तु जब समय बीतता जाता है, तब हम हमारे जीवन में उसके द्वारा लाए जा रहे परिवर्तनों को देख कर यह जान जाते हैं। पवित्र आत्मा का वास प्राथमिक रूप से भावनाओं की बात नहीं है, यद्यपि इसमें भावनाएं शामिल हैं। बाइबल में हमसे कभी यह नहीं कहा गया है कि हम पवित्र आत्मा के वास के लिए प्रार्थना करें या उसके द्वारा ऐसा किए जाने के लिए रूके रहें। जिस क्षण हम प्रभु यीशु मसीह पर विश्वास करते हैं उसी क्षण हमें यह मिल जाता है।

आत्मा का बपतिस्मा

आत्मा के बपतिस्मा के विषय में, 1 कुरिन्थियों 12:13 प्रमुख स्थल है:

क्योंकि हम सब ने क्या यहूदी हो क्या यूनानी, क्या दास हो क्या स्वतंत्र, एक ही आत्मा के द्वारा एक देह होने के लिए बपतिस्मा लिया, और हम सब को एक ही आत्मा पिलाया गया।

यहाँ पर हम यह पढ़ते हैं कि बपतिस्मा पवित्र आत्मा की वह सेवकाई है जिसके तहत एक विश्वासी को मसीह की देह, अर्थात् (सार्वभौमिक) कलीसिया में स्थान दिया जाता है। आरम्भिक बपतिस्मा पिन्तेकुस्त के दिन हुआ था जब कलीसिया की स्थापना हुई थी। तब से, जब कभी कोई व्यक्ति मन फिराता है, वह आत्मा के बपतिस्मा के द्वारा (सार्वभौमिक) कलीसिया में जोड़ा जाता है।

दूसरे शब्दों में, जाति या संस्कृति से परे, सभी विश्वासियों ने इस बपतिस्मा को पाया है। यह नया–जन्म के साथ साथ होता है, बाद में नहीं, और किसी भी मसीही के जीवन में इसके दोहराव की आवश्यकता नहीं है।

कभी भी किसी को आत्मा का बपतिस्मा लेने की आज्ञा नहीं दी गई है। यह अपने आप हो जाता है जब एक पापी व्यक्ति उद्धारकर्ता प्रभु यीशु मसीह को स्वीकार करता है। यह कोई भावनात्मक अनुभव नहीं है। बाइबल हमें बताती है कि ऐसा होता है, और सिर्फ यही इस विषय में हमारी जानकारी का स्त्रोत है।

आग से बपतिस्मा

आग से बपतिस्मा और आत्मा का बपतिस्मा दोनों अलग–अलग बातें हैं। आग से बपतिस्मा दिया जाना न्याय का बपतिस्मा है, आशीष या विशेषाधिकार का नहीं।

जब यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाला विश्वासियों और अविश्वासियों के एक मिले–जुले समूह को सम्बोधित कर रहा था, तब उसने कहा था, ''वह (प्रभु यीशु मसीह) तुम्हें पवित्र आत्मा और आग से बपतिस्मा देगा'' (मत्ती 3:11; लूका 3:16)। इसके बाद यूहन्ना यह स्पष्ट करता है कि आग से बपतिस्मा एक ईश्वरीय न्याय है:

उसका सूप, उसके हाथ में है; और वह अपना खलिहान अच्छी तरह से साफ करेगा; और गेहूँ को अपने खत्ते में इकट्ठा करेगा, परन्तु भूसी को उस आग में जो बुझने की नहीं जला देगा। (लूका 3:17; मत्ती 3:12 भी देखें)।

सन्दर्भ से यह स्पष्ट होता है कि आग न्याय को दर्शाता है। यह आनन्द उठाया जाने वाला हर्षातिरेक (या भावविभोर होना) या उत्साह नहीं है!

परन्तु जब श्रोताओं के रूप में अविश्वासियों का कोई उल्लेख नहीं किया गया है, तब वहाँ पर यूहन्ना ने कहा है, ''वह (प्रभु यीशु) तुम्हें पवित्र आत्मा से बपतिस्मा देगा'' (मरकुस 1:8; यूहन्ना 1:33)। तब वह आग का कहीं उल्लेख नहीं करता।

आत्मा का बपतिस्मा विश्वासियों के लिए (पिन्तेकुस्त के दिन) एक बीती हुई घटना है। परन्तु आग का बपतिस्मा अविश्वासियों के लिए भविष्य में होने वाली एक (न्याय की) घटना है।

आत्मा से परिपूर्ण होने के दो पहलू

आत्मा से परिपूर्ण होना नया नियम में दो विभिन्न प्रकार से प्रयोग में लाया गया है। यदि हम इस बात को ध्यान में नहीं रखेंगे, तो हम इस विषय का पवित्रशास्त्र के शेष भाग के साथ ताल–मेल बैठाने की कोशिश में उलझ जाएंगे।

पहला प्रकार, हम इसे ''परमेश्वर की सर्वोच्च इच्छा से'' आत्मा से परिपूर्ण होना कह सकते हैं। उदाहरण के लिये, हम यह पढ़ते हैं कि यूहन्ना बपतिस्मा देने वाला ''अपनी माता के गर्भ ही से पवित्र आत्मा से परिपूर्ण हो जाएगा'' (लूका 1:15ब)। स्पष्ट है कि शिशु यूहन्ना ने आत्मा से परिपूर्ण होने की किसी भी शर्त को पूरा नहीं किया था! यह परमेश्वर की सर्वोच्च इच्छा से हुआ था ताकि यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाले को मसीह के लिए मार्ग तैयार करने हेतु उसकी अद्वितीय सेवकाई के लिए तैयार किया जा सके।

प्रेरितों के काम की पुस्तक में परमेश्वर की सर्वोच्च इच्छा से परिपूर्ण किए जाने के मिलते–जुलते उदाहरण पाए जाते हैं। उन में से दो निम्नलिखित हैं:

पतरस को आत्मा से परिपूर्ण किया गया ताकि उसे यहूदी आराधनालय में निर्भीकता से अपनी बात रखने के लिए तैयार किया जा सके (प्रेरित 4:8–12)।

और प्रभु के द्वारा पौलुस को आत्मा से परिपूर्ण किए जाने के कारण ही, वह इलीमास टोन्हें की भर्त्सना कर सका (प्रेरित 13:9–11)।

आत्मा से परिपूर्ण होते जाओ

दूसरे प्रकार का परिपूर्ण होना भिन्न है। यह एक आज्ञा के रूप में हर एक विश्वासी को दी गई है, यह उसके नियंत्रण से बाहर नहीं है। इस विषय पर प्रमुख स्थल इफिसियों 5:18 है: ''और दाखरस से मतवाले न बनो, क्योंकि इससे लुचपन होता है, पर आत्मा से परिपूर्ण होते जाओ।''

क्रिया ''परिपूर्ण होते जाओ'' यहाँ पर एक सतत् कर्तव्य को दर्शाती है, पवित्र आत्मा के

एक ही बार होने वाले किसी अनुभव को नहीं। इसकी तुलना दाखरस से होने वाले मतवालेपन से की गई है।[2] निम्नलिखित पर ध्यान दें:

दाखमधु से मतवालापन	पवित्र आत्मा से परिपूर्ण होते जाना
बात करते समय जीभ लड़खड़ाना, उटपटांग बातें करना	पवित्र बातें करना और मसीह की बड़ाई करना
ठीक से नहीं चल पाना और लड़खड़ाना	पवित्र और उद्देश्यपूर्ण चालचलन
व्यक्ति नशे की ''आत्मा'' के वश में रहता है	व्यक्ति पवित्र आत्मा के नियंत्रण में रहता है
स्वयं पर से नियंत्रण खो देना	स्वयं पर नियंत्रण पूरी तरह से कायम
लुचपन	लुचपन का कोई खतरा नहीं
पाप से लड़ पाने की क्षमता अत्यंत कमजोर	पाप से लड़ पाने की उच्च क्षमता
शर्मनाक और कलंकित अवस्था	अनुकरणीय और कुलीन
दाखमधु अवसाद लाता है	परिपूर्ण होना नया बल देता है

आत्मा से किस तरह से परिपूर्ण होते जाना है?

हमने पहले भी इस बात का उल्लेख किया है कि पवित्र आत्मा से परिपूर्ण होने के लिए कुछ शर्तों का पालन करने की आवश्यकता है। जैसा कि किसी ने कहा है, हमें अपने आप को''आशीष के मार्ग में'' लाना है। हम ऐसा किस तरह से कर सकते हैं?

बिना देर किए पाप का अंगीकार और त्याग करें (1 यूहन्ना 1:9; नीति. 28:13)।

अपने शरीर को निरन्तर एक जीवित बलिदान करके भेंट चढ़ाते रहें (रोमि. 12:1-2)।

मसीह के वचन को अपने हृदय में अधिकाई से बसने दें (कुलु. 3:16)।

आराधना और प्रार्थना में अधिक समय व्यतीत करें (2 कुरि. 3:18; मत्ती 7:7)।

मसीही संगति में निकटता से बने रहें (इब्रा. 10:25)।

सब कुछ परमेश्वर की महिमा के लिए करें (1 कुरि. 10:31)।

जो व्यक्ति आत्मा से परिपूर्ण होता है, वह इस बात को दूसरों के सामने नहीं बोलता। वह अपने आप को नीचा और मसीह को ऊँचा करता है (यूह. 3:30; 16:14)। वह आत्मा में जितना अधिक चलता जाता है, उतना अधिक वह अपनी शून्यता और अयोग्यता को पहचानता जाता है।

यह स्मरण रखना बेहतर है कि आत्मा से परिपूर्ण होना कोई भावना नहीं बल्कि पवित्रता है। यह सत्य है कि इसमें भावनाएं भी शामिल हैं, जिस तरह से मसीह जीवन की अन्य बातों में, परन्तु भावनाएं ही सब कुछ नहीं हैं। हमारी मानवीय भावनाएं ईश्वरीय परिपूर्णता का एक गौण फल *(बाय–प्रोडक्ट)* हैं।

अन्तिम बात

यह सम्भव है कि किसी विश्वासी को पवित्र आत्मा का कोई ऐसा अनुभव हुआ हो जिसके बारे में हमने चर्चा नहीं की है। उदाहरण के लिए, ऐसा तब हो सकता है जब वह पाप में फिसल जाने के बाद फिर से प्रभु की संगति में वापस लाया जाता है, या जब वह एक नये सिरे से और अधिकाई से अपने आप को मसीह के लिए फिर से समर्पित करता है। इस प्रकार के अनुभव की हमें बड़ी लालसा करनी चाहिए, और इसमें गहरी भावनाएं शामिल रहती हैं। यह आत्मा का वास या बपतिस्मा से अलग है। सकारात्मक रूप में यह एक ऐसा अनुभव है जो हमें आत्मा से परिपूर्ण होने की प्रक्रिया की ओर ले जाता है, परन्तु आत्मा से परिपूर्ण होना एक ही बार में हो जाने वाली बात नहीं है। यह एक प्रक्रिया है। पवित्र आत्मा की इन सेवकाइयों को ऐसे गलत नाम देना, जो वास्तव में आत्मिक जीवन के अन्य पहलूओं के लिए बाइबल में प्रयोग में लाए गए हैं, सिर्फ सैद्धान्तिक उलझनों को उत्पन्न करते हैं।

अन्त्य टिप्पणियाँ

1. मूल में दो काल हैं जो आज्ञा के रूप में प्रयोग में लाए गए हैं। एक कार्य या घटना (बीती हुई) पर जोर देता है। यहाँ पर जिसका प्रयोग किया गया है (वर्तमान) यह लगातार एक निरन्तर या दोहराये जाने वाले कार्य पर जोर देता है। ''आत्मा से परिपूर्ण होते जाओ'' हिन्दी में एक अच्छा अनुवाद है।

2. केजेवी का अनुवाद ''*एक्सेस*'' एक ऐसा शब्द है जिसका प्रयोग वर्तमान में ''आप की क्षमता से अधिक'' के अर्थ में किया जाता है। (उदाहरण के लिए, एक व्यक्ति आवश्यकता से अधिक कोका–कोला, कॉफी, या चाय पीता है)। मतवालापन निरन्तर असंयमित जीवन, विशेष रूप से नशाखोरी के सम्बन्ध में, को दर्शाता है।

अध्याय 11

उद्धार और सेवा

परमेश्वर के वचन का अध्ययन करते समय हम बहुत सी त्रुटिपूर्ण समझ और उलझनों से बच सकते हैं यदि हम उद्धार के विषय से सम्बन्धित स्थलों और मसीही जीवन व सेवा के विषय से सम्बन्धित स्थलों के बीच के अन्तरों को पहचान पाएं।

उद्धार से सम्बन्धित स्थल

सामान्यत: उद्धार से सम्बन्धित स्थलों को पहचान पाना कठिन नहीं है। वे निम्नलिखित तथ्यों के विषय में एक ही प्रकार की गवाही देते हैं:

परमेश्वर की भूमिका के दृष्टिकोण से, उद्धार अनुग्रह से है:

उसे परमेश्वर ने उसके लोहू के कारण एक ऐसा प्रायश्चित ठहराया, जो विश्वास करने से कार्यकारी होता है, कि जो पाप पहिले किए गए, और जिन की परमेश्वर ने अपनी सहनशीलता से आनाकानी की; उन के विषय में वह अपनी धार्मिकता प्रगट करे (रोमि. 3:24)।

मसीह की भूमिका के दृष्टिकोण से, उद्धार कलवरी पर उसके द्वारा हमारे बदले में पूर्ण किए गए कार्य के कारण सम्भव हुआ:

जो पाप से अज्ञात था, उसी को उस ने हमारे लिए पाप ठहराया, कि हम उस में होकर परमेश्वर की धार्मिकता बन जाएं (2 कुरि. 5:21)।

मनुष्य की भूमिका के दृष्टिकोण से, उद्धार विश्वास के द्वारा है, और व्यवस्था के कार्यों की यहाँ कोई भूमिका नहीं है:

तौभी यह जानकर कि मनुष्य व्यवस्था के कामों से नहीं, पर केवल यीशु मसीह पर विश्वास करने के द्वारा धर्मी ठहरता है, हम ने आप भी मसीह यीशु पर विश्वास किया, कि हम व्यवस्था के कामों से नहीं पर मसीह पर विश्वास करने से धर्मी ठहरें; इसलिए कि व्यवस्था के कामों से कोई प्राणी धर्मी न ठहरेगा (गला. 2:16)।

उद्धार को लेकर आश्वासन के दृष्टिकोण से, एक विश्वासी परमेश्वर के वचन के अधिकार के द्वारा यह जान सकता है कि उसने उद्धार पा लिया है:

मैं ने तुम्हें, जो परमेश्वर के पुत्र के नाम पर विश्वास करते हो, इसलिए लिखा है; कि तुम जानो, कि अनन्त जीवन तुम्हारा है (1 यूहन्ना 5:13)।

उद्धार को लेकर सुरक्षा के दृष्टिकोण से, परमेश्वर के सन्तान कभी भी नाश नहीं होंगे, न ही अपने पाप के कारण अनन्त दण्ड का सामना करेंगे:

मेरी भेड़ें मेरा शब्द सुनती हैं, और मैं उन्हें जानता हूँ, और वे मेरे पीछे पीछे चलती हैं। और मैं उन्हें अनन्त जीवन देता हूँ, और वे कभी नाश नहीं होंगी, और कोई उन्हें मेरे हाथ से छीन न लेगा। मेरा पिता, जिस ने उन्हें मुझ को दिया है, सब से बड़ा है, और कोई उन्हें पिता के हाथ से छीन नहीं सकता (यूहन्ना 10:27–29)।

सेवा से सम्बन्धित स्थल

यहाँ पर कठिनाई तब सामने आती है जब हम यह पहचान नहीं पाते कि स्थल उद्धार के सम्बन्ध में नहीं, बल्कि मसीही जीवन और सेवा के सम्बन्ध में है। उदाहरण के लिए, यूहन्ना 15:1–11:

सच्ची दाखलता मैं हूँ, और मेरा पिता किसान है। जो डाली मुझ में है और नहीं फलती, उसे वह काट डालता है; और जो फलती है, उसे वह छाँटता है ताकि और फले। तुम तो उस वचन के कारण जो मैं ने तुम से कहा, शुद्ध हो। तुम मुझ में बने रहो, और मैं तुम में, जैसे डाली यदि दाखलता में बनी न रहे तो अपने आप से नहीं फल सकती, वैसे ही तुम भी यदि मुझ में बने न रहो तो नहीं फल सकते। मैं दाखलता हूँ: तुम डालियाँ हो। जो मुझ में बना रहता है और मैं उसमें, वह बहुत फल फलता है, क्योंकि मुझ से अलग हो कर तुम कुछ भी नहीं कर सकते। यदि कोई मुझमें बना न रहे, तो वह डाली के समान फेंक दिया जाता, और सूख जाता है; और लोग उन्हें बटोरकर आग में झोंक देते हैं, और वे जल जाती हैं। यदि तुम मुझ में बने रहो और मेरा वचन तुम में बना रहे, तो जो चाहे मांगों और वह तुम्हारे लिए हो जाएगा। मेरे पिता की महिमा इसी से होती है कि तुम बहुत सा फल लाओ, तब ही तुम मेरे चेले ठहरोगे। जैसा पिता ने मुझ से प्रेम रखा, वैसा ही मैं ने तुम से प्रेम रखा; मेरे प्रेम में बने रहो। यदि तुम मेरी आज्ञाओं को मानोगे, तो मेरे प्रेम में बने रहोगे, जैसा कि मैं ने अपने पिता की आज्ञाओं को माना है, और उसके प्रेम में बना रहता हूँ।

इस स्थल का विषय नरक से उद्धार पाना नहीं, बल्कि फल लाना है। अर्थात्, यह मसीही जीवन में आत्मा के फलों को प्रगट किए जाने के सम्बन्ध में है (गला. 5:22–23)। यह उद्धारकर्ता की आवश्यकता में पड़े पापियों के लिए नहीं बल्कि उन पवित्र लोगों (सब विश्वासियों) को लिखा गया था जिन्हें मसीह के समान बनने की आवश्यकता थी। यदि हम यह बात नहीं पहचान पा रहे हैं, तो शायद हम इस निष्कर्ष पर पहुँचेंगे कि आखिर मसीहियों को भी नरक की आग में डाल ही दिया जाएगा। यूहन्ना 15:6 वास्तव में यह शिक्षा देता है कि पाप में फिसल जाने वाले एक विश्वासी के नाम और उसकी गवाही को संसार छीन लेता है

और प्रतीकात्मक रूप से उसे व्यर्थ मान कर आग में फेंक देता है। उद्धार न पाए हुए लोग दाख में बनी न रहने वाली ''एक डाली'' (विश्वासी) के प्रति अवहेलना के सिवाय और कोई दूसरा भाव नहीं रखते।

एक अन्य स्थल जिसे अक्सर गलत समझा जाता है, वह है 1 कुरिन्थियों 3:10–15।

परमेश्वर के उस अनुग्रह के अनुसार जो मुझे दिया गया, मैं ने बुद्धिमान राजमिस्त्री के समान नींव डाली, और दूसरा उस पर रद्दा रखता है। परन्तु हर एक मनुष्य चौकस रहे कि वह उस पर कैसा रद्दा रखता है। क्योंकि उस नींव को छोड़ जो पड़ी है, और वह यीशु मसीह है, कोई दूसरी नींव नहीं डाल सकता। यदि कोई इस नींव पर सोना या चाँदी या बहुमूल्य पत्थर या काठ या घास या फूस का रद्दा रखे, तो हर एक का काम प्रगट होगा और वह आग हर एक काम परखेगी कि कैसा है। जिसका काम उस पर बना हुआ स्थिर रहेगा, वह मजदूरी पाएगा। यदि किसी का काम जल जाएगा, तो वह हानि उठाएगा; पर वह आप बच जाएगा परन्तु जलते जलते।

पद 11 का विषय उद्धार है; इस पद में यह शिक्षा पाई जाती है कि प्रभु यीशु मसीह ही एकमात्र सच्ची नींव है। परन्तु स्थल का शेष भाग इस नींव पर निर्माण के विषय में है – दूसरे शब्दों में, यह उस सेवा की बात कर रहा है जो उद्धार पाने के बाद व्यक्ति करता है। यहाँ ऐसा कोई संकेत नहीं पाया जाता कि किसी विश्वासी को आग से परखा जाएगा। यहाँ पर उसके कार्य को परखा जाएगा। विश्वासी स्वयं नहीं जलेगा, परन्तु उसके कार्य जल सकते हैं। यहाँ पर विश्वास पर जोर नहीं दिया गया है जिससे कि उद्धार प्राप्त होता है, परन्तु कार्यों पर जोर दिया गया है जिसके आधार पर प्रतिफल दिया जाता है या प्रतिफल से वंचित किया जाता है।

या फिर 1 कुरिन्थियों 9:24–27 में पौलुस द्वारा लिखे गए वचनों का एक और उदाहरण लें:

क्या तुम नहीं जानते कि दौड़ में तो दौड़ते सब ही हैं, परन्तु इनाम एक ही ले जाता है? तुम वैसे ही दौड़ो कि जीतो। हर एक पहलवान सब प्रकार का संयम करता है; वे तो एक मुरझानेवाले मुकुट को पाने के लिए यह सब करते हैं, परन्तु हम तो उस मुकुट के लिए करते हैं जो मुरझाने का नहीं। इसलिए मैं तो इसी रीति से दौड़ता हूँ, परन्तु लक्ष्यहीन नहीं; मैं भी इसी रीति से मुक्कों से लड़ता हूँ, परन्तु उस के समान नहीं जो हवा पीटता हुआ लड़ता है। परन्तु मैं अपनी देह को मारता कूटता और वश में लाता हूँ, ऐसा न हो कि औरों को प्रचार करके मैं आप ही किसी रीति से निकम्मा ठहरूँ।

अन्तिम पद में पौलुस अन्त में ''अयोग्य ठहरा दिए जाने'' (यूनानी, *अडोकिमोस,* शब्दश: ''ग्रहणयोग्य नहीं'') की सम्भावना पर बात करता है। सन्दर्भ उद्धार का नहीं है, परन्तु

मसीही जीवन में संयम बरतने से सम्बन्धित है। ऐसी कोई सम्भावना नहीं है कि उद्धार के विषय में पौलुस को तुच्छ जाना जाएगा, क्योंकि वह मसीह में स्वीकार किया गया था। परन्तु अपने आप को अनुशासित कर पाने में उसकी असफलता सेवा और प्रतिफल के मामले में उसे अयोग्य ठहरा दिए जाने का कारण बन सकती है। (पद 27 में केजेवी का अनुवाद, *कास्टअवे* का शब्दशः अनुवाद दूर–दूर तक उचित नहीं है और यह काफी लोगों के लिए अनावश्यक शोकित होने का कारण बना है।)

उद्धार और सेवा के बीच के अन्तर को ध्यान में रखना ही वह कुंजी है जिसके द्वारा नया नियम में दिखने वाले विरोधाभासों को दूर किया जा सकता है। मत्ती 12:30 में हमारे प्रभु ने कहा है:

जो मेरे साथ नहीं, वह मेरे विरोध में है; और जो मेरे साथ नहीं बटोरता, वह बिथराता है।

परन्तु मरकुस 9:40 में उद्धारकर्ता ने कहा है,

क्योंकि जो हमारे विरोध में नहीं, वह हमारी ओर है।

यदि हम सरसरी तौर पर इन दोनों पदों को पढ़ते हैं तो पहली बार में ऐसा लगता है कि दोनों पदों में एक दूसरे के विपरीत बात लिखी गई है! परन्तु यह कठिनाई दूर हो जाती है जब हम यह ध्यान देते हैं कि मत्ती 12:30 उद्धार और मरकुस 9:40 सेवा से सम्बन्धित है। पहले स्थल में, प्रभु यीशु उन फरीसियों को सम्बोधित कर रहा है जो उसे परमेश्वर का पुत्र मानने से इंकार कर रहे थे और उस पर यह दोष लगा रहे थे कि वह शैतान की सामर्थ से आश्चर्यकर्म करता है। जहाँ तक प्रभु यीशु मसीह के व्यक्तित्व के सम्बन्ध में बात है, जो भी उसके लिए नहीं है वह उसके विरोध में है।

दूसरा स्थल एक ऐसे व्यक्ति के सम्बन्ध में है जो मसीह के नाम से सेवा कर रहा था परन्तु वह चेलों का अनुसरण नहीं कर रहा था। इस पर चेलों ने जब उसे रोका, तो यीशु ने कहा, ''उस को मत मना करो . . . जो हमारे विरोध में नहीं, वह हमारी ओर है।'' जब हम मसीह की सेवा के सम्बन्ध में बात करते हैं, तो जो हमारे विरोध में नहीं है, वह हमारी ओर है।

इन उदाहरणों से यह स्पष्ट हो जाता है कि उद्धार से सम्बन्धित स्थलों और मसीही जीवन व सेवा से सम्बन्धित स्थलों के बीच में अन्तर करने पर हमें कितनी सहायता मिलती है। इसलिए, बाइबल अध्ययन करते समय, अपने आप से प्रश्न करें, कि आप जिस स्थल का अध्ययन कर रहे हैं वह किससे सम्बन्धित है:

- हमारे लिए परमेश्वर का कार्य – उद्धार
- हमारे भीतर परमेश्वर का कार्य – पवित्र बनाया जाना
- हमारे द्वारा परमेश्वर का कार्य – सेवा

अध्याय 12

व्यक्तिगत महानता तथा पदवी सम्बन्धी महानता

पवित्रशास्त्र में कुछ ऐसे स्थल पाए जाते हैं जहाँ पर यह पहचान पाना आवश्यक है कि लेखक किसी व्यक्ति के चरित्र के विषय में लिख रहा है या फिर जीवन में उसकी भूमिका के विषय में। उदाहरण के लिए, एक व्यक्ति दूसरे से बड़ा हो सकता है क्योंकि वह स्वभाव से ही बेहतर है। या दूसरी ओर, बड़े होने का अर्थ सिर्फ यह हो सकता है कि एक व्यक्ति का पद दूसरे व्यक्ति के पद से बड़ा है।

यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाला

प्रभु यीशु ने कहा, ''मैं तुम से सच-सच कहता हूँ, कि जो स्त्रियों से जन्में हैं, उन में से यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाले से कोई बड़ा नहीं हुआ'' (मत्ती 11:11अ)। इसका अर्थ यह नहीं है कि यूहन्ना का चरित्र नूह, दानिय्येल, या अय्यूब के चरित्र से बेहतर था। इसका अर्थ यह नहीं है कि वह अधिक अनुग्रहकारी, भक्त, नम्र, या प्रेमी था। बल्कि इसका अर्थ यह है कि मसीह के अग्रदूत के रूप में उसका पद, जितने उससे पहले हुए उनके पद से बड़ा है। और किसी अन्य को यह सुअवसर नहीं मिला कि वह प्रभु का मार्ग तैयार करे, उसके आगमन की घोषणा करे, और उसे बपतिस्मा दे। इस दृष्टिकोण से, यूहन्ना सबसे अलग था।

स्वर्ग के राज्य में सबसे छोटा

यूहन्ना को पद में सबसे बड़ा बताने के तुरन्त बाद, प्रभु यीशु ने आगे कहा, ''पर जो स्वर्ग के राज्य में छोटे से छोटा है वह उस से बड़ा है'' (मत्ती 11:11ब)। एक बार फिर से, यहाँ इसका अर्थ यह नहीं है कि जो स्वर्ग के राज्य में छोटे से छोटा है उसका व्यक्तित्व या उसकी जीवनशैली यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाले से बेहतर है। बल्कि, इसका अर्थ यह है कि जहाँ यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाले ने राज्य के आगमन की घोषणा की थी, वहीं आज के विश्वासी परमेश्वर के राज्य के नागरिक हैं। यूहन्ना ने अपने आप को ''दूल्हे का मित्र'' कहा है (यूहन्ना 3:29), जबकि आज परमेश्वर के लोग (कलीसिया के विश्वासीगण) दुल्हन हैं। दुल्हन का पद दुल्हे के मित्र के पद से बड़ा है और इस अर्थ में परमेश्वर के राज्य में छोटे से छोटा भी यूहन्ना से बड़ा है।

मरियम

जिब्राइल स्वर्गदूत ने कुंवारी मरियम से कहा, 'आनन्द और जय तेरी हो, जिस पर ईश्वर का अनुग्रह हुआ है! प्रभु तेरे साथ है'' (लूका 1:28)। इस बात पर कोई शंका नहीं है कि मरियम परमेश्वर का भय मानने वाली युवती थी, वह चरित्रवान, और निष्कलंक थी। परन्तु उसकी सच्ची महानता इस बात में थी कि वह हमारे प्रभु के मनुष्यत्व में उसकी माता के रूप में चुनी गई थी। उसने परमेश्वर को अपना ''उद्धारकर्ता'' कहने के द्वारा स्वयं इस बात को स्वीकार किया कि वह पापी है (लूका 1:47)। जरूरी नहीं है कि उसका चरित्र रूत या हन्ना के चरित्र से बेहतर रहा हो। परन्तु उसकी भूमिका में उसके बराबर कोई नहीं था।

एक दिन एक व्यक्ति ने प्रभु यीशु की सराहना करते हुए कहा, ''धन्य है वह गर्भ जिसमें तू रहा और वे स्तन जो तू ने चूसे'' (लूका 11:27)। प्रभु यीशु ने उत्तर दिया, ''हाँ, परन्तु धन्य वे हैं जो परमेश्वर का वचन सुनते और मानते हैं'' (पद 28)। इसका अर्थ यह है कि प्रभु यीशु का अनुयायी प्रभु यीशु की माता से भी बड़ा होता है। इसका अर्थ यह भी है कि मरियम प्रभु यीशु को जन्म देने पर जितना धन्य नहीं हुई, उससे अधिक धन्य वह उस पर विश्वास करने के कारण ठहरी।

पिता मुझसे बड़ा है

यूहन्ना 14:28 एक ऐसा स्थल है जिसमें चरित्र और पद के बीच में अन्तर करना अत्यंत महत्वपूर्ण है, इस पद में प्रभु यीशु ने कहा, ''तुम ने सुना कि मैं ने तुम से कहा, 'मैं जाता हूँ, और तुम्हारे पास फिर आऊंगा' यदि तुम मुझ से प्रेम रखते, तो इस बात से आनन्दित होते कि मैं पिता के पास जाता हूँ, क्योंकि पिता मुझ से बड़ा है।'' जो झूठे शिक्षक मसीह के ईश्वरत्व का इंकार करते हैं वे इन अन्तिम वचनों को तोड़-मरोड़ कर पूरी तरह से सन्दर्भ से बाहर जा कर पेश करते हैं, ''पिता मुझ से बड़ा है'' और पिता और पुत्र के बराबर होने की सच्चाई को झुठलाने का प्रयास कर त्रिएकता की सच्चाई का इंकार करते हैं।

तो फिर इस पद का अर्थ क्या है? जब हमारे प्रभु ने इन वचनों को कहा, उस समय वह पृथ्वी पर था, और वह अपने प्राणियों की ओर से सब प्रकार के बैर, अपमान, और दुर्व्यवहार का सामना कर रहा था। वह ठुकराया गया, तुच्छ जाना गया, और अपमानित हुआ। दूसरी ओर, पिता स्वर्ग में था, और वह मनुष्य के द्वारा किए जाने वाले इस तरह के व्यवहार से बिल्कुल मुक्त था। इस अर्थ में, पुत्र से पिता बड़ा था – पद में बड़ा, लेकिन व्यक्तित्व में बड़ा नहीं। यदि चेले सचमुच में प्रभु से प्रेम रखते, तो वे उसके द्वारा की गई इस घोषणा से आनन्दित होते कि वह स्वर्ग को लौट रहा है, क्योंकि वहाँ वह मनुष्य के द्वारा किए जाने वाले

अपमानों और द्वेषपूर्ण व्यवहारों से दूर रहेगा। स्वर्ग में उसका पद पिता के पद के बराबर होगा – अपने प्राणियों की ओर से आने वाले सताव से बिल्कुल अप्रभावित।

इस तर्क का व्यक्तिगत चरित्र से कोई सम्बन्ध नहीं है। इस क्षेत्र में, परमेश्वर का पुत्र सब बातों में पिता के बराबर है। परन्तु जब तक पुत्र पृथ्वी पर था, और पापियों का बैर झेल रहा था, पिता पद या स्थान की दृष्टि से उससे बड़ा था।

प्रभु यीशु . . . से बड़ा

मत्ती 12 में, प्रभु यीशु ने अपने आप को मन्दिर (पद 6), योना (पद 41), और सुलैमान[2] (पद 42) से बड़ा बताया है। यहाँ पर इस बात का सम्बन्ध पद या भूमिका से बढ़कर है। वह इस दृष्टि से मन्दिर से बड़ा है क्योंकि उसने इसे रूप दिया और इसकी रीतिविधियों को स्थापित किया। वह योना से अपने व्यक्तित्व, अपने सन्देश और सन्देश के परिणाम की दृष्टि में बड़ा है। और वह सुलैमान से महिमा और बुद्धि के क्षेत्र में बड़ा है; प्रभु यीशु ही वह था जिसने उस राजा के दिमाग में इस बुद्धि को दिया था।

सन्दर्भ का ध्यान रखें

सामान्यत:, सन्दर्भ यह स्पष्ट कर देता है कि विषय व्यक्तिगत चरित्र से सम्बन्धित है या फिर पद की प्रतिष्ठा से। प्रभु यीशु मसीह की बात करते समय, उसकी व्यक्तिगत श्रेष्ठता पर कोई सवाल नहीं उठाया जा सकता! वह हमेशा ''महानतम से महान और श्रेष्ठतम से श्रेष्ठ है!''

अन्त्य टिप्पणियाँ

1. ''कलीसिया और परमेश्वर का राज्य'' शीर्षक के अध्याय (18) को देखें।

2. इसका शब्दश: अनुवाद है, ''कुछ ऐसा है जो . . . से बड़ा है,'' शायद यह बात राज्य के लिए कही गई है। परन्तु चूंकि राज्य की उपस्थिति राजा के व्यक्तित्व के रूप में थी, यह कहना उचित है, ''वह है जो. . . से बड़ा है।''

अध्याय 13

बुनियादी, महत्वपूर्ण, या गैर–अनिवार्य मुद्दे

नया नियम का अध्ययन करते समय, यह अनिवार्य है कि हम उन विषयों के बीच जो बुनियादी हैं, जो महत्वपूर्ण हैं परन्तु आवश्यक नहीं कि बुनियादी हों, और जो गैर अनिवार्य हैं, अन्तर कर सकें। यद्यपि परमेश्वर का हर एक वचन परमेश्वर की प्रेरणा से रचा गया है, परन्तु सभी स्थलों पर बराबर जोर या महत्व नहीं दिया जाता।

एक बार जब प्रभु यीशु फरीसियों को सम्बोधित कर रहे थे, तो उन्होंने कहा, ''तुम पोदीने, और सौंफ, और जीरे का दसवाँ अंश तो देते हो, परन्तु तुम ने व्यवस्था की गम्भीर बातों को अर्थात्, न्याय, और दया, और विश्वास को छोड़ दिया है; चाहिए था कि इन्हें भी करते रहते और उन्हें भी न छोड़ते'' (मत्ती 23:23)। दूसरे शब्दों में, उन्होंने यह स्वीकार किया कि व्यवस्था के कुछ भाग दूसरे भागों की तुलना में अधिक वजनदार हैं। परन्तु प्रभु ने यह भी ध्यान दिलाया कि व्यवस्था के कम वजनदार विषयों का भी पालन करने की आवश्यकता है।

मसीही विश्वास में भी ऐसा ही है, कुछ ऐसे सिद्धान्त हैं जो पूरी तरह से बुनियादी या आधारभूत हैं। कुछ ऐसे सिद्धान्त हैं जो महत्वपूर्ण है; कुछ ऐसे हैं जो सीधे–सीधे प्रभु की आज्ञा के रूप में व्यक्त किए गए हैं (1 कुरि. 14:37)। और कुछ ऐसे विषय हैं जिन्हें विश्वासी पर छोड़ दिया गया है कि वह प्रभु के साथ मिलकर व्यक्तिगत रूप से निर्णय ले।

बुनियादी या आधारभूत सिद्धान्त कौन–कौन से हैं?

- पवित्रशास्त्र परमेश्वर की प्रेरणा से रचा गया है। बाइबल परमेश्वर का वचन है।
- त्रिएक परमेश्वर। एक ही परमेश्वर है, जो अनादि से अनन्तकाल तक तीन व्यक्तियों (व्यक्तित्वों) के रूप में अस्तित्व में है।
- मसीह का ईश्वरत्व। प्रभु यीशु मसीह परमेश्वर है।
- देहधारण। प्रभु यीशु सिद्ध मनुष्य भी है।
- क्रूस पर हमारे बदले में उसकी मृत्यु, उसका गाड़ा जाना, और स्वर्गारोहण।

- सुसमाचार। अनुग्रह के द्वारा, विश्वास से, और कर्मों से परे उद्धार।
- दूसरा आगमन। मसीह फिर से आने वाला है। यद्यपि लोग उसके आगमन से सम्बन्धित विवरणों के सम्बन्ध में अलग-अलग मत रखते हैं, परन्तु यह सच्चाई हमारे विश्वास का एक बुनियादी अंग है।
- उद्धार न पाए हुओं को अनन्त दण्ड।

इन सिद्धान्तों के विषय में कोई समझौता नहीं किया जा सकता। हमें यत्नपूर्वक इनका पक्ष दृढ़ रखना है। इनके विषय में पवित्रशास्त्र में स्पष्ट शिक्षा दी गई है। इन सिद्धान्तों को सुसमाचारवादी (इव्हेंजलिकल) कलीसिया के द्वारा शताब्दियों से दृढ़ता से थाम कर रखा गया है। इनके विपरीत जाने वाले विचारों को झूठी शिक्षा कहा जाता है। विश्वासी लोग इन बहुमूल्य सच्चाइयों के लिए अपने प्राण तक देने के लिए तैयार रहे हैं। यहाँ कोई समझौता सम्भव नहीं है। हम ऐसे लोगों के साथ सहभागिता नहीं कर सकते जो इन बुनियादी सिद्धान्तों का इंकार करते हैं।

अवश्य ही, यही बात परमेश्वर के न बदलने वाले नैतिक नियमों पर भी लागू होती है। व्यभिचार करना हमेशा ही गलत है। झूठ बोलना और चोरी करना हमेशा गलत है। मूर्तिपूजा अपने हर रूप में परमेश्वर के वचन में वर्जित है। इन के साथ-साथ अनेक समान क्षेत्रों में, कोई बहाना नहीं चलेगा, कोई तोड़-मरोड़ नहीं चलेगा, और कोई ढिलाई नहीं चलेगी। हमें इन बुराइयों के विरुद्ध पूरी तरह से परमेश्वर के साथ खड़ा होना आवश्यक है।

महत्वपूर्ण परन्तु बुनियादी नहीं

इस दूसरे प्रकार में, वे बातें शामिल हैं जो इसलिए महत्वपूर्ण हैं क्योंकि बाइबल में इन बातों के विषय में अधिकारपूर्ण शिक्षा दी गई है। परन्तु उन्हें विश्वास की आधारभूत बातें नहीं समझा गया है। निम्नलिखित विषय इस श्रेणी में आते हैं:

- बपतिस्मा
- तलाक और पुनर्विवाह
- भविष्य में होने वाली बातों की रूपरेखा
- उद्धार के लिए चुनाव और मनुष्य का उत्तरदायित्व
- विश्वासियों के उद्धार की सुरक्षा
- कलीसिया में स्त्री की भूमिका
- आत्मा के वरदान

यद्यपि इनमें से प्रत्येक विषय की एक ही सही व्याख्या है, सभी विश्वासी एकमत नहीं हो पाते कि वह सही व्याख्या क्या है। बड़े से बड़े और परमेश्वर का भय मानने वाले मसीही एक ही दृष्टि से नहीं देखते। जॉन वेसली और चार्ल्स स्पर्जन के बीच भी असहमतियाँ थीं। इन क्षेत्रों में प्रत्येक विश्वासी का यह कर्तव्य है कि वह सिर्फ परमेश्वर के वचन को ही अपनी धारणा का दृढ़ आधार बनाए।

गैर–अनिवार्य या नैतिक अन्तरों से जुड़े विषय

तीसरे वर्ग में ऐसे विषय आते हैं जिन्हें बाइबल गैर–अनिवार्य समझती है। इन्हें नैतिक अन्तरों से जुड़े विषय भी कहा जाता है। इन क्षेत्रों में, प्रभु आपस में विश्वासियों के विचारों में अन्तरों की अनुमति इस हद तक देता है कि किसी एक के व्यवहार से दूसरे को ठोकर न पहुँचे (रोमि. 14:13), कलीसिया की शान्ति भंग न हो (रोमि. 14:19), या कोई अपने विवेक का उल्लंघन न करे (रोमि. 14:23)।

कलीसिया के आरम्भिक दिनों में, मूरतों के सामने बलिदान की गई वस्तुओं को खाने, यहूदी धार्मिक कैलेण्डर के विशेष पर्वों व दिनों का पालन करने, और शुद्ध व अशुद्ध भोजन खाने के सम्बन्ध में समस्या उभर कर सामने आ रही थी। बाइबल के आधार पर इसका समाधान संक्षेप में यह हो सकता है:

मूरतों के आगे बलिदान की गई वस्तु

मूरतों के आगे बलिदान की गई वस्तुओं के विषय में, 1 कुरिन्थियों 8:1–13 और 1 कुरिन्थियों 10:14–30 प्रमुख पद हैं। इन स्थलों की शिक्षा का सार यह है कि ऐसे भोजनों को खाना उचित हो सकता है बशर्ते हम ऐसे भोज के सहभागी नहीं बन रहे हैं जहाँ भोजन मूरतों के आगे बलिदान चढ़ाया जाता है, बशर्ते हमारा विवेक इस विषय में हमें दोषी नहीं ठहराता, और बशर्ते हमारे खाने से किसी दूसरे व्यक्ति को ठोकर न लगे। परन्तु जब पौलुस यह कहता है, ''सब बातें मेरे लिए उचित तो हैं,'' तो हमें यह समझना आवश्यक है कि वह अपवाद की सम्भावना को नकार नहीं रहा है। वह यह बात सिर्फ विषय के सन्दर्भ में कह रहा है – नैतिक अन्तरों से सम्बन्धित विषय। यदि हम इस बात की ओर ध्यान नहीं दे पा रहे हैं, तो शायद हम ऐसी भयानक व्याख्या कर बैठेंगे जिसे पौलुस अनैतिकता कहकर उसकी निन्दा करता है!

दिनों व पर्वों के विषय में

रोमियों की पत्री के अध्याय 14 में पर्वों को मनाने, मांस खाने (सिर्फ साग–पात खाने पर

जोर दिए जाने के प्रकाश में), और दाखरस पीने के विषय में चर्चा की गई है। पौलुस द्वारा दिए गए मार्गदर्शनों में से एक यह है: ''हर एक अपने ही मन में निश्चय कर ले'' (5ब)। यदि हम सन्दर्भ से हट कर इसकी व्याख्या करते हैं और इसे बाइबल की प्रेरणा या अनुग्रह से उद्धार जैसे सिद्धान्तों पर लागू करते हैं, तो हम गम्भीर कठिनाई में पड़ जाएंगे। यह आवश्यक है कि रोमियों 14 में दिए गए सिद्धान्तों को हम सिर्फ उन विषयों पर लागू करें जो अपने आप में स्पष्टनहीं हैं।

शुद्ध और अशुद्ध भोजन

तीतुस 1 में, पौलुस ने उन झूठे शिक्षकों के सम्बन्ध में विशेष रूप से चर्चा की गई जो मसीही विश्वासियों को मूसा की व्यवस्था के आधीन लाने का प्रयास कर रहे थे। पद 15 में, प्रेरित कहता है: ''शुद्ध लोगों के लिए सब वस्तुएं शुद्ध हैं, पर अशुद्ध और अविश्वासियों के लिए कुछ भी शुद्ध नहीं, वरन उनकी बुद्धि और विवेक दोनों अशुद्ध हैं।''

इसलिए यह स्पष्ट हो जाना चाहिए जब पौलुस यह कहता है, ''शुद्ध लोगों के लिए सब वस्तुएं शुद्ध हैं'' कि वह सब बातों में लागू होने वाली सच्चाई नहीं, परन्तु सिर्फ उन बातों में लागू होने वाली सच्चाई के विषय में कह रहा है जिन्हें मूसा की व्यवस्था में अशुद्ध ठहराया गया है। अनुग्रह के इस समय में एक मसीही के लिए मनुष्य के खाने के लिए उपलब्ध कराई गई सभी वस्तुएं शुद्ध हैं। ''कोशेर'' (यहूदी व्यवस्था के अनुसार तैयार किया जाने वाला भोजन) और ''गैरकोशेर'' जैसे शब्द अब किसी काम के नहीं।

रोमियों 14 :14 के इस कथन को इसी अर्थ में समझने की आवश्यकता है: ''मैं जानता हूँ और प्रभु यीशु में मुझे निश्चय हुआ है कि कोई वस्तु अपने आप से अशुद्ध नहीं, परन्तु जो उसको अशुद्ध समझता है उसके लिए अशुद्ध है।'' पौलुस और साथ ही साथ हम भी अच्छी तरह से यह जानते हैं कि कुछ वस्तुएं अशुद्ध होती हैं, परन्तु यहाँ पर वह सिर्फ सूअर, झींगी, या खरगोश जैसे भोजनों के विषय में कह रहा है जो पुराना नियम की व्यवस्था के अनुसार अशुद्ध माने जाते थे।

वर्तमान की गैर–अनिवार्य बातें

यद्यपि कुछ विश्वासी निम्नलिखित में से कुछ विषयों पर काफी जोर देते हैं, परन्तु इन में से किसी भी विषय पर पवित्रशास्त्र में सीधे–सीधे जोर नहीं दिया गया है। वर्तमान की गैर–अनिवार्य बातों में निम्नलिखित को शामिल किया जा सकता है:

- प्रभु भोज में दाखरस *(वाइन)* लें या अंगूर का रस।
- अखमीरी रोटी लें या खमीर वाली रोटी।

- आराधना सभाओं का समय क्या हो?
- कलीसिया की सभाओं में वाद्ययंत्रों का प्रयोग?
- कुछ खास माने जाने वाले बाइबल के पदों का प्रयोग?
- परमेश्वर को सम्बोधित करते समय *आप* या *तू* का प्रयोग?
- मसीही आराधना करने के तरीके।

सूची के अन्तिम विषय के सम्बन्ध में, अर्थात्, आराधना करने की विधि के सम्बन्ध में, लोगों की संस्कृति और परम्पराओं को भी कुछ स्थान दिया जा सकता है। इसलिए 1 कुरिन्थियों 9:19–23 में पौलुस बताता है कि वह किस प्रकार से अपने श्रोताओं को अपनेपन का अहसास दिलाता था, और साथ ही साथ, यह ध्यान भी रखता था कि वह किसी बुनियादी सच्चाई को इसके लिए बलि न बनाए और न ही मसीह के प्रति अपनी निष्ठा के विरुद्ध कोई समझौता करे।

क्योंकि सब से स्वतंत्र होने पर भी मैं ने अपने आप को सब का दास बना दिया है कि अधिक लोगों को खींच लाऊँ। मैं यहूदियों के लिए यहूदी बना कि यहूदियों को खींच लाऊँ। जो लोग व्यवस्था के आधीन हैं उसके लिए मैं व्यवस्था के आधीन न होने पर भी व्यवस्था के आधीन बना कि उन्हें जो व्यवस्था के अधीन हैं, खींच लाऊँ। व्यवस्थाहीनों के लिए मैं – जो परमेश्वर की व्यवस्था से हीन नहीं परन्तु व्यवस्था के अधीन हूँ – व्यवस्थाहीन सा बना कि व्यवस्थाहीनों को खींच लाऊँ। मैं निर्बलों के लिए निर्बल सा बना कि निर्बलों को खींच लाऊँ। मैं सब मनुष्यों के लिए सब कुछ बना कि किसी न किसी रीति से कई एक का उद्धार कराऊं। मैं यह सब कुछ सुसमाचार के लिए करता हूँ कि औरों के साथ उसका भागी हो जाऊँ।

परन्तु जब पौलुस यह कहता है, ''मैं सब मनुष्यों के लिए सब कुछ बना कि किसी न किसी रीति से कई एक का उद्धार कराऊँ'' तो यहाँ कहीं से भी इसका अर्थ यह नहीं निकाला जा सकता कि उसने सुसमाचार की सच्चाई के विरुद्ध कोई समझौता किया या किसी पापमय गतिविधि का हिस्सा बना। जहाँ कहीं सच्चाई का त्याग किए बिना ही कोई छूट दिए जाने की बात थी (जैसे तीमुथियुस का खतना, प्रेरित 16:3), वहाँ उसने छूट दिया ताकि उसके सन्देश को सुनने वालों की संख्या अधिक होती जाए। परन्तु जहाँ कहीं इस सच्चाई को दांव पर लगाने की परीक्षा आई कि व्यवस्था का पालन किए बिना ही अनुग्रह से उद्धार मिलता है (जैसा कि तीतुस के खतना के सम्बन्ध में विवाद हुआ था, गला. 2:1–5), पौलुस एक इंच भी इस सच्चाई से नहीं हिला।

सारांश

आइये इस विषय पर अब तक जो कुछ हमने अध्ययन किया है उसे सारांश में देखें। परमेश्वर के बुनियादी और न बदलने वाले नैतिक नियमों के विषय में, हमें इनसे पूरी तरह से सहमत होना है और पूरी तरह से इनका पालन करना है।

पवित्रशास्त्र में जिन विषयों को महत्वपूर्ण बताया गया है, भले ही उन्हें आधारभूत न समझा गया हो, उनके सम्बन्ध में प्रत्येक विश्वासी को चाहिए कि वह अपना निर्णय और अपना व्यवहार पवित्रशास्त्र के अधिक से अधिक पास आ कर आधारित करे।

गैर–अनिवार्य बातों के सम्बन्ध में, हमें अलग–अलग विचारों के प्रति हमें एक हद तक सहनशीलता दर्शाना चाहिए, एकता और शान्ति को कायम रखने के लिए एक हद तक कुछ लेने और कुछ देने के लिए तैयार रहना चाहिए (इफि. 4:1–6)। परन्तु इस मामले में भी एक मसीही को किसी भी प्रकार की बुराई से दूर रहना चाहिए, किसी भाई के लिए ठोकर का कारण बनने से बचना चाहिए, और अपने विवेक का उल्लंघन नहीं करना चाहिए।

जब हम बुनियादी और महत्वपूर्ण विषयों पर चर्चा करते हैं, तो कुछ बुनियादी सिद्धान्त यहाँ लागू होते हैं। परन्तु जब हम नैतिक समानता की बात करते हैं, तो यहाँ पूरी तरह से अलग सिद्धान्त लागू होते हैं। इसलिए, मसीह के ईश्वरत्व के विषय में बात करते हुए, पौलुस यह कह कर अलग–अलग विचारों की अनुमति नहीं दे सकता, ''हर एक अपने ही मन में निश्चय कर ले'' (रोमि. 14:5ब)। या यदि वह अनैतिकता के विषय पर चर्चा कर रहा है, तो वह यह नहीं कहेगा, ''मैं जानता हूँ और प्रभु यीशु में मुझे निश्चय हुआ है कि कोई वस्तु अपने आप से अशुद्ध नहीं, परन्तु जो उसको अशुद्ध समझता है उसके लिए अशुद्ध है'' (रोमि. 14:14)। हमें यह पहचान करने की आवश्यकता है कि हम आधारभूत विषय पर चर्चा कर रहे हैं, महत्वपूर्ण सच्चाईयों पर, या फिर सतही विषयों पर।

भाग 3
परमेश्वर की कार्यप्रणाली सम्बन्धी कुछ अन्तर

अध्याय 14

विभिन्न समय–खण्ड

चर्च फादर अगस्टीन ने एक बार कहा था, ''अलग–अलग समय–खण्डों की पहचान करें और पवित्रशास्त्र के सारे विरोधाभास दूर करें।'' परमेश्वर ने मानव इतिहास को अलग अलग समय–खण्डों में विभाजित किया है: ''उसी के द्वारा उसने सारे युगों की सृष्टि की'' (इब्रा. 1:2, *इएसवी मार्जिन*)। ये समय–खण्ड लम्बे या छोटे हो सकते हैं। उनकी विशेषता और उनके बीच के अन्तर उनकी लम्बाई में नहीं, बल्कि उस समय–खण्ड में मनुष्य के साथ परमेश्वर के व्यवहार करने के तरीके में है।

काल–खण्ड *(डिसपेन्सेशन)* की परिभाषा

यद्यपि परमेश्वर कभी नहीं बदलता, वह अपने तरीकों में बदलाव लाता है। वह भिन्न–भिन्न समयों में भिन्न–भिन्न तरीकों से कार्य करता है। मनुष्य के प्रति परमेश्वर किसी विशेष समय–खण्ड में जिस तरीके से अपने कार्यों और गतिविधियों को रूप देता है उसे अंग्रेजी में कभी–कभी *डिसपेन्सेशन* नाम दिया जाता है। तकनीकी रूप से, डिसपेन्सेशन का अर्थ समय–खण्ड नहीं, बल्कि प्रशासन, भण्डारीपन, व्यवस्था, या अर्थव्यवस्था होता है। परन्तु हमारे लिए यह कठिन है कि हम *डिसपेन्सेशन* को समय से अलग कर के सोचें। उदाहरण के लिए, संयुक्त राज्य अमरीका का इतिहास अलग–अलग प्रशासनों में विभाजित है। हम रोसवेल्ट प्रशासन, ऐसनहोवर प्रशासन, या रीगन प्रशासन के रूप में इसे जानते हैं। नि:सन्देह, हमारा आशय उस तरीके से होता है जिस तरीके से उन राष्ट्रपतियों के कार्यकाल में सरकार चलाई गई। इस दौरान लागू की गई नीतियों का ही प्रमुख महत्व होता है, परन्तु हम उन नीतियों को अनिवार्यत: उन समय–खण्डों से जोड़ कर पहचानते हैं जिस दौरान ये नीतियाँ लागू की गई थीं।

कालखण्ड *(डिसपेन्सेशन)* के उदाहरण

इसलिए, इस अध्याय में हम कालखण्ड को एक तरीके के रूप में समझेंगे जिस तरीके से परमेश्वर ने इतिहास के अवधि–विशेष में अपने लोगों के साथ व्यवहार किया था। परमेश्वर के इस प्रकार के व्यवहार की तुलना उस तरीके से की जा सकती है जिस तरीके से एक परिवार को चलाया जाता है। जब परिवार में सिर्फ पति–पत्नी हों, तो किसी एक योजना के अनुसार परिवार चलाया जाता है। परन्तु जब परिवार में छोटे बच्चे आ जाते हैं, तो परिवार बिल्कुल अलग योजना और नई नीतियों के अनुसार चलाया जाता है। जब बच्चे परिपक्व हो

जाते हैं, तो परिवार की गतिविधियों को फिर से अलग तरीके से संचालित किया जाता है। यही बात मानवजाति के प्रति परमेश्वर के व्यवहार में भी देखी जा सकती है गला. 4:1–5।

उदाहरण के लिए, जब कैन ने अपने भाई हाबिल को मार डाला, तो परमेश्वर ने कैन के माथे पर एक चिन्ह दे दिया, ताकि कोई उसे पा कर मार न डाले (उत्प. 4:15)। तौभी जलप्रलय के बाद परमेश्वर ने मृत्युदण्ड की स्थापना की, और यह ठहराया कि ''जो कोई मनुष्य का लोहू बहाएगा उसका लोहू मनुष्य ही से बहाया जाएगा''(उत्प. 9:6अ)। यहाँ पर ऐसा अन्तर क्यों है? क्योंकि यहाँ पर काल–खण्ड में परिवर्तन है।

दूसरा उदाहरण, भजन 137:8–9 में लेखक ने बाबुल को कठोर दण्ड दिए जाने की कामना की है:

हे बाबुल तू जो उजाड़नेवाली है, क्या ही धन्य वह होगा, जो तुझ से ऐसा ही बर्ताव करेगा, जैसा तू ने हम से किया है। क्या ही धन्य वह होगा, जो तेरे बच्चों को पकड़कर, चट्टान पर पटक देगा।

तौभी बाद में हमारे प्रभु ने अपने लोगों को यह सिखाया,

परन्तु मैं तुमसे यह कहता हूँ कि अपने बैरियों से प्रेम रखो और अपने सतानेवालों के लिए प्रार्थना करो (मत्ती 5:44)।

यह स्पष्ट है कि व्यवस्था के आधीन रहने वाले भजनकार के मुँह से उपयुक्त लगने वाली भाषा अनुग्रह के आधीन रहने वाले एक मसीही के मुँह से अब अच्छी नहीं लगेगी।

व्यवस्था के आधीन, इस्राएल के पुरुषों को यह आज्ञा दी गई थी कि वे अपने अन्यजाति पत्नियों और बच्चों को त्याग दें (एज्रा 10:3)। अनुग्रह के आधीन, विश्वासियों को कहा गया है कि वे अविश्वासी जीवनसाथी या बच्चों को न त्यागें (1 कुरि. 7:12–16)।

कालखण्ड का प्रदर्शन

मसीहियों के बीच कालखण्ड की संख्या या उन्हें दिए गए नामों के सम्बन्ध में सहमति नहीं है। बल्कि, कुछ मसीही ऐसे हैं जो कालखण्ड की बात पर विश्वास ही नहीं करते।

परन्तु हम कालखण्ड के अस्तित्व को इस तरह से प्रदर्शित कर सकते हैं। सबसे पहली बात, कम से कम दो कालखण्ड निश्चित रूप से हैं – व्यवस्था और अनुग्रह: ''इसलिए कि व्यवस्था तो मूसा के द्वारा दी गई, परन्तु अनुग्रह और सच्चाई यीशु मसीह के द्वारा पहुँची'' (यूहन्ना 1:17)। यह सच्चाई कि हमारी बाइबल पुराना नियम और नया नियम के रूप में दो भागों में विभाजित की गई है, यह दर्शाती है कि परमेश्वर की प्रशासन–व्यवस्था में एक परिवर्तन आया था। एक और प्रमाण इस सच्चाई में मिलता है कि इस समय के विश्वासियों

को पशुओं का बलिदान चढ़ाने की आवश्यकता नहीं है; इससे भी यह स्पष्ट होता है कि परमेश्वर ने एक नए क्रम या नयी व्यवस्था का आरम्भ किया है।

परन्तु यदि हम इस बात से सहमत हैं कि कम से कम दो कालखण्ड निश्चित रूप से हैं, तो हम यह विश्वास करने के लिए भी बाध्य हो जाएंगे कि कालखण्ड तीन हैं, क्योंकि व्यवस्था का समय–खण्ड सृष्टि के सैकड़ों वर्ष बाद, निर्गमन 19 तक आरम्भ नहीं हुआ था। इसलिए अवश्य ही व्यवस्था दिए जाने से पहले कम से कम एक समय–खण्ड रहा होगा (रोमि. 5:14)। इस तरह से कालखण्ड की संख्या अब तीन हो गई।

और फिर हमें एक चौथे काल–खण्ड के लिए सहमत हो जाना चाहिए क्योंकि पवित्रशास्त्र एक ''आनेवाले युग'' की बारे में कहता है (इब्रा. 6:5)। यह वह समय होगा जब प्रभु यीशु मसीह पृथ्वी पर राज्य करने के लिए लौटेगा, इस समय–खण्ड को हजार वर्ष का राज्य भी कहा जाता है।

पौलुस प्रेरित भी वर्तमान समय और आने वाले समय के बीच में अन्तर बताता है। पहले वह उस समय–खण्ड की बात करता है जो उसे सुसमाचार और कलीसिया के सत्य के सम्बन्ध में सौंपा गया था (1 कुरि. 9:17; इफि. 3:2; कुलु. 1:25)। यह वर्तमान समय के लिए कहा गया है। परन्तु वह आने वाले समय की ओर भी संकेत करता है जब, इफिसियों 1:10 में, वह ''समयों के पूरा होने का ऐसा प्रबन्ध'' के बारे में कहता है। उसके द्वारा इस सम्बन्ध में किए गए विवरण से स्पष्ट है कि यह समय अभी नहीं आया है।

इसलिए हम जानते हैं कि इस समय हम संसार के इतिहास के अन्तिम युग में नहीं जी रहे हैं।

कालखण्डों के विवरण (नाम)

1. निर्दोषिता (उत्प. 1:28)। आदम की सृष्टि से मनुष्य के पाप में गिरने तक।
2. विवेक या नैतिक उत्तरदायित्व (उत्प. 3:7, 22)। पाप में गिरने से लेकर जलप्रलय के अन्त तक।
3. मानव प्रशासन (उत्प. 9:5–6)। जलप्रलय के अन्त से अब्राहम की बुलाहट तक।
4. प्रतिज्ञा (उत्प. 12:1–3)। अब्राहम की बुलाहट से व्यवस्था दिए जाने तक।
5. व्यवस्था (निर्ग. 19–20)। व्यवस्था दिए जाने से पिन्तेकुस्त के दिन तक।
6. कलीसिया (प्रेरित 2)। पिन्तेकुस्त के दिन से कलीसिया के बादलों पर उठाए जाने तक।
7. राज्य (प्रका. 20:4)। मसीह के हजार वर्ष का राज्य।

ए.इ. बूथ ने अपने चार्ट, *''द कोर्स ऑफ टाइम फ्रॉम इटरनिटी टू इटरनिटी''* में, उत्पत्ति के सात दिनों में मानव इतिहास के सात काल–खण्डों की छाया को दिखाया है:

- पहला दिन – सृष्टि और प्रतिज्ञा के प्रकाश में मनुष्य का परखा जाना।
- दूसरा दिन – प्रशासन (जल प्रलय से लेकर जातियों के विभाजन तक)।
- तीसरा दिन – इस्राएल (अब्राहम से लेकर सुसमाचारों के अन्त तक)।
- चौथा दिन – अनुग्रह (बीच में डाली गई एक अवधि)।
- पाँचवा दिन – क्लेशकाल।
- छठवाँ दिन – हजार वर्ष का राज्य।
- सातवाँ दिन – अनन्तकाल।

कालखण्ड का महत्व

यद्यपि एक–एक विवरण पर पूरी तरह से सहमत होना महत्वपूर्ण नहीं है, परन्तु यह देख पाना महत्वपूर्ण है कि अलग–अलग काल–खण्डों का अस्तित्व है। (व्यवस्था और अनुग्रह के कालखण्ड के बीच में अन्तर करना विशेष रूप से महत्वपूर्ण है)। अन्यथा हम पवित्रशास्त्र के किसी दूसरे कालखण्ड पर लागू होने वाले स्थल को लेकर अपने कालखण्ड पर लागू कर बैठेंगे। यद्यपि सम्पूर्ण पवित्रशास्त्र हमारे लिए लाभदायक है (2 तीमु. 3:16), अनेक भाग सीधे–सीधे हमारे लिए नहीं लिखे गए हैं। अन्य समयों से सम्बन्धित स्थलों में हमारे लिए भी शिक्षा पाई जाती है, परन्तु उनकी प्राथमिक व्याख्या उस समय–खण्ड के लिए है जिसके लिए ये लिखे गए थे। उदाहरण के लिए, व्यवस्था के आधीन रहने वाले यहूदियों को किसी भी अशुद्ध पशु का माँस खाने से मना किया गया था, अर्थात्, ऐसे पशुओं का जिनके खुर चिरे व फटे न हों, और जो पागुर न करते हों (लैव्य. 11:3)। यह मनाही वर्तमान में मसीहियों पर लागू नहीं होती (मरकुस 7:18–19), परन्तु इस मनाही में निहित सिद्धान्त कायम है कि हमें नैतिक और आत्मिक अशुद्धता से दूर रहना है।

परमेश्वर ने इस्राएल के लोगों से प्रतिज्ञा की थी कि यदि वे उसकी आज्ञा का पालन करेंगे, तो वह उन्हें भौतिक रूप से समृद्ध बनाएगा (व्य.वि. 28:1–6)। उस समय पृथ्वी के स्थानों में भौतिक आशीषें देने की प्रतिज्ञा की गई थी। परन्तु यह बात वर्तमान में लागू नहीं होती। परमेश्वर यह प्रतिज्ञा नहीं करता कि वह हमारी आज्ञाकारिता के प्रतिफल के रूप में हमें आर्थिक समृद्धि देगा। बल्कि, इस समय–खण्ड की आशीषें स्वर्गीय स्थानों की आत्मिक आशीषें हैं (इफि. 1:3)।

सब समय–खण्डों के लिए एक सुसमाचार

यद्यपि विभिन्न समय–खण्डों के बीच अन्तर पाए जाते हैं, एक ऐसी चीज़ है जो कभी बदलती नहीं, और वह है, सुसमाचार। उद्धार हमेशा से ही प्रभु पर विश्वास लाने के द्वारा ही मिलता रहा है, मिलता है, और मिलता रहेगा। और हर समय उद्धार का आधार मसीह के द्वारा क्रूस पर पूर्ण किया गया कार्य ही रहा है। पुराना नियम के लोगों का उद्धार उन्हें प्रभु द्वारा दिए गए प्रकाशन पर विश्वास किए जाने के द्वारा दिया गया। उदाहरण के लिए, अब्राहम को परमेश्वर की इस बात पर विश्वास करने के लिए मिला कि अब्राहम का वंश तारों के समान अनगिनत होगा (उत्प. 15:5–6)। इसलिए हमारा यह समझना है कि, अब्राहम यदि कुछ नहीं तो, अधिक भी नहीं जानता था कि सैकड़ों वर्ष बाद कलवरी में क्या होने वाला था। परन्तु परमेश्वर यह जानता था। और जब अब्राहम ने परमेश्वर पर भरोसा किया, तो कलवरी पर मसीह के द्वारा भविष्य में पूर्ण किए जाने वाले सारे कार्य के मूल्य को परमेश्वर ने अब्राहम के खाते में जोड़ दिया।

किसी ने कहा है कि पुराना नियम के विश्वासियों को ''उधार लेकर'' उद्धार दिया गया। अर्थात्, उन्हें उस मोल के आधार पर उद्धार दिया गया जिसे मसीह सैकड़ों वर्ष बाद चुकाने वाला था (रोमि. 3:25 का अर्थ यही है)। हम मसीह के द्वारा (आज से लगभग) 1984 वर्ष पूर्व पूर्ण किए गए कार्य के आधार पर उद्धार पाते हैं (मसीह का क्रूसीकरण लगभग 32 ईसवी में)। परन्तु दोनों ही स्थितियों में उद्धार विश्वास के द्वारा ही मिलता है।

हमें किसी भी ऐसे विचार से सावधान रहना है कि व्यवस्था के समय–खण्ड के लोगों को उद्धार उनके द्वारा व्यवस्था का पालन करने या पशु का बलिदान चढ़ाने के द्वारा मिलता था। व्यवस्था सिर्फ दोषी ठहरा सकती है; यह उद्धार नहीं दे सकती (रोमि. 3:20)। और बैलों और बकरों का लोहू एक भी पाप दूर नहीं कर सकता (इब्रा. 10:4)। नहीं! परमेश्वर द्वारा उद्धार का एक ही मार्ग तय किया गया है, और वह है विश्वास और सिर्फ विश्वास (रोमि. 5:1)।

एक अन्य महत्वपूर्ण बात जिसे हमें ध्यान में रखना आवश्यक है, वह यह है: जब हम वर्तमान समय–खण्ड को अनुग्रह का समय–खण्ड कहते हैं, तो इसका अर्थ यह नहीं है कि परमेश्वर पिछले समय–खण्डों में अनुग्रहकारी नहीं था। इसका अर्थ सिर्फ यह है कि मनुष्य को अब परमेश्वर व्यवस्था नहीं, बल्कि अनुग्रह के आधीन रख कर परख रहा है। इस अन्तर को आगे के अध्याय में और विस्तार से स्पष्ट किया जाएगा।

यह भी ध्यान रखना महत्वपूर्ण है कि समय–खण्ड एक ही क्षण में बदल नहीं जाता। अक्सर दो समय–खण्ड एक दूसरे को एक अंश तक ढांप लेते हैं या एक समय–खण्ड के

जाते–जाते कुछ समय पहले से ही अगला समय–खण्ड आरम्भ हो जाता है। इसका उदाहरण हम प्रेरितों के काम की पुस्तक में देख सकते हैं; नई कलीसिया को कुछ समय लगा कि वह पिछले समय–खण्ड की कुछ जंजीरों को उतार फेंके। और यह सम्भव है कि कलीसिया को बादलों पर उठाए जाने और क्लेशकाल के बीच में एक समय–खण्ड होगा जिसमें पाप का मनुष्य प्रगट होगा और यरुशलेम में मन्दिर बनाया जाएगा।

समय–खण्ड की शिक्षा का दुरुपयोग

एक अन्तिम बात, सभी अच्छी बातों के समान, समय–खण्ड के विषय में अध्ययन का भी दुरुपयोग किया जा सकता है। कुछ मसीही लोग समय–खण्ड की शिक्षा के प्रति इतना अतिवादी रवैया अपनाते हैं कि वे पौलुस द्वारा सिर्फ जेल से लिखी गई पत्रियों को ही वर्तमान कलीसिया पर लागू करते हैं! इसके परिणामस्वरूप वे बपतिस्मा और प्रभु भोज की शिक्षाओं को नहीं मानते क्योंकि इनके विषय में जेल से लिखी गई पत्रियों में कोई शिक्षा नहीं दी गई है। वे यह भी सिखाते हैं कि पतरस का सुसमाचार और पौलुस का सुसमाचार अलग अलग था। (इसका खण्डन गला. 1:8–9 में देखें।) ऐसे लोगों को कभी– कभी अति–समयखण्डवादी (अल्ट्रा–डिस्पेन्सेशनलिस्ट्स) या बुलिंगराइट्स (इ.डब्ल्यू. बुलिंगर नामक एक शिक्षक के कारण) नाम दिया जाता है। समय–खण्ड के प्रति उनके अतिवादी विचार नकारे जाने के योग्य हैं।

अध्याय 15

पवित्रशास्त्र में पाई जाने वाली प्रमुख वाचाएं

मानव इतिहास में समय समय पर, परमेश्वर ने मनुष्यजाति के साथ वाचाएं बान्धी। उनमें से कुछ वाचाएं, जैसे व्यवस्था, सशर्त वाचाएं थीं। परमेश्वर अपनी भूमिका पूरी करेगा यदि उसके लोग अपनी भूमिका पूरी करेंगे। सशर्त वाचाएं ''शरीर के कारण दुर्बल'' थीं और मनुष्य शर्तों को पूरी करने में लगातार असफल रहे।

यह अच्छी बात है, कि ईश्वरीय वाचाओं में से अधिकांश वाचाएं नि:शर्त वाचाएं थीं। इन वाचाओं में सब कुछ परमेश्वर पर निर्भर करता है, और इस कारण इनका पूर्ण होना सुनिश्चित है।

अधिकांश वाचाएं अब्राहम और उसकी सन्तानों से बान्धी गई। इस्राएल के संबंध में) कोई भी वाचा सीधे–सीधे कलीसिया से नहीं बांधी गई, यद्यपि कुछ वाचाओं में कलीसिया शामिल है, जैसा कि हम आगे देखेंगे।

अदन (उत्प. 1:28–30; 2:16,17)

अदन की वाचा में मनुष्य को उसकी निर्दोष अवस्था में फूलने–फलने, पृथ्वी में भर जाने, और उसे वश में कर लेने की जिम्मेदारी दी गई थी। उसे सब प्राणियों पर अधिकार दिया गया था। उसे बगीचे में कार्य कर उसमें उत्पन्न होने वाली सब चीज़ों को, सिवाय भले बुरे के ज्ञान के वृक्ष के फल, खाने को दिया गया था। इस अन्तिम आज्ञा का उल्लंघन किए जाने पर मृत्युदण्ड का प्रावधान रखा गया था। इसलिए यह एक सशर्त वाचा थी।

आदम (उत्प. 3:14–29)

मनुष्य के पतन के बाद, परमेश्वर ने सर्प को शाप दिया और स्त्री व सर्प, और मसीह और शैतान के बीच में शत्रुता की भविष्यद्वाणी की। शैतान मसीह को चोट पहुँचाएगा, परन्तु मसीह शैतान को नाश कर देगा। स्त्री को बच्चा जनने के समय पीड़ा होगी और वह अपने पति के आधीन रहेगी। भूमि को शाप दिया गया: मनुष्य उसमें परिश्रम करेगा परन्तु उँटकटारे ही पाएगा। वह भूमि पर कार्य करने पर थकेगा और उसका पसीना बहेगा, और अन्तत: उसका शरीर मिट्टी में मिल जाएगा जिससे कि यह आया है।

नूह (उत्प. 8:20–9:27)

परमेश्वर ने नूह से प्रतिज्ञा की कि वह भूमि को फिर से शाप नहीं देगा और न ही पृथ्वी को जलप्रलय से फिर नाश करेगा, उसने इसका बयाना के रूप में मेघधनुष को ठहराया। इस वाचा में हत्या के दोषी को मृत्युदण्ड दिए जाने की सजा ठहराई गई, और इस आधार पर यह माना जाता है कि एक सरकार होगी जो मामले की सुनवाई कर दोषी को दण्ड की सजा सुनाएगी और क्रियान्वित करेगी। इसलिए वास्तविक अर्थों में, नूह की वाचा में मानवीय प्रशासन की स्थापना की गई। परमेश्वर ने आश्वस्त किया कि मौसमों और समयों का एक नियमित अन्तराल होगा, उसने मनुष्य को निर्देश दिया कि वह पृथ्वी को लोगों से फिर से भर दे, और उसके आधीन के प्राणियों पर फिर से उसे प्रभुता दी। मनुष्य अब अपने शाकाहारी भोजन में माँस को शामिल कर सकता था। नूह के वंश में, परमेश्वर ने हाम के पुत्र कनान को शाप दिया[1] कि वह शेम और येपेत का दास होगा। उसने शेम को एक विशेष अनुग्रह प्रदान किया, जिसके विषय में हम यह जानते हैं कि मसीह उसी के वंश से आया। येपेत को इतना अधिक बढ़ जाने की आशीष दी गई कि वह शेम के तम्बुओं में वास करे। नूह के साथ बान्धी गई वाचा नि:शर्त थी और कभी रद्द नहीं की गई। यह ''युग युग की पीढ़ियों'' के लिए है (उत्प. 9:12)।

अब्राहम (उत्प. 12:1–3; 13:14–17; 15:1–5; 17:1–8)

इस वाचा में अब्राम से, जो बाद में अब्राहम कहलाया, निम्नलिखित प्रतिज्ञाएं की गईं हैं: एक महान जाति (इस्राएल): अब्राहम को व्यक्तिगत आशीष: एक बड़ा नाम, दूसरों के लिए आशीष का मूल (12:2)। अपने मित्रों के लिए ईश्वर का अनुग्रह और उसके शत्रुओं के लिए शाप; सब जातियों के लिए आशीष (मसीह में यह प्रतिज्ञा पूरी हुई) (12:3)। कनान, जिसे बाद में इस्राएल और पलस्तीन के नाम से जाना गया, में सदा तक भू–अधिकार (15:18)। अनगिनत सन्तान, प्राकृतिक और आत्मिक दोनों (13:16; 15:5)। बहुत सी जातियों का पिता और राजा (इश्माएल और इसहाक के द्वारा) (17:4,6)। परमेश्वर के साथ विशिष्ठ सम्बन्ध (17:7ब)।

व्यवस्था, जिसे मूसा की वाचा भी कहा गया (निर्ग.19:5; 20–31)

अपने व्यापक अर्थ में, मूसा की व्यवस्था में निम्नलिखित शामिल हैं: दस आज्ञाएं जिसमें परमेश्वर और मनुष्यों के प्रति कर्तव्यों का वर्णन किया गया है (निर्ग. 20); इस्राएल के सामाजिक जीवन के सम्बन्ध में अनेक नियम (निर्ग. 21:1–24:11) और धार्मिक जीवन से सम्बन्धित विस्तारपूर्वक विवरण (निर्ग. 24:12–31:18)। यह इस्राएली जाति को दिया

गया था, अन्यजातियों को नहीं, और लोहू के द्वारा इसकी पुष्टि की गई थी (निर्ग. 24:8; इब्रा. 9:19–20)। यह एक सशर्त वाचा थी, जिसमें मनुष्य की आज्ञाकारिता की मांग की गई थी, और इसलिए यह ''शरीर के कारण निर्बल'' थी (रोमियों 8:3अ)। दस आज्ञाएं उद्धार देने के उद्देश्य से बिल्कुल नहीं, बल्कि पाप और चूक का बोध कराने के लिए दी गई थीं (रोमि. 3:20ब)। दस में से नौ आज्ञाओं को नया नियम में दोहराया गया है (सब्त के विषय आज्ञा को छोड़ कर), एक ऐसी व्यवस्था के रूप में नहीं जिसके साथ दण्ड जुड़ा हुआ था, परन्तु अनुग्रह से उद्धार पाए हुओं के योग्य चालचलन के रूप में। मसीही विश्वासी अनुग्रह के आधीन है, व्यवस्था के आधीन नहीं, परन्तु वह मसीह की व्यवस्था के आधीन है (1 कुरि. 9:21), जो तुलना में बहुत ऊँचा नियंत्रण है)। व्यवस्था ने अब्राहम की वाचा को समाप्त नहीं कर दिया (गला. 3:17–18)।

पलस्तीन (व्य.वि. 28:1; 29:1–30:20)

यह वाचा उत्पत्ति 15:18 में अपने बीजरूप में पाई जाती है, जहाँ परमेश्वर ने अब्राहम को ''मिस्र के महानद (नील नदी नहीं) से लेकर फरात नाम बड़े नद तक'' तक के देशों को देने की प्रतिज्ञा की थी। यहाँ पर इस्राएल की अनाज्ञाकारिता और अविश्वासयोग्यता के कारण अलग–अलग राष्ट्रों में उसके तितर–बितर हो जाने, प्रभु के दूसरे आगमन पर प्रभु की ओर लौटने, उनके मन–फिराव व परिवर्तन, उनके शत्रुओं को दण्ड, और मसीह के राज्य में देश में सुरक्षित वास करने के विषय में भविष्यद्वाणी की गई है।

इस्राएल कभी भी इस देश पर पूरा अधिकार नहीं कर पाया है। सुलैमान के राज्य के दौरान, पूर्वी देशों द्वारा उसके पास भेंट (कर/नज़राना) लाया जाता था (1 राजा 4:21,24), परन्तु इसे अधिकार या वश में करना नहीं माना जा सकता। पलस्तीन की वाचा का पूरा होना अभी भी बाकी है।

दाऊद (1 शमू. 7:1–17)

परमेश्वर ने दाऊद से यह प्रतिज्ञा की कि उसका राज्य न सिर्फ सदा तक बना रहेगा, बल्कि उस पर उसके ही सन्तान बैठेंगे (2 शमू. 7:12–16)। यह एक नि:शर्त वाचा थी, जो दाऊद की आज्ञाकारिता या धार्मिकता पर निर्भर नहीं करती थी। मसीह दाऊद के सिंहासन का वैधानिक वारिस है, यह रेखा सुलैमान से होते हुए जाती है, जो कि मत्ती 1 में यूसुफ की वंशावली में देखा जा सकता है। यूसुफ ने यीशु को अपने पुत्र के रूप में गोद दिया था। मसीह नातान से होकर दाऊद के वंश का है, जैसा कि लूका 3 में मरियम की वंशावली में देखा जा सकता है। इसलिए कि मसीह सदा जीवित है, उसके सिंहासन का और कोई दूसरा दावेदार

नहीं हो सकता। उसका राज्य अनन्त है। एक हजार वर्ष के उसके राज्य का विलय अनन्त राज्य में हो जाएगा।

सुलैमान (1 शमू. 7:12–15; 1 राजा 9; 2 इति. 7)

जहाँ तक अनन्त राज्य की बात है, सुलैमान से बान्धी गई वाचा नि:शर्त थी, परन्तु उसके सन्तानों के सिंहासन पर बैठने के सम्बन्ध में यह वाचा सशर्त थी (1 राजा 9:4–5; 2 इति. 7:17–18)। सुलैमान के वंशजों में से एक, कोन्याह (जिसे यकोन्याह और यहोयाकीन नाम से भी जाना जाता है), के किसी भी शारीरिक वंशज पर दाऊद के सिंहासन पर बैठने से रोक लगा दी गई थी (यिर्म. 22:30)। जैसा कि हमने देखा, कि प्रभु यीशु सुलैमान का वंशज नहीं है। अन्यथा वह कोन्याह को दिए गए शाप के आधीन आ जाता।

नयी वाचा (यिर्म. 31:31–34; इब्रा. 8:7–12; लूका 22:20)

नयी वाचा स्पष्ट रूप से इस्राएल के घराने और यहूदा के घराने के साथ बान्धी गई है (यिर्म. 31:31) और इसने पुरानी (मूसा की) वाचा का स्थान ले लिया है। इस वाचा का याजकपद बेहतर याजकपद है, इसका याजक एक बेहतर याजक है, इस वाचा का बलिदान और इसकी वेदी पुरानी वाचा के बलिदानों और वेदी से बेहतर है, और यह बेहतर प्रतिज्ञाओं पर आधारित है (इब्रा. 7:9; 13:10)। जब यिर्मयाह ने इसके विषय में लिखा था तब यह भविष्य की एक बात थी (यिर्म. 31:31अ)। यह एक सशर्त वाचा नहीं है, जैसा कि मूसा की वाचा थी, जिसे इस्राएल ने तोड़ दिया था (यिर्म. 31:32)। इस वाचा में परमेश्वर ने नि:शर्त प्रतिज्ञाएं की हैं (''मैं . . . करुंगा'' के दोहराव की ओर ध्यान दें): इस्राएल का भविष्य में नया जन्म होना (यहे. 36:25–26); पवित्र आत्मा का वास (यहे. 36:27); एक ऐसा हृदय दिया जाना जो परमेश्वर की इच्छा पूरी करने वाला हृदय है (यिर्म. 31:33अ); इस्राएल में सबको परमेश्वर की व्यवस्था का ज्ञान (यिर्म. 31:34अ); पापों की क्षमा और उन्हें भूला दिया जाना (यिर्म. 31:34ब); तथा एक जाति के रूप में सदा बने रहना (यिर्म. 31:35–37)।

एक जाति के रूप में इस्राएल ने अब तक नई वाचा की आशीषों का लाभ प्राप्त नहीं किया है, परन्तु प्रभु के दूसरे आगमन पर वह इन्हें प्राप्त करेगा। इस दौरान, सच्चे विश्वासी अवश्य ही वाचा की कुछ आशीषों के भागी बनते हैं। वे पापों की क्षमा और उनके पापों को भूला दिए जाने की आशीष का आनन्द उठाते हैं (इब्रा. 10:16–17) और वे व्यवस्था की धर्मी मांगों को पूरा करने के लिए सामर्थ प्राप्त करते हैं (रोमि. 8:4)। यह तथ्य कि कलीसिया का सम्बन्ध नयी वाचा से है, इस प्रभु–भोज में देखा जा सकता है, जहाँ कटोरा उस वाचा और लोहू को दर्शाता है जिसके द्वारा यह वाचा दृढ़ की गई (लूका 22:20; 1 कुरि. 11:25)।[2]

पौलुस ने भी स्वयं को और अन्य प्रेरितों को ''नई वाचा के सेवक'' ठहराया (2 कुरि. 3:6), यहाँ पर उसके अनुसार नयी वाचा का अर्थ परमेश्वर के अनुग्रह का सुसमाचार था।

अन्त्य टिप्पणी

1. शाप सामान्यत: उस व्यक्ति के पिता की ओर बढ़ जाता था जिसे शाप दिया गया हो, क्योंकि यह समझा जाता था कि अपने पुत्र के पालन–पोषण के लिए वही जिम्मेदार था। आर्थर कुसटेंस ने लिखा है: ''. . . नूह अपने पुत्र हाम को, जो वास्तविक दोषी था, कोई शाप नहीं दे सका, उसके लिए यह सम्भव नहीं था कि वह अपने आप को दोष से मुक्त रखते हुए उसे शाप दे, क्योंकि समाज उसके पुत्र के आचरण के लिए उसे जिम्मेदारी ठहराता'' (नोहास थ्री सन्स, पृ. 195)। ए.डब्ल्यू. पिंक ने टिप्पणी की है: ''हाम का पाप यह था कि वह अपने पिता का आदर करने में बुरी तरह से असफल हो गया . . .। और इसके भयावह परिणाम की ओर ध्यान दें: उसने वही काटा जो उसने बोया था – हाम ने एक पुत्र के रूप में पाप किया और उसके पुत्र में उसे दण्ड दिया गया (*ग्लिनिंग्स इन जेनेसिस,* पृ. 124, *ऑथर्स इटेलिक्स*''।

2. जे.एन. डार्बी ने ध्यान दिलाया है कि कलीसिया नयी वाचा के मध्यस्थ को व्यक्तिगत रूप से जानती है, यह बात इस वाचा के प्राथमिक विषय होने से भी बेहतर है।

अध्याय 16

इस्राएल, अन्यजाति, और कलीसिया

नया नियम सारी मानवजाति को तीन श्रेणियों में बांटता है: इस्राएल, अन्यजाति (गैर यूहदी), और कलीसिया। उदाहरण के लिए, पौलुस 1 कुरिन्थियों 10:32 में कहता है, ''तुम न यहूदियों, न यूनानियों, और न परमेश्वर की कलीसिया के लिये ठोकर के कारण बनो।'' यहाँ पर ''यूनानियों'' शब्द ''अन्यजातियों'' का समानार्थी है।

प्रेरित 15:14–17 में मानवजाति के इन तीन वर्गों का उल्लेख फिर से किया गया है:

कलीसिया

*''परमेश्वर ने पहिले पहल अन्यजातियों पर कैसी कृपादृष्टि की कि उनमें से **अपने नाम के लिए एक लोग** बना ले''* (पद 14, अतिरिक्त जोर)।

इस्राएल

*''इसके बाद मैं फिर आकर **दाऊद का** गिरा हुआ **डेरा** उठाऊँगा, और उसके खंडहरों को फिर बनाऊँगा, और उसे खड़ा करूँगा''*(पद 16, अतिरिक्त जोर)।

अन्यजाति

*''इसलिए कि शेष मनुष्य, अर्थात्, **सब अन्यजाति** जो मेरे नाम के कहलाते हैं, प्रभु को ढूँढ़ें''* (पद 17 पद अतिरिक्त जोर)।

पौलुस प्रेरित ने भी इनकी अलग–अलग विशेषता बताते हुए इनके बीच में अन्तर किया है:

- यहूदी – हाथों से खतना (इफि. 2:11)।
- अन्यजाति – खतनारहित (इफि. 2:11)।
- कलीसिया – खतना जो हाथों से नहीं हुआ (कुलु. 2:11)।

सामान्यत:, बाइबल के अध्ययन करते समय हम अन्यजाति और इस्राएल या कलीसिया के बीच के अन्तर को पहचान लेते हैं; यहाँ पर कोई समस्या नहीं है। इसलिए इस अध्याय में हम अपने आप को इस्राएल और कलीसिया के बीच के अन्तर को पहचानने तक सीमित

रखेंगे। यह अत्यंत महत्वपूर्ण है। जब तक हम यह समझ नहीं पाते कि ये दोनों समूह अलग–अलग हैं और इनकी अलग–अलग विशेषताएं हैं, तब तक बाइबल की हमारी व्याख्या बुरी तरह से प्रभावित होती रहेगी, विशेष कर, कलीसिया से सम्बन्धित सत्य शिक्षाओं और भविष्यद्वाणियों के विषयों में।

यह दर्शाने के लिए, कि यह विषय क्यों महत्वपूर्ण है, यह उल्लेख करना आवश्यक है कि कुछ लोग यह शिक्षा देते हैं कि कलीसिया और कुछ नहीं बल्कि इस्राएल का ही एक विस्तार है। वे कहते हैं, ''परमेश्वर की कलीसिया हमेशा से ही अस्तित्व में रही है। इस्राएल पुराना नियम समय की कलीसिया थी, परन्तु जब (इस्राएली) लोगों ने मसीह का इंकार कर दिया, तो परमेश्वर ने उन्हें हमेशा के लिए त्याग दिया। भविष्य में जाति के रूप में इस्राएल के लिए अब कोई आशा नहीं है। नया नियम कलीसिया अब परमेश्वर का इस्राएल बन चुकी है, और इस्राएल को दी गई सारी प्रतिज्ञाएं अब आत्मिक भाव से कलीसिया में पूर्ण होती हैं।''

परन्तु हमारा विश्वास यह है कि पवित्रशास्त्र की शिक्षा अलग है: यह कि इस्राएल और कलीसिया अपने आरम्भ, अपने आचरण, अपने कर्तव्य, और अपने लक्ष्य में अलग–अलग हैं।

जब इस्राएल ने प्रभु यीशु को अपना मसीह मानने से इंकार कर दिया, परमेश्वर ने कुछ समय के लिए इस जाति को एक किनारे कर दिया। उसके बाद परमेश्वर ने एक बिल्कुल नयी चीज़ – कलीसिया, का आरम्भ किया। जब इस संसार में कलीसिया के लिए परमेश्वर की योजना पूरी हो जाएगी, तो वह इस्राएली जाति के साथ फिर से अपना कार्य जारी करेगा। इसलिए परमेश्वर और उसकी पुरानी जाति इस्राएल के सम्बन्धों में अवरोध उत्पन्न होने के कारण अवरोध की इस अवधि के लिए बीच में कलीसिया को लाया गया है।

कलीसिया और इस्राएल के बीच के अन्तर और उनकी अलग–अलग विशेषताओं को निम्नलिखित तुलनाओं में देखा जा सकता है:

कलीसिया	इस्राएल
1. पौलुस के अनुसार कलीसिया एक भेद है, ''जो और समयों में मनुष्यों की सन्तानों को ऐसा नहीं बताया गया था, जैसा कि आत्मा के द्वारा अब उसके पवित्र प्रेरितों और भविष्यद्वक्ताओं पर प्रगट किया गया है'' (इफि. 3:5)। वह कहता है कि यह भेद जगत की उत्पत्ति के पहले से ही परमेश्वर में छिपा हुआ था (इफि. 3:9) और जगत की	1. इस्राएल को कभी भी एक भेद के रूप में नहीं बताया गया है। पहले खण्ड में दिया गया कोई भी वर्णन इस्राएल पर लागू नहीं होता।

कलीसिया	इस्राएल
उत्पत्ति तक इसे गुप्त रखा गया था, परन्तु अब यह भविष्यद्वक्ताओं के द्वारा पवित्रशास्त्र में प्रगट किया गया है (रोमि. 16:25-26)। (कुलु. 1:25-26)।	
2. कलीसिया का आरम्भ पिन्तेकुस्त के दिन हुआ जब पवित्र आत्मा दिया गया (प्रेरित 2)। हम तथ्यों की निम्नलिखित श्रृंखला के आधार पर इस निष्कर्ष पर पहुँचते हैं:	2. इस्राएली जाति का आरम्भ अब्राम की बुलाहट के साथ हुआ था (उत्प. 12)।
अ. जब मसीह इस पृथ्वी पर था उस समय कलीसिया भविष्य का एक विषय था, क्योंकि उसने कहा था, ''मैं . . . अपनी कलीसिया बनाऊंगा (भविष्यकाल)'' (मत्ती 16:18)।	
ब. जब पौलुस ने कुरिन्थ की कलीसिया को अपनी पहली पत्री लिखी, स्पष्ट है कि तब कलीसिया अस्तित्व में आ चुकी थी। वह कहता है कि विश्वासियों को आत्मा के द्वारा मसीह की देह में बपतिस्मा दिया गया (1 कुरि. 12:13)।	
स. हम जानते हैं कि आत्मा के बपतिस्मा की प्रतिज्ञा पिन्तेकुस्त के दिन पूरी हुई। इसलिए, यह कलीसिया का पहला जन्म दिन था।	
3. मसीह कलीसिया का सिर है।	3. इस्राएल का मुखिया अब्राहम था।
4. कलीसिया की सदस्यता आत्मिक जन्म के द्वारा प्राप्त होती है।	4. इस्राएल की सदस्यता शारीरिक जन्म के द्वारा प्राप्त होती थी।
5. कलीसिया परमेश्वर की स्वर्गीय प्रजा है। कलीसिया को दी जाने वाली आशीषें स्वर्गीय स्थानों की आत्मिक आशीषें हैं।	5. इस्राएल इस पृथ्वी पर परमेश्वर की चुनी हुई जाति थी। इस्राएल को दी जाने वाली आशीषें, यदि पूरी तरह से नहीं तो प्राथमिक

कलीसिया	इस्राएल
	रूप से, पृथ्वी पर की भौतिक आशीषें थी।
मसीहियों की नागरिकता स्वर्गीय है।	इस्राएलियों की नागरिकता पृथ्वी पर की थी।
कलीसिया की आशा यह है कि वह स्वर्ग में मसीह के साथ रहेगी।	इस्राएल के सामने प्राथमिक आशा यह थी उस भूमि पर सांसारिक राज्य स्थापित करेगा (यह इस तथ्य का इंकार नहीं करता कि विश्वास करने वाले यहूदी स्वर्ग को गए, या वे स्वर्ग की आशा करते थे।)
6. कलीसिया में, विश्वास करने वाले यहूदी और विश्वास करने वाले अन्यजाति मसीह में एक नया मनुष्य बनते हैं। वे सुसमाचार के द्वारा मसीह में संगी वारिस, देह के संगी अंग, और प्रतिज्ञा के संगी भागी बनते हैं।	6. इस्राएल पर इन में से कोई भी बात लागू नहीं होती। जहाँ तक इस्राएल की बात है, अन्यजाति ''मसीह से अलग और इस्राएल की प्रजा के पद से अलग किए हुए, और प्रतिज्ञा की वाचाओं के भागी न थे, और जगत में ईश्वररहित थे'' (इफि. 2:12)
7. कलीसिया में, सभी विश्वासी याजक हैं – पवित्र याजक, और राजपदधारी याजक। इस हैसियत से वे कभी भी विश्वास के द्वारा परमेश्वर की उपस्थिति तक पहुँच सकते हैं (1 पत. 2:1–9; इब्रा. 10:19–22)।	7. इस्राएल में, याजकों को लेवी के गोत्र और हारून के घराने से चुना जाता था। सिर्फ महायाजक ही परमेश्वर की उपस्थिति में, वर्ष में एक ही बार, प्रवेश कर सकता था (इब्रा. 7:5, 11; 9:7)।
8. बादलों पर मसीह से मिलन के लिए उठा लिए जाने के समय कलीसिया स्वर्ग में अपने घर ले जाई जाएगी, और फिर मसीह के साथ लौट कर हजार वर्ष के राज्य में उसके साथ शासन करेगी।	8. छुटकारा प्राप्त इस्राएल मसीह के राज्य के समय उसकी पृथ्वी पर की प्रजा होगी।

कलीसिया और इस्राएल के बीच में और भी बहुत से अन्तरों को देखा जा सकता है। लुइस स्पेरी शेफर ने अपनी पुस्तक *सिस्टमेटिक थियोलॉजी* (पृष्ठ 47–53) के चौथे संस्करण में चौबीस अचूक अन्तरों की सूची प्रस्तुत की है। परन्तु हम कुछ ही अन्तरों को आपके सामने रख रहे हैं और ये यह दर्शाने के लिए पर्याप्त है कि कलीसिया परमेश्वर की योजनाओं और उद्देश्यों में एक विशिष्ठ स्थान रखती है और हमें यह ध्यान रखना आवश्यक है कि हम कलीसिया और इस्राएल को एक ही समझने की भूल न करें।

पवित्रशास्त्र का एक ऐसा स्थल जिसमें अक्सर कलीसिया और इस्राएल को एक ही समझ लिए जाने की भूल सबसे अधिक होती है वह है मत्ती 23:37–25:46 में पाया जाने वाला जैतून पर्वत का उपदेश। यह स्थल इस्राएल से सम्बन्धित है – कलीसिया से नहीं। इसमें राजा के रूप में राज्य करने के लिए मसीह के आगमन से पहले और उस समय की परिस्थितियों का वर्णन किया गया है। ध्यान दें कि 24:16 में यह लिखा है, ''तब जो यहूदिया में हों वे पहाड़ों पर भाग जाएँ'' – स्पष्ट रूप से इसमें उल्लेखित स्थान एक यहूदी स्थान है। और पद 20 में यह लिखा है, ''प्रार्थना किया करो कि तुम्हें जाड़े में या सब्त के दिन भागना न पड़े।'' सब्त का दिन कभी भी कलीसिया के लिए नहीं ठहराया गया है – यह सिर्फ इस्राएल के लिए है। पद 22 में जिन चुने हुए लोगों का उल्लेख किया गया है वे परमेश्वर के द्वारा चुने गए यहूदी हैं। पद 30 में मसीह के जिस आगमन की बात बताई गई है वह कलीसिया को लेने के उद्देश्य से बादलों पर उसके आगमन के विषय में नहीं, परन्तु पृथ्वी पर इस्राएल के राजा के रूप में आगमन के विषय में है।

इसलिए बाइबल के विद्यार्थियों को यह समझना आवश्यक है कि कौन सा स्थल इस्राएल से सम्बन्धित है, और कौन सा कलीसिया से। यदि आप किसी स्थल में प्रभु के दिन के विषय में पढ़ रहें हैं, तो निश्चय ही वह स्थल प्राथमिक रूप से इस्राएल पर लागू होगा। दूसरी ओर, यदि आप मसीह के दिन से सम्बन्धित स्थलों को पढ़ रहें हैं, तो निश्चय ही यह स्थल कलीसिया पर लागू होगा। इसलिए प्रकाशितवाक्य का 11वाँ अध्याय इस्राएल के सम्बन्ध में है, क्योंकि यह प्रभु के दिन का हिस्सा है। परन्तु 1 कुरिन्थियों 15:52 की ''अन्तिम तुरही'' कलीसिया के सम्बन्ध में है, क्योंकि यह कलीसिया को बादलों पर मसीह से मिलने के लिए उठाए जाने का विषय है, और यह मसीह के दिन से सम्बन्धित है।

अन्त में, हमें उन दो तर्कों पर कुछ ध्यान देने की आवश्यकता है जिनका प्रयोग (कव्हनेंट थियोलॉजियन्स के द्वारा) यह दर्शाने के लिए सामान्यत: किया जाता है कि इस्राएल और कलीसिया अलग–अलग नहीं हैं।

1. प्रेरित 7:38 *(अंग्रेजी के किंग जेम्स वर्ज़न में)*, इस्राएल को ''जंगल में कलीसिया'' (चर्च इन द विल्डरनेस) कहा गया है। परन्तु हमें यह ध्यान देना आवश्यक है कि जिस यूनानी शब्द *(इक्लेसिया)* का अनुवाद हिन्दी में ''कलीसिया'' (अंग्रेजी में चर्च) किया जाता है, सामान्यत: उसका अर्थ 'एक सभा' या 'लोगों का एक समूह' होता है। *न्यू किंग जेम्स वर्ज़न* में इसका अनुवाद ''*कॉन्ग्रिगेशन*'' (मण्डली, समूह) किया गया है और इस शब्द का प्रयोग अब भी यहूदियों के द्वारा किया जाता है, यह अनुवाद इस सच्चाई को अधिक स्पष्ट करता है। इसी मूल शब्द (इक्लेसिया) का प्रयोग इफिसुस की अन्यजाति भीड़ (प्रेरित 19:32) के लिए भी किया गया है। नया नियम की कलीसिया को इस रूप में पहचाना गया है कि यह

परमेश्वर पिता और प्रभु यीशु मसीह से सम्बन्धित है।

2. **गलातियों 6:16** में, पौलुस कहता है, ''जितने इस नियम पर चलेंगे उन पर, और परमेश्वर के इस्राएल पर शान्ति और दया होती रहे।'' ''परमेश्वर के इस्राएल'' का प्रयोग यह जोर देने के लिए किया जाता है कि वर्तमान में सारे विश्वासी मिलकर ''परमेश्वर का इस्राएल'' बनाते हैं। परन्तु हमारा मानना है कि यह एक गलत समझ है। जब पौलुस कहता है, ''उन पर . . . शान्ति . . . होती रहे,'' तो यह वह सभी विश्वासियों के लिए कह रहा है। परन्तु ''परमेश्वर के इस्राएल'' कहते हुए पौलुस जन्म से यहूदी उन विश्वासियों को गिनता है जो नई सृष्टि के नियम के अनुसार चलते हैं (पद 15), व्यवस्था के अनुसार नहीं। यहाँ पर *अंग्रेजी बाइबल के न्यू इन्टरनेशनल वर्ज़न* में *यूनानी शब्द* ''*काइ*'' के सामान्य अनुवाद *''और''* के स्थान पर *''परमेश्वर के इस्राएल भी''* का प्रयोग व्याकरण की दृष्टि से असम्भव है, साथ ही इससे यह भी प्रगट होता है कि इस अनुवाद के कुछ प्रमुख सम्पादक सहस्राब्दिक (हजार वर्ष के) राज्य की शिक्षा पर विश्वास नहीं करते। यह दुखद अनुवाद इस्राएल को उसे दी गई सारी प्रतिज्ञाओं से वंचित बताता है और कलीसिया को ''नया इस्राएल'' बना देता है।

अध्याय 17

व्यवस्था और अनुग्रह

व्यवस्था और अनुग्रह दो विपरीत तरीके हैं जिससे परमेश्वर मनुष्यजाति के साथ व्यवहार करता है। हम इन्हें ऐसे असमान सिद्धान्त कह सकते हैं जिसके आधीन परमेश्वर मनुष्य को परखता है। या हम उन्हें परमेश्वर के द्वारा अपने लोगों के साथ बान्धी गई दो वाचाओं के रूप में समझ सकते हैं: ''इसलिए कि व्यवस्था तो मूसा के द्वारा दी गई, परन्तु अनुग्रह और सच्चाई यीशु मसीह के द्वारा पहुँची'' (यूह. 1:17)।

व्यवस्था के सिद्धान्त के आधीन, एक व्यक्ति वही पाता है जो वह कमाता है या जिसके वह लायक है। अनुग्रह के आधीन वह उस दण्ड से बचाया जाता है जिसके वह लायक है और वर्णन से बाहर आशीषों और बहुतायतों से भर दिया जाता है – सब कुछ एक सेंतमेंत भेंट के रूप में। इन दोनों सिद्धान्तों का वर्णन रोमियों 4:4–5 में किया गया है:

काम करने वाले की मजदूरी देना दान नहीं, परन्तु हक्क समझा जाता है। परन्तु जो काम नहीं करता वरन भक्तिहीन के धर्मी ठहरानेवाले पर विश्वास करता है, उसका विश्वास उसके लिए धार्मिकता गिना जाता है।

अनुग्रह और व्यवस्था आपस में कभी एक दूसरे के साथ नहीं हो सकते; अर्थात्, इन दोनों का मिश्रण सम्भव नहीं है। ''यदि यह अनुग्रह से हुआ है, तो फिर कर्मों से नहीं; नहीं तो अनुग्रह फिर अनुग्रह नहीं रहा'' (रोमियों 11:6अ)।

व्यवस्था एक सशर्त वाचा है: परमेश्वर कहता है, ''यदि तुम इसका पालन करोगे, तो मैं तुम्हें इसका प्रतिफल दूंगा, परन्तु यदि तुम इसका पालन नहीं करोगे, तो मैं तुम्हें अवश्य ही दण्ड दूंगा।'' अनुग्रह एक नि:शर्त वाचा है: परमेश्वर कहता है, ''मैं तुम्हें सेतमेंत आशीष दूंगा।''

व्यवस्था कहती है, ''करो,'' जबकि अनुग्रह कहता है, ''विश्वास करो।'' परन्तु विश्वास करना एक शर्त नहीं है; यह सृष्टि की ओर से अपने सृष्टिकर्ता के प्रति सिर्फ एक स्वाभाविक प्रतिक्रिया है। और इसका श्रेय हमें नहीं जाता; कोई भी इस बात पर घमण्ड नहीं कर सकता कि उसने प्रभु पर विश्वास किया। एक व्यक्ति मूर्ख ही होगा यदि वह विश्व के एकमात्र और पूर्णत: विश्वसनीय व्यक्ति पर विश्वास न करे।

व्यवस्था के आधीन, पवित्रता की मांग की जाती है परन्तु पवित्र जीवन जीने की सामर्थ नहीं दी जाती है। अनुग्रह के आधीन, पवित्र बनना सिखाया जाता है (तीतुस 2:11–12) और इसके लिए आवश्यक सामर्थ भी दी जाती है। किसी ने इसे इस तरह से कहा है:

''व्यवस्था उस व्यक्ति से सामर्थ की अपेक्षा रखती है जिसके पास कोई सामर्थ नहीं है और उसे शाप देती है यदि वह यह सामर्थ प्रगट न कर सके। अनुग्रह उस व्यक्ति को सामर्थ प्रदान करता है जिसके पास कोई सामर्थ नहीं है और इस सामर्थ का प्रयोग किए जाने पर उसे आशीष देता है।''

व्यवस्था एक शाप लाती है, ''जो कोई व्यवस्था की पुस्तक में लिखी हुई सब बातों के करने में स्थिर नहीं रहता, वह शापित है'' (गला. 3:10ब)। अनुग्रह एक आशीष लाती है: ''परन्तु उसके अनुग्रह से उस छुटकारे के द्वारा जो मसीह यीशु में है, सेंतमेंत धर्मी ठहराए जाते हैं'' (रोमियों 3:24)।

व्यवस्था के आधीन आडम्बर को बढ़ावा दिया जाता है, परन्तु अनुग्रह इसे पूरी तरह से खारिज कर देता है। ''तो घमण्ड करना कहाँ रहा? उसकी तो जगह ही नहीं। कौन सी व्यवस्था के कारण से? क्या कर्मों की व्यवस्था से? नहीं, वरन विश्वास की व्यवस्था के कारण से'' (रोमि. 3:27, *आरएसवी*)।

व्यवस्था के आधीन उद्धार का कोई आश्वासन सम्भव नहीं है; हम यह कभी जान नहीं पाएंगे कि हमने पर्याप्त अच्छे काम – या सही तरीके के अच्छे काम – कर लिए या नहीं। अनुग्रह के आधीन उद्धार का पूर्ण आश्वासन है क्योंकि उद्धार एक भेंट है; जब हम किसी भेंट को प्राप्त कर लेते हैं तो हम जान लेते हैं कि यह हमें मिल चुका है!

व्यवस्था के आधीन एक व्यक्ति को उद्धार की सच्ची सुरक्षा नहीं मिल सकती क्योंकि वह कभी भी सुनिश्चित नहीं हो पाएगा और वह व्यवस्था की मांगों को पूरी करना जारी रखेगा। अनुग्रह के आधीन विश्वासी अनन्त सुरक्षा का आनन्द उठाता है (यूह. 10:27–29) क्योंकि उसका उद्धार मसीह के सिद्ध कार्य पर निर्भर करता है।

व्यवस्था के द्वारा उद्धार नहीं हो सकता। परमेश्वर ने कभी भी यह नहीं चाहा कि कोई व्यवस्था के द्वारा उद्धार पाए। व्यवस्था का उद्देश्य व्यक्ति के सामने यह प्रगट करना है कि वह पापी है। ''व्यवस्था के द्वारा पाप की पहचान होती है'' (रोमि. 3:20ब) – उद्धार की नहीं।

उद्धार अनुग्रह के द्वारा प्राप्त होता है (इफि. 2:8–9)। यह परमेश्वर के द्वारा दी जाने वाली सेंतमेंत भेंट है जिसे पाने के लायक कोई नहीं है और यह उन लोगों को दी जाती है जो प्रभु यीशु मसीह को स्वर्ग की एकमात्र आशा के रूप में ग्रहण करते हैं।

व्यवस्था पाप को उकसाती है (रोमि. 7:8–13); अनुग्रह के आधीन पाप की अवहेलना की जाती है। जब एक पापी मनुष्य को व्यवस्था के आधार पर परखा जाता है जो वह तुरन्त ही वह कार्य करने की इच्छा करता है जिस कार्य को करने से मना किया गया है। यह

व्यवस्था की त्रुटि नहीं है, परन्तु मनुष्य के स्वभाव में निहित पाप की प्रतिक्रिया है। अनुग्रह के आधीन, पाप की अवहेलना की जाती है। जब हम यह स्मरण करते हैं कि पाप के लिए उद्धारकर्ता को क्या कीमत चुकानी पड़ी तब हम उनसे मन फेर लेते हैं।

व्यवस्था के आधीन कार्य कभी पूर्ण नहीं होता। इसी लिए सब्त, अर्थात्, सातवां दिन, सप्ताह भर के परिश्रम के अन्त में आता है। अनुग्रह हमें एक पूर्ण किए गए कार्य के विषय में बताता है, इसलिए हम अपने सप्ताह का आरम्भ प्रभु के दिन के साथ करते हैं, हमारा विश्राम दिन यही है।

व्यवस्था यह बताती है कि मनुष्य को क्या करना अनिवार्य है। अनुग्रह यह बताता है कि परमेश्वर मसीह में क्या कर चुका है।

व्यवस्था दासत्व की एक व्यवस्था है (गला. 4:1–3); अनुग्रह स्वतंत्रता की एक व्यवस्था है (गला. 5:1)। जो व्यवस्था के आधीन हैं वे दास हैं; जो अनुग्रह के आधीन हैं वे पुत्र और पुत्रियाँ हैं।

व्यवस्था कहती है, ''प्रेम रखो,'' परन्तु अनुग्रह कहता है, ''परमेश्वर ने . . . ऐसा प्रेम रखा।''

व्यवस्था कहती है, ''करो तो तुम जीवित रहोगे।'' अनुग्रह कहता है, ''जीवित रहो और तुम करोगे।''

व्यवस्था कहती है, ''प्रयत्न करो और आज्ञा का पालन करो,'' अनुग्रह कहता है, ''भरोसा रखो और आज्ञा का पालन करो।''

व्यवस्था अनिवार्य मांग रखती है, अनुग्रह दया दर्शाता है।

व्यवस्था पालन करने का विषय है। अनुग्रह हमें बनाए रखता है।

व्यवस्था एक व्यक्ति को सफाई का कोई मौका नहीं देती। अनुग्रह हमें एक अधिवक्ता देता है।

व्यवस्था के अनुसार बिगड़ा हुआ पुत्र नगर के बाहर ले जाया जा कर पत्थरवाह किया जाता था (व्य.वि. 21:18–21)। अनुग्रह के अनुसार एक ऊड़ाऊ पुत्र अपने पाप का अंगीकार कर अपने पिता के घराने की सहभागिता में वापस आ सकता है (लूका 15:21–24)।

व्यवस्था के अनुसार भेड़ अपने चरवाहे के लिए अपने प्राण देती है। अनुग्रह के अनुसार चरवाहा अपनी भेड़ के लिए अपने प्राण देता है (यूह. 10:11)।

अनुग्रह की उत्तमत्ता का वर्णन इस तरह से किया गया है: अनुग्रह ऐसे अच्छे लोगों को नहीं खोजता जो ग्रहणयोग्य हों, क्योंकि अच्छाई को ग्रहण करना अनुग्रह नहीं बल्कि न्याय

है; बल्कि अनुग्रह दोषी, अपराधी, असहाय, और बचावहीन लोगों को खोजता है जिन्हें वह उद्धार दे सके, उन्हें पवित्र बना सके, और महिमा प्रदान कर सके।

मार्टिन लूथर ने कहा है कि यदि आप अनुग्रह और व्यवस्था के बीच में अन्तर कर सकते हैं, तो परमेश्वर को अपनी इस प्रतिभा के लिए धन्यवाद करें और अपने आप को बाइबल का एक सक्षम विद्यार्थी जानें।

अध्याय 18

कलीसिया और परमेश्वर का (स्वर्ग का) राज्य

बहुत से अगुवों को यह जान कर आश्चर्य होगा कि कलीसिया और परमेश्वर का या स्वर्ग का राज्य दो अलग–अलग सच्चाइयाँ हैं। मसीही जगत में परमेश्वर के राज्य और कलीसिया को सामान्यत: समानार्थी समझा जाता है। परन्तु इन दोनों के बीच के अन्तर को पहचान पाने की चूक सैद्धान्तिक और व्यावहारिक दोनों ही क्षेत्रों में गम्भीर समस्याएं खड़ी कर देती हैं।

अध्याय सोलह में हमने कलीसिया के विषय पर थोड़ी चर्चा कर ली थी, इसलिए उन बातों को फिर से दोहराना आवश्यक नहीं है। यह ध्यान दिलाना पर्याप्त होगा कि कलीसिया एक अद्वितीय समाज है, और मानव के साथ परमेश्वर के अन्य व्यवहारों की तुलना में यह बिल्कुल अलग है। मसीह कलीसिया का सिर (मुखिया) है, और सभी विश्वासी इसके अंग हैं। जाति, सामाजिक प्रतिष्ठा, और लिंग के सारे भेद मसीह में मिटा दिए गए हैं; सब उसमें एक बन गए हैं। कलीसिया का आरम्भ पिन्तेकुस्त के दिन हुआ और इसकी पूर्णता उस समय होगी जब इसे बादलों पर मसीह से मिलने के लिए उठा लिया जाएगा। कलीसिया को मसीह की देह और दुल्हन कहा गया है, और इसे मसीह के राज्य में अनन्तकाल तक राज्य करने और इसकी महिमा में सहभागी होने के लिए ठहराया गया है।

परन्तु स्वर्ग का राज्य क्या है?

स्वर्ग का राज्य वह क्षेत्र है जहाँ परमेश्वर के शासन को स्वीकार किया जाता है। *स्वर्ग* शब्द का प्रयोग प्रतीकात्मक रूप से परमेश्वर के लिए किया गया है; यह बात दानिय्येल 4:25–26 में स्पष्ट रूप से दर्शायी गई है। पद 25 में, दानिय्येल ने कहा है कि मनुष्यों के राज्य में परमप्रधान ही राज्य करता है। अगले ही पद में वह कहता है कि प्रभु स्वर्ग में है, (मूल में, स्वर्ग में प्रभुता करता है)। इस तरह से, स्वर्ग का राज्य परमेश्वर के उस शासन की घोषणा करता है, जो हर उस स्थान में विद्यमान हैं जहाँ लोग उस शासन के आगे समर्पण करते हैं।

स्वर्ग के राज्य के दो पहलू हैं। इसका सबसे व्यापक विस्तार में प्रत्येक वह व्यक्ति शामिल है जो परमेश्वर को अपने सर्वोच्च प्रभु के रूप में मुँह से अंगीकार करता है। परन्तु इसके

भीतरी पहलू में सिर्फ वे ही लोग शामिल हैं जिन्होंने सचमुच में मन फिराया हो। हम इसे दो गोलों के एक चित्र की सहायता से समझ सकते हैं, जिसमें एक बड़े गोले के भीतर एक छोटा गोला है।

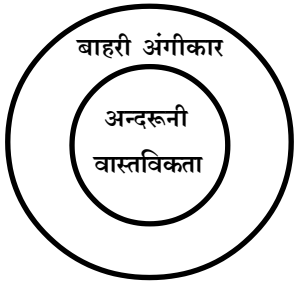

बड़ा गोला वह क्षेत्र है जिसमें मुँह से अंगीकार करने वाले लोग आते हैं; इसमें सच्चे और झूठे दोनों प्रकार के लोग हैं, गेहूँ का दाना और जंगली दाना दोनों। भीतरी गोले में सिर्फ वे ही लोग शामिल हैं जिन्होंने प्रभु यीशु मसीह पर विश्वास करने के द्वारा नया–जन्म प्राप्त किया है।

स्वर्ग के राज्य के सम्बन्ध में बाइबल में दिए गए स्थलों के बीच आपस में तुलना करने के द्वारा, हम पाँच अलग–अलग चरणों में इसके ऐतिहासिक विकास की एक रूपरेखा तैयार कर सकते हैं।

स्वर्ग के राज्य की भविष्यद्वाणी

सबसे पहला चरण, स्वर्ग के राज्य के विषय में भविष्यद्वाणी पुराना नियम में की गई थी। दानिय्येल ने यह भविष्यद्वाणी की थी कि परमेश्वर एक ऐसा राज्य स्थापित करेगा जो कभी नाश न होगा और जो कभी दूसरे लोगों के सामने अपनी प्रभुसत्ता का समर्पण नहीं करेगा (दानि. 2:44)। उसने मसीह के आगमन और उसके विश्वव्यापी अनन्त राज्य की भविष्यद्वाणी भी की थी (दानि. 7:13–14; यिर्म. 23:5–6)।

स्वर्ग के राज्य का निकट आना

दूसरा चरण, स्वर्ग के राज्य के विषय में यह वर्णन किया गया कि यह राजा के व्यक्तित्व में निकट आ गया है और वर्तमान में विद्यमान है। पहले यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाले, फिर यीशु, और फिर चेलों ने स्वर्ग के राज्य के निकट आने की घोषणा की (मत्ती 3:2; 4:17;

10:7)। प्रभु यीशु ने कहा, ''पर यदि मैं परमेश्वर के आत्मा की सहायता से दुष्टात्माओं को निकालता हूँ, तो परमेश्वर का राज्य तुम्हारे पास आ पहुँचा है'' (मत्ती 12:28)। एक अन्य अवसर पर, उसने कहा, ''परमेश्वर का राज्य तुम्हारे बीच में है'' (लूका 17:21)। स्वर्ग का राज्य इसलिए विद्यमान और वर्तमान था क्योंकि राजा का मंच पर आगमन हो चुका था। (यद्यपि अन्तिम दो पद स्थल स्वर्ग के राज्य नहीं, बल्कि परमेश्वर के राज्य से सम्बन्धित है, हम नीचे यह स्पष्ट करेंगे कि नया नियम में इन दोनों शब्दावलियों का प्रयोग परस्पर एक-दूसरे के लिए किया गया है।)

अन्तरिम राज्य

तीसरा चरण, स्वर्ग के राज्य का वर्णन एक अन्तरिम रूप में किया गया है। इस्राएली जाति के द्वारा ठुकरा दिए जाने के बाद, राजा स्वर्ग को लौट गया। स्वर्ग का राज्य वर्तमान में उन सब लोगों के हृदयों में विद्यमान है जो राजा की अनुपस्थिति में भी उसे शासन के आधीन समर्पण करते हैं, और इस राज्य के नैतिक मूल्य हम पर वर्तमान में लागू होते हैं। स्वर्ग के राज्य के अन्तरिम चरण का वर्णन मत्ती 13 में किया गया है।

स्वर्ग के राज्य का प्रगटीकरण

स्वर्ग के राज्य का चौथा चरण है, इसका प्रगटीकरण। यह पृथ्वी पर मसीह का हजार वर्ष का राज्य होगा, जिसे सहस्राब्दिक राज्य भी कहा जाता है। इसकी एक पूर्वझलक रूपान्तर के पर्वत पर दिखाई दी थी, जब प्रभु को उसके आने वाले राज्य की महिमा में देखा गया था (मत्ती 16:28)। प्रभु यीशु ने इस राज्य का उल्लेख किया था जब उसने यह कहा था, ''और मैं तुम से कहता हूँ कि पूर्व और पश्चिम से बहुत से लोग आ कर अब्राहम और इसहाक और याकूब के साथ स्वर्ग के राज्य में बैठेंगे'' (मत्ती 8:11)।

अनन्त राज्य

स्वर्ग के राज्य का चौथा और अन्तिम रूप होगा, अनन्त राज्य। इसे 2 पतरस 1:11 में, ''हमारे प्रभु और उद्धारकर्ता यीशु मसीह के अनन्त राज्य में बड़े आदर के साथ प्रवेश करने पाओगे'' कहा किया गया है।

स्वर्ग का राज्य और परमेश्वर का राज्य

''स्वर्ग का राज्य'' वाक्यांश का प्रयोग सिर्फ मत्ती के सुसमाचार में किया गया है। ''परमेश्वर का राज्य'' वाक्यांश का प्रयोग सभी चार सुसमाचारों में किया गया है। सभी

व्यावहारिक उद्देश्यों के लिए दोनों के बीच में कोई अन्तर नहीं है; दोनों के बारे में समान बातें कहीं गई हैं। मत्ती 19:23 में प्रभु यीशु ने यह कहा है कि स्वर्ग के राज्य में एक धनी व्यक्ति का प्रवेश कर पाना कठिन है। मरकुस 10:23 और लूका 18:23 में प्रभु यीशु ने यही बात परमेश्वर के राज्य के सम्बन्ध में कही है। मत्ती के स्थल में प्रभु यीशु ने परमेश्वर के राज्य के बारे में भी बिल्कुल वही बात कही है (मत्ती 19:23 और 19:24)।

अन्य स्थल जहाँ स्वर्ग के राज्य और परमेश्वर के राज्य का एक-दूसरे के सामानार्थी के रूप में प्रयोग किया गया है निम्नलिखित हैं:

मत्ती 4:17 की तुलना मरकुस 1:15 से कीजिए।

मत्ती 8:11 की तुलना लूका 13:19 से कीजिए।

मत्ती 10:7 की तुलना लूका 9:2 से कीजिए।

मत्ती 11:11 की तुलना लूका 7:28 से कीजिए।

मत्ती 13:11 की तुलना मरकुस 4:11 से कीजिए।

मत्ती 13:31 की तुलना मरकुस 4:30-31 और लूका 13:18 से कीजिए।

मत्ती 13:33 की तुलना लूका 13:20-21 से कीजिए।

मत्ती 19:14 की तुलना मरकुस 10:14 और लूका 18:16 से कीजिए।

हमने इस बात का उल्लेख किया है कि स्वर्ग के राज्य का एक बाहरी और एक भीतरी पहलू होता है। परमेश्वर के राज्य पर भी यही बात लागू होती है। इसे इस तरह से स्पष्ट किया जा सकता है:

स्वर्ग का राज्य	परमेश्वर का राज्य
इसके बाहरी पहलू में वे सभी शामिल हैं जो राजा की सच्ची प्रजा हैं, और वे भी जो सिर्फ मुँह से उसके प्रति निष्ठा का अंगीकार करते हैं। यह बात बीज बोने वाले के दृष्टान्त (मत्ती 13:3-11), राई के दाने के दृष्टान्त (मत्ती 13:31,32), और खमीर के दृष्टान्त (मत्ती 13:33) में देखी जा सकती है।	इसमें भी सच्चे और झूठे दोनों प्रकार शामिल हैं। इसे बीज बोने वाले के दृष्टान्त में (लूका .8:4-10), राई के दाने के दृष्टान्त (लूका 13:18-19), और खमीर के दृष्टान्त में देखा जा सकता है (लूका 13:20,21)।
इसकी सच्ची, भीतरी वास्तविकता में सिर्फ वे ही लोग प्रवेश कर सकते हैं जिन्होंने मन फिराया हो (मत्ती 18:3)।	इसकी सच्ची, भीतरी वास्तविकता में सिर्फ वे ही लोग प्रवेश कर सकते हैं जिन्होंने नया जन्म पाया हो (यूह. 3:3,5)।

पौलुस प्रेरित इस राज्य के भीतरी पहलू के विषय में बात कर रहा है जब वह कहता है, ''क्योंकि परमेश्वर का राज्य खाना–पीना नहीं, परन्तु धर्म और मेलमिलाप और वह आनन्द है जो पवित्र आत्मा से होता है'' (रोमि. 14:17)। उसने इस बात पर भी जोर दिया है कि ''क्योंकि परमेश्वर का राज्य बातों में नहीं, परन्तु सामर्थ में है'' (1 कुरि. 4:20)।

स्वर्ग का राज्य और कलीसिया

स्वर्ग के राज्य और कलीसिया के बीच के अन्तर को निम्नलिखित बातों में देखा जा सकता है: इस राज्य का आरम्भ उस समय हुआ जब मसीह ने अपनी सार्वजनिक सेवकाई आरम्भ की; कलीसिया का आरम्भ पिन्तेकुस्त के दिन हुआ (प्रेरित 2)। यह राज्य पृथ्वी पर तब तक बना रहेगा जब तक पृथ्वी नाश न कर दी जाएगी; कलीसिया पृथ्वी पर सिर्फ तब तक रहेगी जब तक उसे मसीह से मिलने के लिए बादलों पर उठा न लिया जाएगा; बाद में यह मसीह के साथ उसके दूसरे आगमन पर उसकी दुल्हन के रूप में उसके साथ राज्य करने को लौटेगी। वर्तमान समय में जो लोग स्वर्ग के राज्य के भीतरी व सच्चे रूप में हैं, वे कलीसिया में भी हैं; सिर्फ यही वह मुद्दा है जिसमें दोनों एक दूसरे के भीतर पाए जाते हैं।

भाग 4
भविष्य में घटने वाली घटनाओं सम्बन्धी कुछ अन्तर

अध्याय 19

मसीह के दो आगमन

पवित्रशास्त्र को समझने और इसका आनन्द उठाने के लिए, यह आवश्यक है कि उसके पहले और दूसरे आगमन के बीच के अन्तर को पहचान पाएं। निश्चय ही, पहला आगमन बैतलहम की चरणी में एक बालक के रूप में उसके जन्म को कहा गया है। दूसरा आगमन, उस समय की ओर संकेत करता है जब वह दोबारा लौटेगा। प्रथम आगमन मसीह के द्वारा सहे गए दु:खों से जुड़ा हुआ है जबकि द्वितीय आगमन आने वाली महिमा से (1 पतरस 1:11)।

इस अध्याय में हम मसीह के दूसरे आगमन को एक सामान्य रूप में प्रस्तुत करने वाले हैं, और हम सिर्फ इस सरल तथ्य को आपके सामने रखेंगे कि उद्धारकर्ता फिर से आने वाला है। अगले अध्याय में हम यह देखेंगे कि उसके द्वितीय आगमन के अनेक चरण हैं।

पुराना नियम के भविष्यद्वक्ताओं ने मसीह के आगमन की भविष्यद्वाणी की थी, परन्तु उन्होंने भविष्य की घटनाओं को जिन घटनाओं को पहले से देखा उसे देख कर वे स्पष्ट नहीं थे। परमेश्वर के आत्मा ने उन पर यह प्रगट किया कि मसीह (यूनानी में *ख्रिस्तुस*) दीनता और महिमा दोनों में ही आएगा। वह दु:ख उठाएगा, उसका लोहू बहाया जाएगा, और वह मर जाएगा, परन्तु वह अपने सारे शत्रुओं पर विजयी भी होगा। वे इन बातों के बीच में तालमेल नहीं बैठा पा रहे थे। उन्होंने सिर्फ यह स्पष्ट किया कि मसीह के दो आगमन होंगे, और दोनों आगमनों के बीच में 2000 वर्ष से भी अधिक का अन्तर होगा।

बाइबल में इन दो आगमनों को अक्सर एक साथ मिला दिया गया है, और बीच के अन्तराल का कोई उल्लेख नहीं किया गया है। यदि हम परिस्थितियों में तुरन्त-तुरन्त आने वाले इन परिवर्तनों को पहचान सकें, तो बाइबल अध्ययन में हमारा आनन्द व हमारे लाभ दोनों ही बढ़ जाएंगे। यहाँ पर कुछ उदाहरण दिए गए हैं:

दोनों आगमनों से सम्बन्धित स्थलों के उदाहरण

भजन संहिता 22 के पहले इक्कीस पदों में स्पष्ट रूप से प्रथम आगमन के विषय में वर्णन पाया जाता है; इन पदों में क्रूस पर उद्धारकर्ता के दु:खों का चित्रण किया गया है। परन्तु 21 और 22 पदों के बीच में एक अन्तराल है। भजन के अन्तिम दस पदों में दूसरे आगमन के समय की विजय और महिमा की ओर संकेत किया गया है।

यशायाह 9:6–7 में भी हम दो आगमनों के विषय में पढ़ते हैं:

क्योंकि हमारे लिए एक बालक उत्पन्न हुआ, हमें एक पुत्र दिया गया है; और प्रभुता उसके काँधे पर होगी, और उसका नाम अद्‌भुत युक्ति करनेवाला पराक्रमी परमेश्वर, अनन्तकाल का पिता, और शान्ति का राजकुमार रखा जाएगा। उसकी प्रभुता सर्वदा बढ़ती रहेगी, और उसकी शान्ति का अन्त न होगा, इसलिए वह उसको दाऊद की राजगद्‌दी पर इस समय से लेकर सर्वदा के लिए न्याय और धर्म के द्वारा स्थिर किए और सम्भाले रहेगा। सेनाओं के यहोवा की धुन के द्वारा यह हो जाएगा।

बैतलहम में उसके आगमन का वर्णन इन शब्दों में किया गया है, ''क्योंकि हमारे लिए एक बालक उत्पन्न हुआ, हमें एक पुत्र दिया गया है।'' इसके बाद शेष पदों में उस समय की ओर संकेत किया गया है जब वह अपनी सामर्थ और बड़ी महिमा में राज्य करने के लिए लौटेगा।

दो आगमनों के विषय में यशायाह 49:7 में भी वर्णन किया गया है:

जो मनुष्यों से तुच्छ जाना जाता, जिस से जातियों को घृणा है, और जो अपराधियों का दास है, उससे इस्राएल का छुड़ानेवाला और उसका पवित्र अर्थात् यहोवा यों कहता है, ''राजा उसे देख कर खड़े हो जाएँगे और हाकिम दण्डवत् करेंगे; यह यहोवा के निमित्त होगा, जो सच्चा और इस्राएल का पवित्र है और जिस ने तुझे चुन लिया है।''

प्रथम आगमन का उल्लेख इन शब्दों में मिलता है, ''जो मनुष्यों से तुच्छ जाना जाता, जिस से जातियों को घृणा है, और जो अपराधियों का दास है,'' परन्तु शेष पद में निश्चय ही उसके द्वितीय आगमन के विषय में वर्णन किया गया है।

अब यशायाह 52:14–15 की ओर ध्यान दें:

जैसे बहुत से लोग उसे देख कर चकित हुए (क्योंकि उसका रूप यहाँ तक बिगड़ा हुआ था कि मनुष्य का सा न जान पड़ता था और उसकी सुन्दरता भी आदमियों की सी न रह गई थी), वैसे ही वह बहुत सी जातियों को पवित्र करेगा और उसको देख कर राजा शान्त रहेंगे, क्योंकि वे ऐसी बात देखेंगे जिसका वर्णन उनके सुनने में भी नहीं आया, और ऐसी बात उनकी समझ में आएगी जो उन्होंने अभी तक सुनी भी न थी।

यह स्पष्ट है कि पद 14 क्रूस पर लटके उद्धारकर्ता का वर्णन कर रहा है; जो उसे क्रूस पर चढ़े हुए देख रहे थे वे उसकी पीड़ा की तीव्रता को देख कर विस्मित थे। उसका रूप इतना बिगड़ चुका था कि यह पहचान पाना मुश्किल हो गया था कि यह कोई मनुष्य है। परन्तु पद 15 में परिस्थिति में एक बहुत बड़ा फर्क देखा जा सकता है। जब उद्धारकर्ता लौटेगा, तो मनुष्य उसकी महिमा की चमक को देख कर विस्मित हो जाएंगे। अन्यजातियाँ जब गलील के

दीन परदेशी को राजाओं के राजा और प्रभुओं के प्रभु के रूप में देखेंगी तो वे भौचक्की रह जाएंगी।

सबसे चिर–चिरपरिचित स्थल जिसमें दोनों आगमन इसी तरह से गुथें हुए हैं, वह है, यशायाह 61:1–2:

प्रभु यहोवा का आत्मा मुझ पर है; क्योंकि यहोवा ने सुसमाचार सुनाने के लिए मेरा अभिषेक किया और मुझे इसलिए भेजा कि खेदित मन के लोगों को शान्ति दूँ, कि बन्दियों के लिए स्वतंत्रता का और कैदियों के लिए छुटकारे का प्रचार करूं; कि यहोवा के प्रसन्न रहने के वर्ष का और हमारे परमेश्वर के पलटा लेने के दिन का प्रचार करूं, कि सब विलाप करनेवालों को शान्ति दूँ।

जब प्रभु यीशु नासरत में था तब उसने इन पदों को उद्धरित किया था (लूका 4:18–19)। परन्तु ध्यान दें कि वह इतना कह कर रूक गया था ''और प्रभु के प्रसन्न रहने के वर्ष का प्रचार करूँ,'' उसने आगे इस वाक्य को नहीं कहा, ''और हमारे परमेश्वर के पलटा लेने के दिन का।'' ऐसा क्यों? क्योंकि उसका पहला आगमन यहोवा के प्रसन्न रहने के वर्ष में, जबकि दूसरे आगमन का आरम्भ ''हमारे परमेश्वर के पलटा लेने के दिन'' हुआ था।

भजन संहिता 34:15–16 में भी दो आगमनों के सम्बन्ध में ऐसा ही एक समान उदाहरण पाया जाता है:

यहोवा की आँखें धर्मियों पर लगी रहती हैं, और उसके कान भी उनकी दोहाई की ओर लगे रहते हैं। यहोवा बुराई करने वालों के विमुख रहता है, ताकि उनका स्मरण पृथ्वी पर से मिटा डाले।

जब पतरस ने इस पद को 1 पतरस 3:12 में उद्धरित किया तो उसने ''ताकि उनका स्मरण पृथ्वी पर से मिटा डाले'' को हटा दिया। उद्धरण का शेष सारा भाग इस समय–खण्ड पर लागू होता है जिसमें हम जी रहे हैं, परन्तु यह अन्तिम वाक्यांश मसीह के द्वितीय आगमन को ध्यान में रख कर लिखा गया है।

मीका भविष्यद्वक्ता ने यह भविष्यद्वाणी की कि बैतलहम मसीह का जन्म स्थान होगा (मीका 5:2):

हे बैतलहम एप्राता, यदि तू ऐसा छोटा है कि यहूदा के हजारों में गिना नहीं जाता, तौभी तुझ में से मेरे लिए एक पुरुष निकलेगा, जो इस्राएलियों में प्रभुता करनेवाला होगा; और उसका निकलना प्राचीनकाल से, वरन अनादिकाल से होता आया है।

परन्तु मीका तुरन्त ही मसीह के दूसरे आगमन की बात पर आ जाता है, जब वह पृथ्वी की छोर छोर तक महान ठहरेगा (मीका 5:4):

और वह खड़ा होकर यहोवा की दी हुई शक्ति से, और अपने परमेश्वर यहोवा के नाम के प्रताप से, उनकी चरवाही करेगा। वे सुरक्षित रहेंगे, क्योंकि अब वह पृथ्वी की छोर तक महान ठहरेगा।

जकर्याह 9:9 में, यरूशलेम में मसीह के विजयी प्रवेश की एक स्पष्ट भविष्यद्वाणी की गई है:

हे सिय्योन बहुत ही मगन हो! हे यरूशलेम जयजयकार कर! क्योंकि तेरा राजा तेरे पास आएगा, वह धर्मी और उद्धार पाया हुआ, वह दीन है, और गदहे पर वरन् गदही के बच्चे पर चढ़ा हुआ आएगा।

परन्तु अगला पद हमें उसके दूसरे आगमन के विषय में बताता है, जब मसीह समुद्र से समुद्र तक राज्य करेगा:

मैं एप्रैम के रथ और यरूशलेम के घोड़े नष्ट करूंगा; और युद्ध के धनुष तोड़ डाले जाएँगे, और वह जाति-जाति से शान्ति की बातें कहेगा; वह समुद्र से समुद्र तक और महानद से पृथ्वी के दूर-दूर के देशों तक प्रभुता करेगा।

पुराना नियम के समान ही नया नियम में भी दो आगमन एक साथ गुथे हुए देखे जा सकते हैं। उदाहरण के लिए लूका 1:31-33 को देखें:

देख, तू गर्भवती होगी, और तेरे एक पुत्र उत्पन्न होगा; तू उसका नाम यीशु रखना। वह महान होगा और परमप्रधान का पुत्र कहलाएगा; और प्रभु परमेश्वर उसके पिता दाऊद का सिंहासन उसको देगा, और वह याकूब के घराने पर सदा राज्य करेगा; और उसके राज्य का अन्त न होगा।

पहले पद की भविष्यद्वाणी स्पष्ट रूप से यीशु के जन्म के साथ ही पूरी हो गई (मत्ती 1:25)। परन्तु पद 32 और 33 इस कलीसिया समय-खण्ड को पार कर उस समय-खण्ड में प्रवेश कर जाते हैं जब मसीह दाऊद के सिंहासन पर बैठ कर पृथ्वी पर राज्य करने के लिए लौटेगा।

लूका 20:18 में दो आगमनों के सम्बन्ध में एक हवाला छिपा हुआ है:

जो कोई उस पत्थर पर गिरेगा वह चकनाचूर हो जाएगा, और जिस पर वह गिरेगा, उसको पीस डालेगा।

पद के पहले भाग में, पत्थर (मसीह) पृथ्वी पर है। उसके देहधारण के समय मनुष्य उस पर गिर कर चकनाचूर हो गए। पद के दूसरे भाग में, पत्थर ऊपर से आ रहा है। जब मसीह वापस आएगा तो वह उसकी आज्ञा न मानने वालों को धूल के समान बिखरा देगा।

अन्तिम और बहुत ही स्पष्ट एक और उदाहरण जिसमें दोनों आगमनों का मेल पाया जाता है, इब्रानियों 9:26,28 में पाया जाता है:

नहीं तो जगत की उत्पत्ति से लेकर उसको बार–बार दुख उठाना पड़ता; पर अब युग के अन्त में वह एक ही बार प्रगट हुआ है, ताकि अपने ही बलिदान के द्वारा पाप को दूर कर दे। और जैसे मनुष्यों के लिए एक बार मरना और उसके बाद न्याय का होना नियुक्त है, वैसे ही मसीह भी बहुतों के पापों को उठा लेने के लिए एक बार बलिदान हुआ; और जो लोग उसकी बाट जोहते हैं उनके उद्धार के लिए दूसरी बार बिना पाप उठाए हुए दिखाई दिया।

वह एक बार इसलिए प्रगट हुआ कि अपने आप को बलिदान करने के द्वारा पाप को दूर करे; यह उसका पहला आगमन था। अब वह दूसरी बार बिना पाप उठाए हुए उद्धार देने के लिये दिखाई देगा; यह उसका दूसरा आगमन होगा।

अध्याय 20

मसीह के आगमन के विभिन्न चरण

पिछले अध्याय में हमने देखा कि मसीह के प्रथम और द्वितीय आगमनों के बीच में अन्तर करना आवश्यक है। प्रथम आगमन इतिहास का विषय है; यह लगभग 2,000 वर्ष पूर्व हुआ था। दूसरा आगमन भविष्यद्वाणी का विषय है; यह अभी भी भविष्य की बात है।

परन्तु यह बात ध्यान रखना भी आवश्यक है कि मसीह का आगमन एक ही बार में घट जाने वाली घटना नहीं होगी। बल्कि, यह एक लम्बी अवधि में और चार चरणों में सम्पन्न होगा। इसलिए इस अध्याय में हम इन चरणों के बीच में अन्तर की ओर ध्यान देंगे।

नया नियम की मूल भाषा में ''आना'' के लिए सामान्य रूप से जिस शब्द का प्रयोग किया जाता है, उस शब्द का अर्थ होता है, ''एक उपस्थिति,'' या ''निकट आना'' (*पारोसिया*)। यह आगमन और उसके बाद एक उपस्थिति को दर्शाता है। इस शब्द का प्रयोग सामान्यत: किसी सम्राट के आगमन और उसके बाद उसके द्वारा की जाने वाली मुलाकातों को व्यक्त करने के लिए किया जाता था।

'आना' शब्द का प्रयोग इसी तरह से किया जाता है। उदाहरण के लिए, मसीह का गलील में आना बहुत से लोगों के लिए चंगाई लेकर आया। यहाँ पर आना का अर्थ सिर्फ उस दिन तक सीमित नहीं है जिस दिन गलील में उसका आगमन हुआ, परन्तु यह गलील में उसके द्वारा उस दौरान बिताई गई सम्पूर्ण अवधि को दर्शाता है।

इसलिए जब हम मसीह के द्वितीय आगमन के विषय में विचार करते हैं तो हमें इसे एक सीमित घटना के रूप में नहीं, बल्कि एक अवधि के रूप में समझना चाहिए। इस अवधि के चार चरण हैं, जो निम्नलिखित हैं:

1. एक आरम्भ
2. एक अवधि
3. एक प्रगटीकरण
4. एक उत्कर्ष

1. मसीह के आगमन का आरम्भ

मसीह के आगमन के आरम्भ को मेघारोहण/*रेप्चर* (मसीह के साथ बादलों पर मिलन के लिए कलीसिया का उठाया जाना) या अपने पवित्र लोगों/विश्वासियों को लेने के लिए मसीह का आगमन)। *रेप्चर* एक लैटिन शब्द है जिसका अर्थ है ''छीन कर ऊपर उठा लेना,''

इस शब्द का प्रयोग 1 थिस्सलुनीकियों 4:17 में लैटिन बाइबल *वलगेट* में किया गया है। वह बादलों पर आएगा, जितने मसीह में मरे हैं वे जिला दिए जाएंगे, जो विश्वासी जीवित हैं वे बदल (रूपान्तरित हो) जाएंगे, और उद्धार पाये हुए सभी मसीही विश्वासी पिता के घर को जाएंगे। यह किसी भी क्षण हो सकता है, और यह पलक झपकते ही हो जाएगा।

जैसे आदम में सब मरते हैं, वैसे ही मसीह में सब जिलाए जाएंगे, परन्तु हर एक अपनी अपनी बारी से: पहला फल मसीह, फिर मसीह के आने पर उसके लोग (1 कुरि. 15:22–23)।

हे भाइयो, हम नहीं चाहते कि तुम उनके विषय में जो सोते हैं, अज्ञानी रहो; ऐसा न हो कि तुम दूसरों के समान शोक करो जिन्हें आशा नहीं। क्योंकि यदि हम विश्वास करते हैं कि यीशु मरा और जी भी उठा, तो वैसे ही परमेश्वर उन्हें भी जो यीशु में सो गए हैं, उसी के साथ ले आएगा। क्योंकि हम प्रभु के वचन के अनुसार तुम से यह कहते हैं कि हम जो जीवित हैं और प्रभु के आने तक बचे रहेंगे, सोए हुओं से कभी आगे न बढ़ेंगे। क्योंकि प्रभु आप ही स्वर्ग से उतरेगा; उस समय ललकार, और प्रधान दूत का शब्द सुनाई देगा, और परमेश्वर की तुरही फूँकी जाएगी; और जो मसीह में मरे हैं, वे पहले जी उठेंगे। तब हम जो जीवित और बचे रहेंगे उनके साथ बादलों पर उठा लिए जाएंगे कि हवा में प्रभु से मिलें; और इस रीति से हम सदा प्रभु के साथ रहेंगे। इस प्रकार इन बातों से एक–दूसरे को शान्ति दिया करो (1 थिस्स. 4:13–18)।

हे भाइयो, अब हम अपने प्रभु यीशु मसीह के आने, और उसके पास अपने इकट्ठे होने के विषय में तुम से विनती करते हैं (2 थिस्स. 2:1)।

इसलिए हे भाइयो, प्रभु के आगमन तक धीरज धरो। देखो, किसान पृथ्वी की बहुमूल्य फसल की आशा रखता हुआ प्रथम और अन्तिम वर्षा होने तक धीरज धरता है। तुम भी धीरज धरो; और तुम अपने हृदय को दृढ़ करो, क्योंकि प्रभु का आगमन निकट है (याकूब 5:7–8)।

अत: हे बालको, उसमें बने रहो कि जब वह प्रगट हो तो हमें हियाव हो, और हम उसके आने पर उसके सामने लज्जित न हों (1 यूहन्ना 2:28)।

अन्य स्थल जिनमें मसीह से मिलने के लिये कलीसिया को बादलों पर उठाए जाने का उल्लेख पाया जाता है, वे हैं, यूहन्ना 14:1–4; 1 कुरिन्थियों 15:51–54; फिलिप्पियों 3:20–21; 1 थिस्सलुनीकियों 1:10; इब्रानियों 9:28; 1 यूहन्ना 3:2; प्रकाशितवाक्य 22:7,20।

2. मसीह के आगमन की अवधि

दूसरा चरण, मसीह के आगमन की अवधि, जिसमें मसीह का न्याय सिंहासन पर बैठना शामिल है, जब विश्वासियों को उनकी विश्वासयोग्य सेवा के लिए प्रतिफल दिया जाएगा।

भला हमारी आशा या आनन्द या बड़ाई का मुकुट क्या है? क्या हमारे प्रभु यीशु के

सम्मुख उसके आने के समय तुम ही न होगे?(1 थिस्स. 2:19)।

शान्ति का परमेश्वर आप ही तुम्हें पूरी रीति से पवित्र करे; और तुम्हारी आत्मा और प्राण और देह हमारे प्रभु यीशु मसीह के आने तक पूरे–पूरे और निर्दोष सुरक्षित रहें (1 थिस्स. 5:23)।

रोमियों 14:10–12; 1 कुरिन्थियों 3:11–15; 2 कुरिन्थियों 5:10; 2 तीमुथियुस 4:7–8 भी देखें।

मसीह के आगमन की अवधि में एक और घटना को शामिल किया जा सकता है, और वह है मेम्ने के विवाह का भोज। प्रकाशितवाक्य की पुस्तक में इस घटना को जिस स्थान पर रखा गया है, उसके आधार पर हम यह अनुमान लगा सकते हैं कि यह मसीह के महिमामय आगमन से पहले होगा। भले ही ''आना'' शब्द इसके सम्बन्ध में प्रयोग में नहीं लाया गया है, तौभी हम इस घटना को यहाँ शामिल कर रहें हैं।

फिर मैं ने बड़ी भीड़ का सा और बहुत जल का सा शब्द, और गर्जन का सा बड़ा शब्द सुना; ''हालेलुय्याह! क्योंकि प्रभु हमारा परमेश्वर सर्वशक्तिमान राज्य करता है। आओ, हम आनन्दित और मगन हों, और उसकी स्तुति करें, क्योंकि मेम्ने का विवाह आ पहुँचा है, और उसकी दुल्हिन ने अपने आप को तैयार कर लिया है। उसको शुद्ध और चमकदार महीन मलमल पहिनने का अधिकार दिया गया'' – क्योंकि उस महीन मलमल का अर्थ पवित्र लोगों के धर्म के काम हैं। तब स्वर्गदूत ने मुझ से कहा, ''ये वचन परमेश्वर के सत्य वचन हैं'' (प्रका.19:6–9)।

जब ये घटनाएं स्वर्ग में घट रहीं होंगी, उस समय पृथ्वी एक क्लेशकाल से हो कर गुजर रही होगी। यह लगभग सात वर्ष की एक अवधि होगी जब परमेश्वर अपना दण्ड पृथ्वी पर उण्डेलेगा और यह दण्ड समय के साथ–साथ अपनी तीव्रता में भी बढ़ता जाएगा (दानि. 9:27; मत्ती 24:4–28; प्रका. 6 से 19 अध्याय)। इस अवधि का अन्तिम आधा भाग महाक्लेशकाल के नाम से जाना जाएगा; इस दौरान संकट और विपदा की पीड़ा इतनी बढ़ जाएगी जिसकी कल्पना भी नहीं की जा सकती (मत्ती 24:15–31)।

3. मसीह के आगमन का प्रगटीकरण

तीसरा चरण मसीह के आगमन का प्रगटीकरण होगा, अर्थात्, इस समय वह सामर्थ और बड़ी महिमा के साथ राजाओं के राजा और प्रभुओं के प्रभु के रूप में पृथ्वी पर राज्य करने को लौटेगा। कलीसिया को मसीह से मिलने के लिए बादलों पर उठाए जाने की घटना को संसार नहीं देख सकेगा; यह क्षण भर में हो जाएगा। परन्तु जब वह राज्य करने को आएगा तो हर एक आँख उसे देखेगी। इसलिए इसे उसके आगमन का प्रगटीकरण कहा गया है।

जब वह जैतून पहाड़ पर बैठा था, तो चेलों ने एकांत में उसके पास आकर कहा, ''हमें बता कि ये बातें कब होंगी? तेरे आने का और जगत के अन्त का क्या चिन्ह होगा?'' (मत्ती 24:3)।

''क्योंकि जैसे बिजली पूर्व से निकलकर पश्चिम तक चमकती है, वैसे ही मनुष्य के पुत्र का भी आना होगा'' (मत्ती 24:27)।

जैसे नूह के दिन थे, वैसा ही मनुष्य के पुत्र का आना भी होगा (मत्ती 24:37)।

और जब तक जलप्रलय आकर उन सब को बहा न ले गया, तब तक उनको कुछ भी मालूम न पड़ा; वैसे ही मनुष्य के पुत्र का आना भी होगा (मत्ती 24:39)।

ताकि वह तुम्हारे मनों को ऐसा स्थिर करे कि जब हमारा प्रभु यीशु अपने सब पवित्र लोगों के साथ आए, तो वे हमारे परमेश्वर और पिता के सामने पवित्रता में निर्दोष ठहरें (1 थिस्स. 3:13)।

तब वह अधर्मी प्रगट होगा, जिसे प्रभु यीशु अपने मुँह की फूँक से मार डालेगा, और अपने आगमन के तेज से भस्म करेगा (2 थिस्स. 2:8)।

क्योंकि जब हम ने तुम्हें अपने प्रभु यीशु मसीह की सामर्थ का और आगमन का समाचार दिया था, तो वह चतुराई से गढ़ी हुई कहानियों का अनुकरण नहीं था वरन् हम ने आप ही उसके प्रताप को देखा था (2 पतरस 1:16)।

(यहाँ पर पतरस प्रेरित प्रभु यीशु मसीह के आगमन के प्रगटीकरण के विषय में लिख रहा है जैसा कि मत्ती 17 में रूपान्तर के पहाड़ पर इसकी एक पूर्वझलक चेलों को दिखाई गई थी।)

मसीह के आगमन के तीसरे चरण के विषय अन्य उल्लेख जकर्याह 14:4; मलाकी 4:1–3; प्रेरित 1:11; 2 थिस्स. 1:7–9; यहूदा 14; प्रका. 1:7; 19:11–16 में पाया जाता है।

मनुष्य के पुत्र के रूप में मसीह का आगमन हमेशा ही तीसरे चरण के सन्दर्भ में आया है।

4. मसीह के आगमन का उत्कर्ष

अन्तिम चरण मसीह के आगमन का उत्कर्ष है, पृथ्वी और आकाश का आग से नाश किया जाना। इसके बाद पृथ्वी पर मसीह का हजार वर्ष का राज्य आएगा। इसका हवाला 2 पतरस 3:4; 7–13 में पाया जाता है।

और कहेंगे, ''उसके आने की प्रतिज्ञा कहाँ गई? क्योंकि जब से बापदादे सो गए हैं, सब कुछ वैसा ही है जैसा सृष्टि के आरम्भ से था?''

पर वर्तमानकाल के आकाश और पृथ्वी उसी वचन के द्वारा इसलिए रखे गए हैं कि जलाए जाएँ; और ये भक्तिहीन मनुष्यों के न्याय और नष्ट होने के दिन तक ऐसे ही रखे रहेंगे। हे प्रियो, यह बात तुम से छिपी न रहे कि प्रभु के यहाँ एक दिन हजार वर्ष के बराबर है, और

हजार वर्ष एक दिन के बराबर है। प्रभु अपनी प्रतिज्ञा के विषय में देर नहीं करता, जैसी देर कुछ लोग समझते हैं; पर तुम्हारे विषय में धीरज धरता है, और नहीं चाहता कि कोई नष्ट हो, वरन् यह कि सब को मन फिराव का अवसर मिले। परन्तु प्रभु का दिन चोर के समान आ जाएगा, उस दिन आकाश बड़ी हड़बड़ाहट के शब्द से जाता रहेगा और तत्व बहुत ही तृप्त होकर पिघल जाएंगे और पृथ्वी और उस पर के काम जल जाएंगे। जबकि ये सब वस्तुएँ इस रीति से पिघलनेवाली हैं, तो तुम्हें पवित्र चाल चलन और भक्ति में कैसे मनुष्य होना चाहिए। और परमेश्वर के उस दिन की बाट किस रीति से जोहना चाहिए और उसके जल्द आने के लिए कैसा यत्न करना चाहिए, जिसके कारण आकाश आग से पिघल जाएँगे, और आकाश के गण बहुत ही तृप्त हो कर गल जाएँगे। पर उसकी प्रतिज्ञा के अनुसार हम एक नए आकाश और नई पृथ्वी की आस देखते हैं जिनमें धार्मिकता वास करेगी।

इस अध्याय में हम उन हँसी–ठठ्ठा करने वालों के बारे में पढ़ते हैं जो अन्तिम दिनों में उठ खड़े होंगे, और मसीह के वापस आने की सम्भावना का इंकार करेंगे। वे उसके आगमन के किस पहलू के बारे में ऐसा कहेंगे?

क्या वे ऐसा कलीसिया को बादलों पर मसीह से मिलने के लिए उठाए जाने के विषय में कहेंगे? नहीं। शायद वे इस विषय में कुछ भी नहीं जानते। क्या वे ऐसा राज्य करने के लिए मसीह के आगमन के बारे में कहेंगे? नहीं। यह स्पष्ट है कि वे इस विषय पर यह बात नहीं कह रहे हैं। सन्दर्भ को पूरी तरह से ध्यान से देखने के बाद यह संकेत मिलता है कि वे बुराई करने वालों का प्रभु के द्वारा अन्तिम न्याय किए जाने का ठठ्ठा कर रहे हैं। उनका आशय पृथ्वी पर होने वाले अन्तिम न्याय से है, या उससे जिसे वे ''संसार का अन्त'' कहते हैं। उनका तर्क यह है कि उन्हें किसी बात की चिन्ता करने की आवश्यकता नहीं है। परमेश्वर ने इतिहास में कोई दखल नहीं दिया है और वह भविष्य में भी कोई दखल नहीं देगा। इसलिए वे अपने बुरे वचनों और कर्मों में बने रहते हैं।

पतरस प्रेरित उनके ठठ्ठों का उत्तर मसीह के हजार वर्ष के राज्य के बाद आने वाले समय की ओर संकेत करते हुए देता है, जब जिस आकाश और पृथ्वी को हम जानते हैं पूरी तरह से नाश कर दिए जाएंगे। मसीह के आगमन का उत्कर्ष मसीह के हजार वर्ष के राज्य के बाद और अनन्त राज्य के आरम्भ पर आएगा।

शायद आपके मन में यह प्रश्न आए, ''परन्तु आप यह किस आधार पर कह सकते हैं कि प्रथम और तृतीय चरण, अर्थात् मेघारोहण (कलीसिया का बादलों पर मसीह से मिलने के लिए उठाया जाना) और द्वितीय आगमन का प्रगटीकरण दो अलग–अलग घटनाएं हैं?'' इसका उत्तर है कि पवित्रशास्त्र में इनका अन्तर बताया गया है जो कि अगले अध्याय के शीर्षक और पूरे अध्याय में स्पष्ट किया गया है।

मेघारोहण	प्रगटीकरण
1. मसीह हवा में आएगा (1 थिस्स. 4:16-17)	1. वह पृथ्वी पर आएगा (जक. 14:4)।
2. वह अपने पवित्र लोगों को लेने के लिए आएगा (1 थिस्स 4:16-17)।	2. वह अपने पवित्र लोगों के साथ आता है (1 थिस्स. 3:13; यहूदा 14)।
3. मेघारोहण एक भेद है, अर्थात्, एक ऐसा सत्य जिसे पुराना नियम समय में जाना नहीं गया था (1 कुरि. 15:51)।	3. प्रगटीकरण कोई भेद नहीं था; पुराना नियम की अनेक भविष्यद्वाणियों में इस विषय को शामिल किया गया है (भजन 72; यशा. 11; जक. 14)।
4. अपने पवित्र लोगों *के लिए* मसीह के आगमन के समय के विषय में यह कभी नहीं कहा गया है कि तब आकाश में चिन्ह दिखाई देंगे।	4. मसीह जब अपने पवित्र लोगों के *संग* आएगा तो वह आकाश में चिन्हों के साथ प्रगट होगा (मत्ती 24:29-30)।
5. मेघारोहण को मसीह के दिन के रूप में पहचाना गया है (1 कुरि. 1:8; 2 कुरि. 1:14; फिलि. 1:6,10)।	5. प्रगटीकरण को प्रभु के दिन के रूप में पहचाना गया है (2 थिस्स. 2:2)।
6. मेघारोहण को समय की एक आशीष के रूप में प्रस्तुत किया गया है (1 थिस्स. 4:18)।	6. प्रगटीकरण में दण्ड/न्याय पर अधिक जोर दिया गया है (2 थिस्स. 2:8-12)।
7. मेघारोहण पल भर में हो जाएगा, पलक झपकते ही (1 कुरि. 15:52)। इसमें यह सशक्त आशय पाया जाता है इसे संसार नहीं देखेगा।	7. प्रगटीकरण को सारा विश्व देखेगा, शायद टी.वी. के माध्यम से (मत्ती 24:27; प्रका. 1:7)।
8. मेघारोहण में प्रमुख रूप से कलीसिया को शामिल किया गया है (यूह. 14:1-4; 1 कुरि. 15:51-58); 1 थिस्स. 4:13-18)	8. प्रगटीकरण में प्रमुख रूप से इस्राएल को शामिल किया गया है, साथ ही अन्यजाति राष्ट्रों को भी (मत्ती 24-25)।
9. मसीह एक चमकीले और भोर के तारे के रूप में आएगा (प्रका.22:16)।	9. मसीह धार्मिकता के सूर्य के रूप में अपने पंखों में चंगाई लिए हुए प्रगट होगा (मला. 4:2)।

अध्याय 21

प्रभु का दिन, मसीह का दिन, परमेश्वर का दिन

अब तक हम यह समझ गए होंगे कि पवित्रशास्त्र का अध्ययन करते समय अन्तरों का ध्यान रखना कितना महत्वपूर्ण होता है। जब हम भविष्य की घटनाओं के सम्बन्ध में अध्ययन करते हैं, तो हम अनेक उलझनों में फँस सकते हैं यदि हम प्रभु का दिन, मसीह का दिन, और परमेश्वर का दिन के बीच में अन्तर नहीं कर पाते।

प्रभु का दिन

यह दिन निश्चय ही 24 घण्टों वाला दिन नहीं, बल्कि समय की एक अवधि है जिसकी अपनी कुछ विशेषताएं हैं।

पुराना नियम में, ''प्रभु का दिन'' दण्ड, उजाड़, और अंधकार के किसी भी समय का वर्णन करने के लिए प्रयोग में लाया जाता था (यशा. 2:12; योएल 2:1–2)। यह एक ऐसे समय को कहा जाता था जब परमेश्वर इस्राएल के शत्रुओं के विरुद्ध कूच करता था और उन्हें दृढ़ता से दण्ड देता था (सप. 3:8–12; योएल 3:14–16; ओब. 15:16; जक. 12:8–9)। यह एक ऐसे समय को भी कहा जाता था जब परमेश्वर अपने निज लोगों को उनके द्वारा मूर्तिपूजा किए जाने पर और परमेश्वर से दूर हो जाने पर दण्ड देता था (योएल 1:15–20; आमोस 5:18; सप. 1:7–18)। प्रभु का दिन बुनियादी तौर पर पाप को दण्ड दिए जाने और प्रभु के पक्ष में विजय हासिल करने को दर्शाता है (योएल 2:31–32)।

नया नियम में, प्रभु का दिन लगभग उसी अवधि को समेटता है जिसे ''समयों और कालों'' (प्रेरित 1:7; 1 थिस्स. 5:1) की अवधि के रूप में बताया गया है। यह कलीसिया को बादलों पर मसीह से मिलने के लिए उठाए जाने के बाद आएगा और इसमें निम्नलिखित बातें शामिल हैं:

1. **क्लेशकाल** या **याकूब का संकट** (दानि. 9:27; मत्ती 24:4:28; 1 थिस्स. 5:1–11; 2 थिस्स. 2:2; प्रका. 6:1–19:16)। यह प्रभु के दिन का पहला चरण है। यह तब आएगा जब इसके आने की कोई अपेक्षा न कर रहा हो, जैसा कि रात के समय चोर आता है। यह मानो धोखा देते हुए आ जाएगा, यह अचानक आएगा, यह नाश करता हुआ आएगा, इसका आना अटल है, और इससे बचा नहीं जा सकता। यह लगभग

सात वर्ष की अवधि होगी जिस दौरान परमेश्वर अपना दण्ड विश्वासत्यागी यहूदी जगत, विश्वासत्यागी मसीही जगत, और अन्यजातियों पर उण्डेलेगा। अपनी तीव्रता में निरन्तर बढ़ते जाने वाले इन दण्डों का चित्रण प्रकाशितवाक्य में सात मुहरों, सात तुरहियों, और सात कटोरों के चित्र के रूप में किया गया है। क्लेशकाल के अन्तिम आधे भाग को महाक्लेशकाल नाम दिया गया है। यह संकट का सबसे भयानक समय होगा जैसा आज तक संसार ने न कभी अनुभव किया है और न आगे करेगा।

2. **अपने पवित्र लोगों के साथ मसीह का आगमन (मलाकी 4:1–3; 2 थिस्स. 1:7–9)**। क्लेशकाल के अन्त में प्रभु यीशु अपने सामर्थी स्वर्गदूतों के साथ ''धधकती हुई आग में स्वर्ग से प्रगट होगा, और जो परमेश्वर को नहीं पहचानते, और हमारे प्रभु यीशु के सुसमाचार को नहीं मानते, उन से पलटा'' लेने पृथ्वी पर लौटेगा (2 थिस्स. 1:8)। वह अपना राज्य पृथ्वी पर स्थापित करने से पहले अपने सारे शत्रुओं को नाश करेगा।
3. **मसीह का हजार वर्ष का राज्य.** यह प्रभु के दिन में शामिल है (योएल 3:18, पद 14 से तुलना करें, जक. 14:8–9, पद 1 से तुलना करें)। यह वह समय होगा जब प्रभु के विरुद्ध विद्रोह करने वाले हर एक व्यक्ति को दण्ड दिया जाएगा (यशा. 65:17–25)। राजा लोहे का राजदण्ड लिए हुए राज्य करेगा (प्रका. 19:15)।
4. **पृथ्वी और आकाश का आग से पूरी तरह से नाश किया जाना** (2 पतरस 3:7, 10). मसीह के हजार वर्ष के राज्य के समापन पर एक बड़े शब्द के साथ ही स्वर्ग और पृथ्वी बीत जाएंगे और सारे तत्व भयानक गर्मी से पिघल जाएंगे। यह प्रभु के दिन का अन्तिम चरण होगा।

मसीह का दिन

जबकि प्रभु का दिन उस संसार को दण्ड दिए जाने का दिन होगा जिसने परमेश्वर के पुत्र को ठुकरा दिया था, मसीह का दिन वह समय होगा जब उस पर भरोसा कर कलीसिया का अंग बनने वालों को आशीष दी जाएगी। यह प्रभु यीशु का दिन, यीशु मसीह का दिन, हमारे प्रभु यीशु मसीह का दिन भी कहा जाता है। इस दिन की दो प्रमुख विशेषताएं हैं:

1. **कलीसिया के विश्वासियों/पवित्र लोगों को बादलों पर मसीह से मिलने के लिए उठाया जाना** (1 कुरि. 5:5; फिलि. 1:6,10)। जितने मसीह में मरे हैं वे सब जिला दिए जाएंगे।

2. **मसीह का न्याय सिंहासन** (1 कुरि. 1:8; 2 कुरि. 1:14; फिलि. 2:16)। विश्वासी लोग मसीह के न्याय सिंहासन के समक्ष खड़े होंगे – जहाँ उनसे उनके कामों के आधार पर प्रतिफल दिया जाएगा। यह उनके उद्धार से नहीं बल्कि उनकी सेवाओं से सम्बन्धित होगा। जितनों के कामों से मसीह प्रसन्न होगा, उन सब को प्रतिफल दिया जाएगा। जिन्होंने अपना जीवन व्यर्थ बातों में गंवा दिया उन्हें प्रतिफल की हानि उठानी पड़ेगी, वे स्वयं तो बच जाएंगे, परन्तु ''जलते जलते'' (1 कुरि. 3:15)।

किंग्स जेम्स वर्शन में एक गलत शब्द प्रयोग के कारण ''मसीह का दिन'' 2 थिस्सलुनीकियों 2:2 में आया है, जबकि बाइबल के अधिकांश विद्वानों का यह मानना है कि यहाँ पर ''प्रभु का दिन'' होना चाहिए। चूंकि थिस्सलुनीकी विश्वासी भयानक कठिनाइयों का सामना कर रहे थे, उन्हें लगा कि प्रभु के दिन का दण्ड आरम्भ हो चुका है। प्रेरित पौलुस उन्हें यह आश्वस्त करता है कि प्रभु का दिन आरम्भ होने से पहले दो घटनाएं घटेंगी – विश्व भर में बड़ी संख्या में लोग विश्वास से भटक जाएंगे, और पाप का पुरुष, मसीह–विरोधी प्रगट होगा।

थिस्सलुनीकियों को मसीह के दिन के आने पर किसी प्रकार से डरने की आवश्यकता नहीं थी। उनके लिए इसका अर्थ होता, हमेशा के लिए कठिनाइयों से बचा लिया जाना।

परमेश्वर का दिन

परमेश्वर का दिन को प्रभु के दिन या मसीह के दिन के साथ गड़बड़ा नहीं देना चाहिए। परमेश्वर का दिन परमेश्वर के अन्तिम विजय का दिन है। यह तब आएगा जब सारी बुराइयाँ हमेशा के लिए परास्त कर दी जाएंगी, और जब आकाश और पृथ्वी का आग से नाश कर दिया जाएगा (2 पतरस 3:12)। सभी व्यावहारिक उद्देश्यों के लिए परमेश्वर का दिन और अनन्त अवस्था एक ही हैं।

अध्याय 22
दोहरी पूर्णताएं

जब हम पवित्रशास्त्र में भविष्यद्वाणी से सम्बन्धित भागों का अध्ययन करते हैं, तब यह ध्यान रखना बहुत ही सहायक सिद्ध होता है कि कुछ भविष्यद्वाणियों की पूर्णता एक से अधिक बार होती है। इसे ''दोहरे हवाले का सिद्धान्त'' कहा जाता है।

आत्मा उण्डेला जाना

इसका एक सटीक उदाहरण योएल द्वारा परमेश्वर का आत्मा उण्डेले जाने सम्बन्धी भविष्यद्वाणी है:

उन बातों के बाद मैं सब प्राणियों पर अपना आत्मा उण्डेलूंगा; तुम्हारे बेटे–बेटियाँ भविष्यद्वाणी करेंगी, और तुम्हारे पुरनिए स्वप्न देखेंगे। तुम्हारे दास और दासियों पर भी मैं उन दिनों में अपना आत्मा उण्डेलूँगा। मैं आकाश में पृथ्वी पर चमत्कार अर्थात्, लहू और आग और धुएँ के खम्भे दिखाऊँगा। यहोवा के उस बड़े और भयानक दिन के आने से पहले सूर्य अंधियारा होगा और चन्द्रमा रक्त सा हो जाएगा। उस समय जो कोई यहोवा से प्रार्थना करेगा, वह छुटकारा पाएगा (योएल 2:28–32अ)।

जब पतरस प्रेरित ने पिन्तेकुस्त के दिन इस स्थल को उद्धरित किया (प्रेरित 2:14–21), तब उसने कहा, ''. . . यह वह बात है, जो योएल भविष्यद्वक्ता के द्वारा कही गई है।'' परन्तु पतरस का आशय यह नहीं हो सकता था कि यह भविष्यद्वाणी पूरी तरह से पूर्ण हो गई, क्योंकि योएल द्वारा इस भविष्यद्वाणी में कही गई कुछ बातें पिन्तेकुस्त के दिन पूरी नहीं हुई थीं।

आत्मा सब मनुष्यों पर नहीं, बल्कि सिर्फ तीन हजार यहूदियों पर उण्डेला गया था। आकाश में कोई चमत्कार नहीं दिखाई दिया था – सूर्य अंधियारा नहीं हुआ, चन्द्रमा रक्त सा नहीं हुआ। पृथ्वी पर भी कोई चिन्ह प्रगट नहीं हुआ, अर्थात्, लोहू और आग और धुएं का खम्भा नहीं दिखाई दिया।

इसका अर्थ यह है कि पिन्तेकुस्त योएल की भविष्यद्वाणी की एक आरम्भिक और अधूरी पूर्णता थी। यह पूरी तरह से मसीह के दूसरे आगमन पर पूर्ण होगी। उसके आने से पहले भविष्यद्वाणी के अनुसार चिन्ह दिखाई देंगे और उसके आने के बाद उसका आत्मा हजार वर्ष के राज्य में सब मनुष्यों पर उण्डेला जाएगा।

उल्लेखनीय जन्म

''दोहरे हवाले का सिद्धान्त'' का एक और उदाहरण हमें यशायाह 7:14 के चिरपरिचित ''कुंवारी'' वाले स्थल के रूप में मिलता है:

इस कारण प्रभु आप ही तुम को एक चिन्ह देगा। सुनो, एक कुवाँरी गर्भवती होगी और पुत्र जनेगी, और उसका नाम इम्मानुएल रखेगी।

यह भविष्यद्वाणी स्पष्ट रूप से उस समय के एक राजा के लिए, जिसका नाम अहाज था, एक अर्थ रखती है, यह कि एक बालक उत्पन्न होगा और उसका नाम ''परमेश्वर हमारे साथ'' जिसका आशय यह होगा कि विजय निकट है। इससे पहले कि बालक इतना बड़ा हो कि वह भले और बुरे को समझ सके, सीरिया–इस्राएल गठबन्धन कुचल दिया जाएगा, और कुछ वर्षों बाद ही यह बालक उस देश का मक्खन और मधु खाएगा (पद 15)।

परन्तु इस पद की भविष्यद्वाणी मसीह के जन्म के साथ पूरी तरह से पूर्ण हुई।

यह सब इसलिए हुआ कि जो वचन प्रभु ने भविष्यद्वक्ता के द्वारा कहा था, वह पूरा हो: ''देखो, एक कुँवारी गर्भवती होगी और एक पुत्र जनेगी, और उसका नाम इम्मानुएल रखा जाएगा,'' जिसका अर्थ है – परमेश्वर हमारे साथ (मत्ती 1:22–23)।

यशायाह के द्वारा इब्रानी शब्द *आलमा* का प्रयोग किया जाना दोहरी पूर्णता का अवसर देता है। इसका अर्थ, एक युवा स्त्री या एक कुंवारी हो सकता है। परन्तु मत्ती द्वारा प्रयोग में लाया गया यूनानी शब्द *पारथेनोस* का अर्थ सिर्फ कुंवारी ही हो सकता है।

विजयी प्रवेश

दोहरी पूर्णता का एक तीसरा उदाहरण भजन 118:26अ में पाया जाता है:

धन्य है वह जो यहोवा के नाम से आता है!

प्रथम खजूर के रविवार को, जब प्रभु यीशु गदही के बच्चे पर सवार हो कर यरूशलेम जा रहा था, तो भीड़ चिल्ला–चिला कर कह रही थी,

दाऊद के सन्तान की होशाना! धन्य है वह जो प्रभु के नाम से आता है, आकाश में होशाना (मत्ती 21:9)।

परन्तु हम यह जानते हैं कि भविष्यद्वाणी यहाँ पर पूरी तरह से पूर्ण नहीं हुई, क्योंकि बाद में यरूशलेम पर विलाप करते हुए, प्रभु यीशु ने कहा,

क्योंकि मैं तुम से कहता हूँ कि अब से जब तक तुम न कहोगे, ''धन्य है वह जो प्रभु के

नाम से आता है'' तब तक तुम मुझे फिर न देखोगे (मत्ती 23:39)।

यह अन्तिम तौर पर उस समय पूरी होगी जब उद्धारकर्ता एक ऐसी जाति के पास पृथ्वी पर अपनी पूरी सामर्थ और महिमा के साथ लौटेगा जो उसे अपने मसीह और राजा के रूप में स्वीकार कर लेगी।

यरूशलेम का नाश

दो बार पूर्ण होने वाली एक और भविष्यद्वाणी यरूशलेम के विनाश से सम्बन्धित है। यीशु ने लूका 21:20–24 में नगर के उजाड़ हो जाने की भविष्यद्वाणी की थी। उसके ये वचन स्पष्ट रूप से तब पूरे हुए जब 70 ईस्वी में तीतुस ने अपनी रोमी सेना के साथ नगर को ध्वस्त कर दिया और मन्दिर को ढा दिया। परन्तु यरूशलेम के लिए कहे गए हाय के वचन अब तक पूरे नहीं हुए हैं। प्रकाशितवाक्य 11:2 से यह स्पष्ट हो जाता है कि अन्यजाति लोग, यह दुखद है कि, क्लेशकाल के दौरान बयालीस महीनों तक एक बार फिर से पवित्रनगर के मन्दिर को अपने पाँवों से रौंदेंगे।

मसीह के विरुद्ध विद्रोह

भजन 2:1–2 को प्रेरित 4:25–26 में उद्धरित किया गया है:

जाति–जाति के लोग क्यों हुल्लड़ मचाते हैं, और देश–देश के लोग व्यर्थ बातें क्यों सोच रहे हैं? यहोवा और उसके अभिषिक्त के विरूद्ध पृथ्वी के राजा मिलकर, और हाकिम आपस में सम्मति करके कहते हैं,

प्रेरित 4:27 में, इन वचनों को मसीह को क्रूस पर चढ़ाए जाने पर लागू किया गया है:

क्योंकि सचमुच तेरे सेवक यीशु के विरोध में, जिसका तू ने अभिषेक किया, हेरोदेस और पुन्तियुस पिलातुस भी अन्यजातियों और इस्राएलियों के साथ इस नगर में इकट्ठे हुए।

यह प्राथमिक रूप से भजनकार के वचनों की एक आंशिक पूर्णता थी। इन वचनों का आगे (भविष्य में) और पूरा होना शेष है जब क्लेशकाल के समापन पर संसार के शासक एकजुट हो कर मसीह को विश्वव्यापी सत्ता को लेने से रोकने का एक व्यर्थ प्रयास करेंगे।

इस्राएल का फिर से इकठ्ठा होना

दोहरी हवाले के नियम का एक अन्तिम उदाहरण इस्राएल के फिर से इकठ्ठा होने से सम्बन्धित स्थलों में देखा जा सकता है (यशा. 43:5–7; यिर्म. 16:14–15; यहे. 36:8–11; 37:21)। ये भविष्यद्वाणियाँ आंशिक रूप से पूरी हुईं जब इस्राएल का एक बचा हुआ

भाग बाबुल की बन्धुआई से छूट कर इस्राएल को पहुँचा, जैसा कि एज्रा और नहेमायाह की पुस्तकों में वर्णन किया गया है। परन्तु मुख्य घटना अब भी घटित होना शेष है। बीते समयों का इकठ्ठा होना तो सिर्फ छोटी–छोटी बून्दों का बिल्कुल धीरे–धीरे गिरने के समान है। याकूब के संकट के समय, परमेश्वर पृथ्वी पर चुनी हुई उसकी प्रजा को, जो संसार भर में तितर–बितर है, वापस इस्राएल में लौटा लाएगा (मत्ती 24:31; व्य.वि. 30:3–4; यहे. 36:24–32; 37:11–14)। तब और सिर्फ तब ही भविष्यद्वाणियाँ पूरी तरह से और अन्तिम रूप से पूर्ण होंगी।

भाग 5
पवित्रशास्त्र में पाए जाने वाले कुछ अन्तर

अध्याय 23

सात न्याय

बाइबल का अध्ययन करते हुए, यह ध्यान रखना महत्वपूर्ण है कि बाइबल में न्याय के अनेक प्रकार हैं, और इस में शामिल लोगों, स्थानों, न्याय का आधार, और परिणामों के सम्बन्ध में अन्तर पहचानना आवश्यक है। उदाहरण के लिए, अनेक लोग यह सोचते हैं कि अन्यजातियों का न्याय और बड़े श्वेत सिंहासन के सामने का न्याय एक ही हैं। परन्तु यदि हम सावधानीपूर्वक इस विषय पर अध्ययन करें तो हम यह पाएंगे कि दोनों के बीच बहुत अन्तर है।

निश्चय ही बाइबल की सही समझ रखने वाला अध्ययन करते समय यह पहचान जाएगा कि एक ''सामान्य न्याय'' जैसी कोई सच्चाई है ही नहीं जिसमें विश्वासी और अविश्वासी अपने विषय में फैसला सुनने को परमेश्वर के समक्ष खड़े हों।

यहाँ पर हम परमेश्वर के वचन में पाए जाने वाले सात प्रकार के अधिक महत्वपूर्ण न्याय के विषय में चर्चा करेंगे।

मानव के पाप का न्याय

कलवरी पर, परमेश्वर ने पाप का न्याय किया और उसे दण्ड दिया जब प्रभु यीशु मसीह इसके दण्ड को अपने शरीर पर लेकर क्रूस पर चढ़ गया। उद्धारकर्ता ने संसार के पापों के लिए अपना प्राण दिया:

क्योंकि मसीह का प्रेम हमें विवश कर देता है; इसलिए कि हम यह समझते हैं कि जब एक सब के लिए मरा तो सब मर गए। और वह इस निमित्त सब के लिए मरा कि जो जीवित हैं, वे आगे को अपने लिए न जीएँ परन्तु उसके लिए जो उनके लिए मरा और फिर जी उठा (2 कुरि. 5:14–15)।

और वही हमारे पापों का प्रायश्चित है, और केवल हमारे ही नहीं वरन् सारे जगत के पापों का भी। (1 यूहन्ना 2:2)

जब उसने अपना प्राण दिया, तो पाप के दण्ड का पूरा–पूरा दाम चुका दिया। उसके द्वारा बहाए गए उसके लोहू ने परमेश्वर की धार्मिकता की सारी मांगों को पूरा कर दिया। उसने एक ऐसे मार्ग का प्रबन्ध कर दिया जिसके द्वारा परमेश्वर अधर्मी पापियों के पाप को अनदेखा किए बिना और अपनी पवित्रता के विरुद्ध समझौता किए बिना ही उद्धार दे। उसके द्वारा पूर्ण किया गया छुटकारे का कार्य पाप को दूर करने के लिए असीमित सामर्थ रखता था।

किन्तु, क्रूस पर उसके द्वारा पूर्ण किये गए कार्य के द्वारा अपने आप हर व्यक्ति को उद्धार नहीं मिल जाता। हमारे बदले में हमारे लिए किया गया उसका कार्य सारे संसार का पाप धो देने के लिए पर्याप्त था, परन्तु सिर्फ वे ही जो मन फिरा कर प्रभु यीशु पर विश्वास लाते हैं उसके इस कार्य का लाभ पाते हैं।

जब एक व्यक्ति मसीह को अपने प्रभु और उद्धारकर्ता के रूप में स्वीकार करता है, तो हमेशा के लिए पाप के दोष और दण्ड से मुक्त हो जाता है। उसे कभी भी अपने पापों के कारण अनन्त न्याय का सामना नहीं करना पड़ेगा, क्योंकि प्रभु यीशु ने इस दण्ड को सह लिया है, और परमेश्वर इसका दाम दो बार नहीं मांगेगा। एक विश्वासी को एक ही बार में हमेशा के लिए न्याय के दृष्टिकोण से मिलने वाली क्षमा विश्वास के द्वारा प्राप्त हो जाती है।

विश्वासी द्वारा स्वयं का न्याय

जब एक व्यक्ति उद्धार प्राप्त कर लेता है, तो यह आवश्यक है कि वह अपने स्वयं के जीवन में अपना न्याय करता रहे। इसका अर्थ यह है कि जैसे ही उसे अपने पाप का बोध हो वह उसका अंगीकार करते हुए उसे छोड़ दे। पौलुस 1 कुरिन्थियों 11:27–32 में यही कह रहा है:

इसलिए जो कोई अनुचित रीति से प्रभु की रोटी खाए या उसके कटोरे में से पीए, वह प्रभु की देह और लहू का अपराधी ठहरेगा। इसलिए मनुष्य अपने आप को जाँच ले और इसी रीति से इस रोटी में से खाए, और इस कटोरे में से पीए। क्योंकि जो खाते–पीते समय प्रभु की देह को न पहिचाने, वह इस खाने और पीने से अपने ऊपर दण्ड लाता है। इसी कारण तुम में बहुत से निर्बल और रोगी हैं, और बहुत से सो भी गए। यदि हम अपने आप को जाँचते तो दण्ड न पाते। परन्तु प्रभु हमें दण्ड दे कर हमारी ताड़ना करता है, इसलिए कि हम संसार के साथ दोषी न ठहरें।

हम अपने जीवनों में पापों को जाँचते हैं और जब हम यह मान लेते हैं कि हमारे जीवन में पाप है, तो इसका अंगीकार कर उसे दूर कर देते हैं। स्वयं का इस तरह से न्याय किया जाना हमारे जीवन भर जारी रहना चाहिए। अन्यथा हम पिता की ताड़ना को झेलते हैं, जैसा कि इब्रानियों 12:3–15 बताया गया है ।

पौलुस प्रेरित ने यह जान लिया कि यदि वह अपने जीवन में पाप का न्याय न करे, तो वह मसीही सेवकाई को करने के अयोग्य ठहरेगा।

परन्तु मैं अपनी देह को मारता कूटता और वश में लाता हूँ, ऐसा न हो कि औरों को प्रचार करके मैं आप ही किसी रीति से निकम्मा ठहरूँ (1 कुरि. 9:27)।

मसीह का न्याय सिंहासन

मसीह के न्याय सिंहासन के बारे में विचार करते समय, हमें इसे एक अपराधिक मुकद्दमा नहीं, बल्कि एक पुष्प–प्रदर्शनी या एक दौड़ के आयोजन के रूप में देखना चाहिए। यहाँ पर प्रभु किसी को दोषी ठहराने का काम नहीं करेगा। यहाँ पर वह पुरस्कार (ईनाम) देगा! यह कचहरी का दृश्य नहीं, बल्कि लेखा लेने और प्रतिफल दिए जाने का समय होगा।

सभी विश्वासी न्याय के सिंहासन के समक्ष उपस्थित खड़े होंगे, इसे यूनानी में *बेमा* कहा गया है।

''हम सब के सब परमेश्वर के न्याय सिंहासन के सामने खड़े होंगे'' (रोमि. 14:10स)

यह स्पष्ट है कि यह विराट घटना अनन्तकाल में विश्वासियों के पुनरुत्थान के बाद घटेगी। पुनरूत्थान के बाद विश्वासी अपनी महिमामय देहें प्राप्त कर लेंगे।

परमेश्वर के लोगों के द्वारा की गई सेवाओं का मूल्यांकन किया जाएगा:

क्योंकि अवश्य है कि हम सब का हाल मसीह के न्याय आसन के सामने खुल जाए, कि हर एक व्यक्ति अपने–अपने भले–बुरे कामों का बदला जो उसने देह के द्वारा किए हों, पाए (2 कुरि. 5:10)।

कुछ लोग प्रतिफल पाएंगे और कुछ को प्रतिफल से वंचित होना पड़ेगा:

तो हर एक का काम प्रगट हो जाएगा; क्योंकि वह दिन उसे बताएगा, इसलिए कि आग के साथ प्रगट होगा और वह आग हर एक का काम परखेगी कि कैसा है। जिसका काम उस पर बना हुआ स्थिर रहेगा, वह मजदूरी पाएगा। यदि किसी का काम जल जाएगा, तो वह हानि उठाएगा (1 कुरि. 3:13–15अ)।

तौभी पद 15 का अन्तिम भाग यह स्पष्ट करता है कि एक (विश्वासी) व्यक्ति के उद्धार को इस न्याय के समय कोई खतरा नहीं होगा। यहाँ पर उसके प्रतिफल की हानि के विषय में कहा गया है।

इस्राएल का न्याय

किसी भी जाति को कभी भी इतना बैर, दुर्व्यवहार, सताव, और नरसंहार का सामना नहीं करना पड़ा है जितना यहूदी जाति को। दुखों, कष्टों, और मृत्यु के हृदय–विदारक लेखे–जोखे में *होलोकास्ट* (*नाज़ियों द्वारा लगभग 50 लाख यहूदियों को गैस चैम्बरों में बन्द कर किया गया नरसंहार*) तो एक अध्याय मात्र है।

तौभी, यह कहना दुखद है, कि इन बातों का अन्त अभी नहीं हुआ है। कलीसिया को

बादलों पर मसीह से मिलने के लिए उठाए जाने के बाद, इस्राएल और अन्यजातियों को सात वर्ष के क्लेशकाल का सामना करना पड़ेगा, जिसका अन्तिम आधा भाग उनके लिए अत्याधिक भयानक संकट का समय होगा, यिर्मयाह ने इसे ''याकूब का संकट'' कहा है (यिर्म. 30:7) और प्रभु ने वास्तव में ''बड़ा क्लेश'' शब्दों का प्रयोग किया है।

क्योंकि उस समय ऐसा भारी क्लेश होगा, जैसा जगत के आरम्भ से न अब तक हुआ और न कभी होगा (मत्ती 24:21)।

इस समय के समाप्त हो जाने पर, मसीह प्रगट होगा। जातियों को फिर से इकठ्ठा किया जाएगा और वह लोगों के सामने अपना पक्ष आमने-सामने उस स्थान पर रखेगा जिसे उसने ''लोगों के जंगल'' कहा है (यहे. 20:33-44)।

इस समय का सबसे प्रमुख पाप जिसका निपटारा किया जाएगा वह है क्लेशकाल के दौरान ख्रीस्ट-विरोधी की आराधना। प्रभु यीशु मसीह ने यह भविष्यद्वाणी की है कि अधिकांश जातियाँ इस भयानक मूर्तिपूजा में फँस जाएंगे:

मैं अपने पिता के नाम से आया हूँ, और तुम मुझे ग्रहण नहीं करते; यदि अन्य कोई अपने ही नाम से आए, तो उसे ग्रहण कर लोगे (यूह. 5:43)।

मलाकी ने पापों की एक अधिक लम्बी सूची प्रस्तुत की है जिनका राजा के द्वारा निपटारा किया जाएगा (मला. 2:1-3:5)।

यह स्पष्ट है कि जो भी मसीह-राजा के विरुद्ध विद्रोह करेगा वह राज्य के आरम्भ होने से पहले नाश कर दिया जाएगा, जबकि जितने उसके राज्य के आगे समर्पण करेंगे वे उसके महिमामय राज्य में प्रवेश करेंगे और 1000 वर्ष तक शान्ति और समृद्धि के साथ उसके राज्य का आनन्द उठाएंगे:

और इस रीति से सारा इस्राएल उद्धार पाएगा। जैसा लिखा है, ''छुड़ानेवाला सिय्योन से आएगा, और अभक्ति को याकूब से दूर करेगा; और उनके साथ मेरी यही वाचा होगी, जब कि मैं उनके पापों को दूर कर दूंगा'' (रोमि. 11:26-27)।

अन्यजातियों का न्याय

अन्यजातियों का न्याय किए जाने के सम्बन्ध में प्रमुख स्थल मत्ती 25:31-46 है। यह मुकद्दमा प्रभु यीशु के दूसरे आगमन पर होगा। इसका न्यायधीश मनुष्य का पुत्र स्वयं प्रभु यीशु मसीह होगा।

जब मनुष्य का पुत्र अपनी महिमा में आएगा और जब स्वर्गदूत उसके साथ आएँगे, तो वह अपनी महिमा के सिंहासन पर विराजमान होगा (पद 31)।

योएल भविष्यद्वक्ता ने स्पष्ट रूप से यह बताया है कि अन्यजातियों द्वारा इस्राएल के साथ किया गया व्यवहार इस न्याय का प्रमुख बिन्दु होगा (योएल 3:2)। जिन अन्यजातियों ने क्लेशकाल के दौरान मसीह के यहूदी भाइयों की रक्षा की और उनके साथ मित्रवत् व्यवहार किया उन्हें मत्ती 25 में भेड़ कहा गया है। जिन्होंने यहूदियों को खाना, पानी, कपड़े, पहुनाई से वंचित रखा, और जिन लोगों ने बीमारों और बन्दियों के साथ सामाजिक सम्पर्क नहीं रखा, उन्हें बकरी कहा गया है।

जो जातियाँ भेड़ ठहरेंगी वे ''उस राज्य के अधिकारी'' होंगे ''जो जगत के आदि से'' उनके ''लिए तैयार किया हुआ है।'' जो जातियाँ बकरी ठहरेंगी उन्हें यह दण्ड सुनाया जाएगा, ''हे स्रापित लोगो, मेरे सामने से उस अनन्त आग में चले जाओ, जो शैतान और उसके दूतों के लिये तैयार की गई है'' (पद 41)।

और ये अनन्त दण्ड भोगेंगे परन्तु धर्मी अनन्त जीवन में प्रवेश करेंगे (पद 46)।

जातियों[1] का उद्धार या उनके खो जाने के सम्बन्ध में कुछ लोगों को आपत्ति है। वे सोचते हैं कि उद्धार पूरी तरह से एक व्यक्तिगत विषय है। यह एक समस्या नहीं होनी चाहिए। सम्पूर्ण इतिहास में, परमेश्वर ने व्यक्तियों के साथ-साथ जातियों से भी व्यवहार किया है। यदि किसी देश या नगर के अधिकांश लोग परमेश्वर के विरुद्ध विद्रोही हो जाते हैं, तो उसका यह गुण है कि पहले वह अपने लोगों को छुटकारा देगा, उसके बाद शेष लोगों पर अपना क्रोध उण्डेलेगा। सदोम इसका एक उदाहरण है। और जलप्रलय भी, जिसका विस्तार बहुत बड़ा था।

स्वर्गदूतों का न्याय

हमारी जिज्ञासा को पूर्ण रीति से संतुष्ट किए बिना, बाइबल बताती है कि स्वर्ग से गिराए गए कुछ स्वर्गदूतों को बन्दी बना कर रखा गया है, जहाँ वे अन्तिम न्याय तक रहेंगे:

क्योंकि जब परमेश्वर ने उन स्वर्गदूतों को जिन्होंने पाप किया नहीं छोड़ा, पर नरक में भेजकर अन्धेरे कुण्डों में डाल दिया ताकि न्याय के दिन तक बन्दी रहें (2 पतरस 2:4)।

पर जिन स्वर्गदूतों ने अपने पद को स्थिर न रखा वरन अपने निज निवास को छोड़ दिया, उसने उनको भी उस भीषण दिन के न्याय के लिए अन्धकार में, जो सदा काल के लिए है, बन्धनों में रखा है (यहूदा 6)।

हम अच्छी तरह से सिर्फ इतना ही जानते हैं कि कुछ अन्य दुष्ट-स्वर्गदूत हैं (सामान्यत: उन्हें दुष्टात्मा कहा जाता है) जिनकी संख्या अब भी बहुत बड़ी है। स्वर्ग से गिराए गए इन सारे स्वर्गदूतों का न्याय कब होगा?

पृथ्वी पर अपने राज्य के दौरान, मसीह-राजा ''सारी प्रधानता और सारा अधिकार और

सामर्थ का अन्त कर'' देगा, और ''वह अपने बैरियों को अपने पाँवों तले'' ले आएगा (1 कुरि. 15:24–25)। नि:सन्देह यहाँ पर स्वर्गीय स्थानों की प्रधानताओं, और अधिकार, और आत्मिक दुष्टता को आधीन किया जाना भी शामिल है।

चूंकि विश्वासीगण मसीह के साथ मिलकर राज्य करेंगे, वे स्वर्गदूतों का न्याय करने में भी उसके सहभागी बनेंगे। शायद यह 1 कुरिन्थियों 6:3 में पौलुस द्वारा रखे गए उलझन भरे इस प्रश्न को स्पष्ट करता है: ''क्या तुम नहीं जानते कि हम स्वर्गदूतों का न्याय करेंगे?''

शैतान का अन्तिम न्याय हजार वर्ष (सहस्त्राब्दी–राज्य) के अन्त में और बड़े श्वेत सिंहासन (के न्याय) से पहले किया जाएगा:

उन का भरमानेवाला शैतान आग और गन्धक की उस झील में, जिस में वह पशु और झूठा भविष्यद्वक्ता होगा, डाल दिया जाएगा; और वे रात–दिन युगानुयुग पीड़ा में तड़पते रहेंगे (प्रका. 20:10)।

चूंकि स्वर्ग से गिराए गए स्वर्गदूत शैतान को अपना अगुवा मानते हैं, इसलिए यह मान लेना उचित है कि वे परमेश्वर के विरुद्ध उसके विद्रोह में सहभागी बनने के दोषी ठहराए जाएंगे (यशा. 14:12–17; यहे. 28:12–19) और उसके साथ आग की झील में उसके अन्त के भी सहभागी बनाए जाएंगे।

बड़े श्वेत सिंहासन का न्याय

यूहन्ना ने ''एक बड़ा श्वेत सिंहासन और उनको, जो उस पर बैठा हुआ है, देखा; उसके सामने से पृथ्वी और आकाश भाग गए'' (प्रका.20:11)। यह सिंहासन उस पर बैठने वाले और उसके सामने निपटाए जाने वाले भारी भरकम मुद्दों के कारण बड़ा है। इसका श्वेत होना इसके न्याय की शुद्धता को दर्शाता है। यह न्याय अनन्तकाल में होगा, इससे पहले यह संसार भीषण गर्मी से पिघल चुका होगा (2 पतरस 3:10)।

''फिर मैंने छोटे बड़े सब मरे हुओं को सिंहासन के सामने खड़े हुए देखा'' (प्रका 20:12अ)। ये सब समय के दुष्ट (उद्धार न पाए हुए) मृतक हैं। वे यहाँ पर इस कारण से खड़े हैं क्योंकि उन्होंने प्रभु पर विश्वास नहीं किया। अविश्वास एक बड़ा और घृणित पाप है।

परन्तु जो विश्वास नहीं करता, वह दोषी ठहर चुका; इसलिए कि उसने परमेश्वर के एकलौते पुत्र के नाम पर विश्वास नहीं किया (यूह. 3:18ब)।

परन्तु जो पुत्र की नहीं मानता, वह जीवन को नहीं देखेगा, परन्तु परमेश्वर का क्रोध उस पर रहता है (यूह. 3:36ब)।

अब यह निर्धारित करने के लिए कि उन्हें कितना–कितना दण्ड दिया जाएगा दो पुस्तकें खोली गईं:

और पुस्तकें खोली गईं, अर्थात्, जीवन की पुस्तक; और जैसा उन पुस्तकों में लिखा हुआ था, वैसे ही उनके कामों के अनुसार मरे हुओं का न्याय किया गया (प्रका, 20:12ब)।

उनके नाश पर इस तथ्य के द्वारा मुहर लगा दी गई कि उनके नाम जीवन की पुस्तक में नहीं पाए जाते, जिसका अर्थ यह है कि उन्होंने कभी मन नहीं फिराया और न मसीह को अपना उद्धारकर्ता मानते हुए उस पर विश्वास किया। परन्तु नरक में भी अलग–अलग दण्ड दिया जाएगा जिस प्रकार से स्वर्ग में अलग– अलग प्रतिफल दिया जाएगा। उनके कार्य उनके दोष के माप को निर्धारित करेंगे। उदाहरण के लिए, एक आदतन बलात्कारी अपने उस सभ्य पड़ोसी की तुलना में अधिक दण्ड पाएगा जिसने एक अच्छा जीवन तो व्यतीत किया (परन्तु यह दुखद है कि उसने मन नहीं फिराया)।

देह का प्रयोग यहाँ पर मृत्यु के रूप में, और आत्मा और प्राण का अधोलोक के रूप में किया गया है – दूसरे शब्दों में, सम्पूर्ण व्यक्तित्व आग की झील में डाल दिया जाएगा:

मृत्यु और अधोलोक आग की झील में डाले गए। यह आग की झील दूसरी मृत्यु है। (प्रका. 20:14)।

किसी भी विश्वासी को बड़े श्वेत सिंहासन के न्याय का सामना नहीं करना पड़ेगा। यह सिर्फ उन लोगों के लिए है जिन्होंने परमेश्वर द्वारा उनके सामने रखे गए दया के प्रस्ताव को लात मार दिया और इसलिए उनके नाम जीवन की पुस्तकों में लिखे हुए नहीं हैं।

अन्त्य टिप्पणी

1. इसके अतिरिक्त, यह भी ध्यान रखना आवश्यक है कि जिस शब्द का अनुवाद ''जाति'' *(एथने)* किया गया है उस शब्द का अनुवाद ''अन्यजाति,'' और ''राष्ट्र'' भी किया जा सकता है।

अध्याय 24

अधोलोक और नर्क

अधोलोक और नर्क के बीच में अन्तर है। नया नियम की मूल भाषा यूनानी में दोनों के लिए अलग–अलग शब्दों का प्रयोग किया गया है। उन्हें एक– दूसरे के बदले में प्रयोग में नहीं लाया जा सकता[1]। अधोलोक अस्थायी है जबकि नर्क अनन्त है। अधोलोक और पुराना नियम में प्रयोग में लाया गया *शियोल* दोनों एक ही हैं, जबकि नर्क और *गेहेन्ना* या आग की झील एक ही हैं। अधोलोक नगर की एक ऐसी जेल के समान है जहाँ बन्दियों को मुकद्दमें के दौरान रखा जाता है। यह कुछ समय के लिए रखे जाने का एक स्थान है। नर्क वह कारावास है जहाँ सजा को लागू किया जाता है।

अधोलोक

सबसे पहले, आइये हम अधोलोक के विषय पर चर्चा करें। कुछ अवसरों पर ऐसा लगता है कि यह शब्द किसी दुखभोग के स्थान के लिए प्रयोग किया गया है, कभी यह क्रब के लिए और कभी देहरहित अवस्था के लिए। यदि यह कोई स्थान है, तो इस बात का कोई संकेत नहीं मिलता कि यह कहाँ है। अधोलोक के विषय में प्रमुख रूप से वर्णन लूका 16:19–31 में किया गया है जहाँ हम यह पढ़ते हैं कि एक अविश्वासी धनी ने अधोलोक में अपनी आँख उठा कर देखा। स्पष्ट है कि इस व्यक्ति की देह कब्र में थी और उसका प्राण अधोलोक में था। तौभी ऐसी चैतन्य अवस्था में, उसके पास बुद्धि, स्मरणशक्ति, और शक्ति थी कि वह जम्हाई लेती गहराई से बाहर दृष्टि कर स्वर्ग या इब्राहीम की गोद को देख सकता था। वह गर्मी और प्यास के कारण वेदना का अनुभव कर रहा था। उसमें सुसमाचार प्रचार का उत्साह आ गया जैसा कि वह चाहता था कि उसके पाँच भाइयों को जाकर कोई गवाही दे कि उनका अन्त भी इस भयानक पीड़ा के स्थान के रूप में न हो। यहाँ पर अधोलोक को भयानक पीड़ा के स्थान के रूप में प्रस्तुत किया गया है। यहाँ से बच पाना असम्भव है।

परन्तु प्रेरित 2:27 में, यह किसी स्थान नहीं, बल्कि एक अवस्था या स्थिति के रूप में वर्णित किया गया है। प्रेरित पतरस भजन 16:10 को उद्धरित करता है और इसे मसीह के पुनरुत्थान से जोड़ता है।

क्योंकि तू मेरे प्राण को अधोलोक में न छोड़ेगा, न अपने पवित्र भक्त को सड़ने देगा।

यहाँ पर अधोलोक कोई स्थान नहीं हो सकता क्योंकि जब प्रभु की मृत्यु हुई, तो उसका आत्मा और प्राण स्वर्गलोक[2] को गया, जो तीसरा स्वर्ग भी कहा जाता है[3], यह परमेश्वर का

निवासस्थान है। परन्तु यह एक देहरहित अवस्था को भी दर्शा सकता है। परमेश्वर ने उसके प्राण को उसी अवस्था में रहने की अनुमति नहीं दी, न ही उसने अपने पवित्र जन, अर्थात्, उद्धारकर्ता की देह को सड़ने दिया। ''अपने पवित्र जन'' अवश्य ही देह को दर्शाता है क्योंकि मनुष्य का सिर्फ यही भाग मृत्यु के समय सड़ता है। पतरस बेधड़क हो कर यह बताता है कि प्रभु का आत्मा अधोलोक में नहीं छोड़ा गया (प्रेरित 2:31)। तीसरे दिन उसके आत्मा और प्राण का उसकी महिमा की देह के साथ फिर से मिलन हुआ।

एक अन्य स्थल जो अधोलोक को एक देहरहित अवस्था के रूप में प्रस्तुत करता है वह है प्रकाशितवाक्य 20:13–14:

समुद्र ने उन मरे हुओं को जो उसमें थे दे दिया, और मृत्यु और अधोलोक ने उन मरे हुओं को जो उन में थे दे दिया; और उन में से हर एक के कामों के अनुसार उनका न्याय किया गया। मृत्यु और अधोलोक आग की झील में डाले गए। यह आग की झील दूसरी मृत्यु है; और जिस किसी का नाम जीवन की पुस्तक में लिखा हुआ न मिला, वह आग की झील में डाला गया।

यह दृश्य (उद्धार न पाए हुए) दुष्ट के अन्तिम न्याय का है। प्रभु यीशु मसीह न्यायधीश है, जिसके पास मृत्यु और अधोलोक की कुंजियाँ हैं (प्रका. 1:18)। मृत्यु यहाँ पर उनकी देहों को दर्शाती है जबकि अधोलोक उनकी आत्माओं और उनके प्राणों को दर्शाता है। सभी अविश्वासियों की आत्मा और उनके प्राण बड़े श्वेत सिंहासन के न्याय के अवसर पर उनकी देहों के साथ फिर मिल जाएंगे, और पूरा का पूरा व्यक्तित्व आग की झील में डाल दिया जाएगा।

एक और स्थल जहाँ ऐसा लगता है कि अधोलोक का अर्थ देहरहित अवस्था है, वह है 1 कुरिन्थियों 15:55:

हे मृत्यु, तेरी जय कहाँ रही? हे मृत्यु, तेरा डंक कहाँ रहा?

यह कटाक्ष का एक गीत है जिसे विश्वासी लोग मसीह के आगमन के अवसर पर गाएंगे। जब उनकी देहें कब्रों से जिलाई जाएंगी, वे मृत्यु को यह स्मरण दिलाएंगे कि, हाँ इसने उन्हें कुछ समय तक रोक तो रखा, परन्तु उन्हें समा न सका! और यद्यपि अधोलोक ने उनकी आत्माओं और प्राणों को उनकी देहों से मिलने से रोक रखा, परन्तु अधोलोक की यह जय थोड़े समय की थी।

प्रकाशितवाक्य 6:8 में, एक पीला सा घोड़ा जिसके सवार का नाम मृत्यु है और उसके पीछे–पीछे अधोलोक है, का वर्णन किया गया है। पद के शेष भाग में यह स्पष्ट किया गया है कि मृत्यु और अधोलोक को यह अधिकार दिया गया कि वे पृथ्वी की एक चौथाई

जनसंख्या को मार डालें। एक बार फिर से, मृत्यु और अधोलोक प्रतीकात्मक रूप से आत्मा और प्राण का शरीर से अलग होने को दर्शाते हैं, यही मृत्यु है।

कुछ अवसरों पर अधोलोक शब्द का प्रयोग अपमान की गहराई का चित्रण करने के लिए (रूपक अलंकार के रूप में) किया गया है। उदाहरण के लिए, कफरनहूम नगर को विशेषाधिकार दे कर स्वर्ग पर उठा लिया गया था। परन्तु यह परमेश्वर के पुत्र की उपस्थिति का मान न रख सका, और इसलिए वह लज्जा और विनाश के अधोलोक में नीचा किया जाएगा (मत्ती 11:23; लूका 10:15)।

सिर्फ मत्ती 16:18 में अधोलोक का एक अन्य हवाला पाया जाता है जहाँ प्रभु यीशु ने यह गारंटी दी है कि अधोलोक के फाटक उसके द्वारा बनाई गई कलीसिया पर प्रबल न हो सकेंगे। कलीसिया पर किया गया कोई भी आक्रमण अन्तिम विजय प्राप्त नहीं कर सकेगा, जबकि अधोलोक के विरुद्ध कलीसिया की विजय सुनिश्चित है।

अधोलोक

नया नियम में नर्क शब्द का प्रयोग बारह बार किया गया है, जिसमें से ग्यारह बार यह प्रभु यीशु मसीह के मुँह से निकला है, जो सब लोगों पर सबसे अधिक तरस खाता है। बाहरवां प्रयोग प्रभु यीशु मसीह के भाई याकूब के द्वारा किया गया है।

हम इस भयावह स्थान के बारे में क्या जान सकते हैं? यह मनुष्य के लिए नहीं, बल्कि शैतान और उसके दूतों के लिए तैयार किया गया था (मत्ती 25:41)। परमेश्वर ने किसी को भी इस न्याय का सामना करने के लिए नहीं चुना है; परमेश्वर के अनुग्रह को ठुकरा देने के द्वारा लोग स्वयं ही अपने लिए नर्क का चुनाव कर लेते हैं। यह एक ऐसा स्थान है जहाँ रोना, विलाप करना, और दाँतों का पीसना होता है (मत्ती 8:12; 22:13; 24:51; 25:30; लूका 13:28)। नर्क में रहने वालों के विषय में यह कहा गया है कि उनका कीड़ा (यन्त्रणा) नहीं मरता (नहीं समाप्त होती) और आग नहीं बुझती (मत्ती 9:48)। उनकी यन्त्रणा का धुआं हमेशा के लिए उठता रहता है (प्रका. 14:11)।

प्रभु यीशु ने बार-बार जोर दिया है कि अपंग शरीर लिए हुए जीवन में प्रवेश करना पूर्ण शरीर के साथ नर्क में झोंके जाने से काफी अच्छा है (मत्ती 5:29-30; 18:9; मर. 9:43, 45,47)। इसका अर्थ यह नहीं है कि स्वर्ग में लोग अपंग भी रहेंगे। बल्कि इसका अर्थ यह है कि अपने शरीर की अभिलाषाओं के प्रति सख्त रह कर अनुशासित रहना इसकी लालसाओं को पूरा कर सदा के लिए नाश हो जाने से बेहतर है।

विश्वासियों को शरीर का नाश करने वाले[4] से नहीं, बल्कि उससे डरना चाहिए जो शरीर

और आत्मा दोनों को ही नर्क में नाश कर सकता है (मत्ती 10:28; लूका 12:5)।

जो कोई अपने भाई को मूर्ख कहते हुए उसके प्रति स्थायी बैर दर्शाता है वह नर्क की आग में डाला जा सकता है (मत्ती 5:22)। बुरी वाणी अपने आप में ही नारकीय है (याकूब 3:6)। फरीसियों के पाप ने उन्हें नर्क की एक योग्य प्रजा बना दिया था (मत्ती 23:15,33)।

टारटरोज़/टारटोरस

यूनानी शब्द *टारटरोज़*[5] का अनुवाद 2 पतरस 2:4 में नरक किया गया है, यहाँ पर ऐसा लगता है कि पाप करने वाले स्वर्ग से गिराए गए स्वर्गदूतों के लिए एक विशेष अर्थ है। *टारटरोज़* में उन्हें अंधकार की सांकलों से जकड़ कर न्याय के लिए बन्दी बना कर रखा जाएगा।

पापशोधन स्थान *(परगेटोरी)*

रोमन कैथोलिक कलीसिया के अनुसार, ''पाप शोधन स्थान'' मृत्यु के बाद की एक ऐसी अवस्था या एक ऐसा स्थान है जहाँ एक व्यक्ति जो परमेश्वर के अनुग्रह में हो कर मरा वह पाप के कारण मिलने वाले ''अस्थायी दण्ड'' के लिए प्रायश्चित कर स्वर्ग में प्रवेश पा सकता है। पापशोधन स्थान की आग के विषय में यह कहा गया है कि इसमें प्राण को शुद्ध करने का प्रभाव रखती है। ऐसा भी कहा जाता है कि पापशोधन स्थान में रहने की अवधि को उस व्यक्ति के बदले में जीवतों की प्रार्थनाओं और आराधना के द्वारा कम किया जा सकता है। बाइबल में इस प्रकार की किसी अवस्था या स्थान का उल्लेख नहीं पाया जाता। इस शब्द का प्रयोग बाइबल में कहीं भी नहीं किया गया है और इस प्रकार की शिक्षा हमारे प्रभु यीशु मसीह में अनुग्रह से विश्वास के द्वारा पूर्ण उद्धार की सच्चाई से पूरी तरह विपरीत है।

अन्त्य टिप्पणी

1. बाइबल के कुछ अनुवाद नरक और अधोलोक के बीच अन्तर कर पाने में असफल रहें है। उदाहरण के लिए, किंग जेम्स वर्ज़न में अधोलोक के लिए प्रयोग में लाया गया शब्द सिवाय 1 कुरिन्थियों 15:55 के सिवाय हर बार नरक अनुवाद किया गया है, 1 कुरिन्थियों में इसका अनुवाद कब्र किया गया है। अधोलोक या *हेदेस* एक यूनानी शब्द से आया है जिसका अर्थ ''अदृश्य'' (संसार) होता है। नरक का अंग्रेजी *हैल* एक एंग्लो–सैक्सन शब्द है जो इब्रानी शब्द *गेहेन्ना* का अनुवाद है। अपने सुनने वालों के सामने अनन्त दण्ड की भयावहता का चित्रण करने के लिए हमारे प्रभु ने एक ऐसे शब्द का प्रयोग किया जिसका अर्थ कूड़े–करकट को लगातार जलाते रहने का

स्थान है।

2. लूका 23:43।

3. 2 कुरि. 12:2 ।

4. नाश का अर्थ पूरी तरह से समाप्त हो जाना या अस्तित्व का समाप्त हो जाना नहीं, बल्कि कल्याण की हानि, उस उद्देश्य का पूरा न होना जिसके लिए उस व्यक्ति की सृष्टि की गई, होता है। उदाहरण के लिए, दाखरस की जो थैली मत्ती 9:1 में फटी, वह पूरी तरह से समाप्त नहीं हो गई, परन्तु जिस उद्देश्य के लिए यह तैयार की गई थी उस उद्देश्य को पूरा करने की दृष्टि से यह व्यर्थ हो गई।

5. इसका लैटिन उच्चारण *टारटोरस* होता है।

अध्याय 25

पवित्रशास्त्र के भेद

नया नियम में भेदों की एक श्रृंखला पाई जाती है। इन भेदों के साथ जोखिम यह नहीं है कि हम इनके बीच अन्तर न कर पाएं, परन्तु यह कि हम इन्हें समझ पाने में असफल न हो जाएं। इसलिए इस अध्याय में हम विभिन्न भेदों के अर्थों को सारांश में प्रस्तुत कर रहे हैं।

परिभाषा

भेद एक ऐसी सच्चाई है जिसे पहले कभी प्रगट न किया गया हो, जिस तक मनुष्य अपनी बुद्धि से नहीं पहुँच सकता, और जो अब परमेश्वर के द्वारा मनुष्य पर प्रगट कर दिया गया हो। अंग्रेजी में इसे *मिस्ट्री* कहा जाता है जो मूल यूनानी भाषा में प्रयोग में लाए गए शब्द *मिस्टेरियोन* का अंग्रेजी रूप है।

स्वर्ग के राज्य के भेद

मत्ती 13:3–50

मत्ती 13:11 में हम ''स्वर्ग के राज्य के भेदों'' के विषय में पढ़ते हैं। उन्हें इस अध्याय में सात दृष्टान्तों के रूप में प्रस्तुत किया गया है।

मत्ती के आरम्भिक अध्यायों में हम यह देखते हैं कि प्रभु यीशु अपने आप को इस्राएल के मसीह–राजा के रूप में प्रस्तुत कर रहा है। परन्तु अध्याय 12 में धार्मिक अगुवे ने उस पर यह दोष लगाते हुए उसे ठुकरा दिया कि वह बालजबूल (शैतान) की सहायता से आश्चर्यकर्म दिखाता है। अब जबकि राजा को ठुकरा दिया गया, राज्य एक दूसरा रूप ले लेगा। इसी के विषय में मत्ती 13 में बताया गया है। ये सात दृष्टांत स्वर्ग के राज्य के अन्तरिम रूप का वर्णन करते हैं – राजा को ठुकराए जाने के समय से लेकर पृथ्वी पर राज्य करने के लिए उसकी वापसी तक का रूप। राजा अनुपस्थित है, परन्तु उसका राज्य हर उस स्थान में पाया जाता है जहाँ लोग अपने आप को उसकी प्रजा कहते हैं। इसमें सिर्फ मुँह से अंगीकार करने वाले (नामधारी) और सच्चे विश्वासी दोनों शामिल हैं। और अवश्य ही, यह वही अवधि है जिसमें हम सब अभी रह रहे हैं।

इस अन्तरिम अवधि के समापन पर गेहूँ को जंगली दानों से अलग किया जाएगा, सच्चे विश्वासियों को झूठे (नकली या नामधारी) विश्वासियों से। राजा की सच्ची प्रजा उसके हजार वर्ष के राज्य की आशीषों का आनन्द उठाएगी; झूठों का नाश कर दिया जाएगा।

इस्राएल के अंधेपन का भेद

रोमियों 11:25

इस्राएल द्वारा राजा को ठुकराए जाने के कारण, परमेश्वर ने न्याय के दृष्टिकोण से यहूदी जाति पर अंधेपन को आने दिया। इससे आंशिक रूप से यह बात स्पष्ट होती है कि यहूदी लोगों को प्रभु यीशु को मसीहा के रूप में स्वीकार करने में बड़ी कठिनाई क्यों होती है, और क्यों अपेक्षाकृत बहुत कम संख्या में यहूदी उद्धार पा रहे हैं। परन्तु यह अन्धापन न तो पूर्ण अन्धापन है और न हमेशा के लिए बना रहने वाला। बहुत से यहूदी लोग (विशेष कर उन देशों में जहाँ उनके साथ अच्छा व्यवहार किया जाता है) मसीह को उस व्यक्ति के रूप में देख पा रहे हैं जिसके विषय में भविष्यद्वक्ताओं ने कहा था। और यह अन्धापन सिर्फ तब तक कायम रहेगा जब तक ''अन्यजातियों की पूर्णता'' न हो जाए, अर्थात्, जब तक प्रभु अपनी बहुसंख्य अन्यजाति दुल्हन (कलीसिया) को अपने साथ अपने घर न ले जाए। उसके बाद इस्राएल से एक छोटा सा विश्वासी झुण्ड मसीह की ओर फिरेगा।

कलीसिया को मसीह से मिलने के लिए बादलों पर उठाए जाने का भेद

1 कुरिन्थियों 15:51–52

मानव इतिहास में इस बिन्दु तक हमेशा ही ऐसा माना जाता रहा कि आज नहीं तो कल हर एक व्यक्ति की मृत्यु होना निश्चित है। परन्तु अब पौलुस प्रेरित एक चौंकाने वाली घोषणा करता है कि सभी विश्वासी नहीं मरेंगे। जो मसीही विश्वासी कलीसिया के बादलों पर मसीह से मिलने के लिए उठाए जाने के समय तक जीवित रहेंगे वे बिना मरे ही स्वर्ग को चले जाएंगे। वे बदल जाएंगे – अर्थात्, वे महिमा की देह प्राप्त करेंगे – और वे कभी मृत्यु का अनुभव नहीं करेंगे। जितने मसीह में हो कर मरे हैं वे जिलाए जाएंगे और जीवित (और रूपान्तरित) विश्वासियों के साथ स्वर्ग को ले जाए जाएंगे। इस विषय में अतिरिक्त विवरण 1 थिस्सलुनीकियों 4:13–18 में पाया जाता है।

कलीसिया का भेद

रोमियों 16:25; इफिसियों 3:4-5

कलीसिया एक ऐसी सच्चाई है जिसे सृष्टि के समय से ही एक भेद के रूप में रखा गया था (रोमि. 16:25) परन्तु यह भेद नया नियम समय के प्रेरितों और भविष्यद्वक्ताओं पर प्रगट किया गया (इफि. 3:5)। इस भेद में निम्नलिखित महत्वपूर्ण विशेषताएं पाई जाती हैं:

1. मसीह इसका सिर है (कुलु. 1:)।
2. सभी विश्वासी इसके अंग है (1 कुरि. 12:13)।
3. यह सच्चाई कि अन्यजाति विश्वासी भी यहूदी विश्वासियों के बराबर ही इस बात में सहभागी हैं कि मसीह उनके लिए भी महिमा की आशा है, और यह कि यहूदी और अन्यजाति के बीच का बैर मसीह में समाप्त कर दिया गया है (इफि. 3:6; कुलु. 1:26-27; इफि. 2:14-15)।
4. कलीसिया मसीह की देह है (1 कुरि. 12:12-13)।
5. कलीसिया मसीह की दुल्हन है (इफि. 5:25-27; 31-32)।
6. कलीसिया परमेश्वर के नाना प्रकार के ज्ञान का उन प्रधानों और अधिकारियों पर जो स्वर्गीय स्थानों में है, प्रगटीकरण है (इफि.3:10)।
7. परमेश्वर का उद्देश्य है कि वह मसीह को छुटकारा पाए हुए विश्व का सिर बनाए (इफि. 1:9-10), जिसमें कलीसिया उसकी दुल्हन के रूप में उसके साथ राज्य करे और सदा तक उसकी महिमा में सहभागी हो।

कुलुस्सियों 1:27 में ''अन्यजातियों के उस भेद'' की परिभाषा ''मसीह जो महिमा की आशा है तुम में'' के रूप में दी गई है। यह कलीसिया का ही भेद है; यहाँ इस बात पर जोर दिया गया है कि मसीह विश्वास करने वाले यहूदियों के समान ही विश्वास करने वाले अन्यजातियों के लिए भी महिमा की आशा है - अब सभी मसीही विश्वासी मसीह में परमेश्वर की दृष्टि में एक समान देखे जाते हैं।

कुलुस्सियों 2:2 में परमेश्वर का भेद मसीह के रूप में पहचाना गया है। हम ऐसा समझते हैं कि यह मसीह की देह के भेद के विषय में कहा गया है, जिसका सिर स्वयं मसीह है और सब विश्वासी मिलकर देह बनते हैं।

इफिसियों 6:19 और कुलुस्सियों 4:3 कुछ अन्य स्थल हैं जहाँ कलीसिया के भेद के विषय में कहा गया है। एक अर्थ में कलीसिया का भेद पवित्रशास्त्र के प्रगटीकरण का शिखर है। पौलुस प्रेरित ने परमेश्वर के वचन को पूरा किया जब उसने इस सच्चाई का जिसे उसे

सौंपा गया था, प्रचार किया (कुलु. 1:25)। यह समय-क्रम के अनुसार बाइबल का अन्तिम अध्याय नहीं था परन्तु, जहाँ तक नई महत्वपूर्ण सच्चाई के प्रगटीकरण की बात है, यह उसका चरम था।

अधर्म का भेद

2 थिस्सलुनीकियों 2:7-8

''अधर्म का भेद'' के सम्बन्ध में एक मात्र उल्लेख 2 थिस्सलुनीकियों 2:7-8 में पाया जाता है। यहाँ पर पौलुस कहता है कि ''अधर्म का भेद'' अब भी कार्य करता जाता है; पर अभी एक रोकने वाला है, और जब तक वह दूर न हो जाए, वह रोके रहेगा। और वह अधर्मी प्रगट होगा . . .।'' कलीसिया के आरम्भिक दिनों में भी अधर्म की आत्मा कार्य कर रही थी। ख्रीस्ट-विरोधियों की संख्या बहुत थी। परन्तु ''एक रोकने वाला'' (एक अनाम व्यक्तित्व, हम विश्वास करते हैं कि यह पवित्र आत्मा है) ने अधर्म को पूरी तरह से विकसित होने से रोक दिया। जब यह ''रोकने वाला'' व्यक्ति हटा दिया जाएगा (अर्थात्, जब कलीसिया को बादलों पर मसीह से मिलने के लिए उठाए जाने के समय पवित्र आत्मा का स्थायी वास इस पृथ्वी पर से हटा लिया जाएगा), तब वह अधर्मी, जो ख्रीष्ट विरोधी है, इतिहास के मंच पर प्रगट हो जाएगा। वह पाप और अधर्म का साकार रूप होगा। उसके आने से पहले संसार ने कभी भी किसी व्यक्ति को ऐसी घोर दुष्टता के केन्द्र के रूप में नहीं देखा होगा।

विश्वास का भेद

1 तीमुथियुस 3:9

''विश्वास के भेद'' मसीही सिद्धान्त की विषय-वस्तु को कहा गया है, या जिसे हम मसीही विश्वास कहते हैं। इसे इसलिए भेद कहा गया है क्योंकि इसमें पाई जाने वाली बहुत सी सच्चाइयाँ पुराना नियम समय में पूरी तरह से अज्ञात थीं।

भक्ति का भेद

1 तीमु. 3:16

1 तीमु. 3:16 में लिखा है:

इसमें कोई सन्देह नहीं कि भक्ति का भेद गम्भीर है, अर्थात्, वह जो शरीर में प्रगट हुआ, आत्मा में धर्मी ठहरा, स्वर्गदूतों को दिखाई दिया, अन्यजातियों में उसका प्रचार हुआ, जगत में उस पर विश्वास किया गया, और महिमा में ऊपर उठाया गया।

त्रिएक परमेश्वर के जिस व्यक्ति का यहाँ पर वर्णन किया गया है वह वर्णन सिर्फ एक व्यक्ति पर लागू हो सकता है – हमारा प्रभु यीशु मसीह। जगत में मसीह के आने से पहले तक किसी ने भी कभी भी किसी मनुष्य के जीवन में सिद्ध भक्ति को नहीं देखा था। परन्तु प्रभु यीशु आया और इस बात का एक व्यावहारिक उदाहरण सामने रखा कि एक सिद्ध भक्ति धारण किया हुआ मनुष्य कैसा होता है।

जब प्रेरित पौलुस यह कहता है कि भक्ति का भेद ''गम्भीर'' (यूनानी भाषा में – *मेगा*) है, तो यहाँ पर उसका अर्थ यह नहीं है कि यह अत्यंत रहस्यमयी है, बल्कि यह कि यह मसीह के व्यक्तित्व की सच्चाई के अद्‌भुत और आश्चर्यजनक गुणों को दर्शाता है।

भक्ति का भेद और अधर्म का भेद दोनों एक दूसरे के विरुद्धार्थी हैं। भक्ति का भेद एक ऐसे व्यक्ति को दर्शाता है जो पूरी तरह से भक्ति का साकार रूप है। अधर्म का भेद एक ऐसे व्यक्ति को दर्शाता है जो पाप का साकार रूप है। यह मसीह और ख्रीष्ट–विरोधी के बीच का तीक्ष्ण अन्तर है।

सात तारों का भेद

प्रकाशितवाक्य 1:20

यहाँ भेद की स्पष्ट परिभाषा दी गई है। यूहन्ना के दर्शन में देखे गए सात तारे एशिया माइनर की सात कलीसियाओं के स्वर्गदूत (या सन्देशवाहक) हैं। सोने की सात दीवटें सात कलीसियाएं हैं। प्रकाशितवाक्य की पुस्तक के अगले दो अध्यायों (2 और 3) में, प्रभु ने सातों कलीसियाओं के दूतों को सम्बोधित किया है। इन पत्रों को तीन विभिन्न अर्थों में समझा जा सकता है।

1. वे सात वास्तविक पत्र हैं जो सात वास्तविक कलीसियाओं को लिखे गए हैं, जो इतिहास में यूहन्ना के समय में सचमुच में अस्तित्व में थीं। लगभग सभी लोग इस मत को सही मानते हैं।
2. ये पत्र उस परिस्थिति का वर्णन करते हैं जो संसार भर में अपने इतिहास के किसी भी समय–विशेष में पाई जा सकती है। इस मत को भी बाइबल के अधिकांश विद्वान स्वीकार करते हैं।
3. ये पत्र प्रेरितों के समय से लेकर कलीसिया–युग के समापन तक मुँह से प्रभु यीशु को अंगीकार करने वाली कलीसिया की परिस्थितियों का एक चित्रण करते हैं। यद्यपि अनेक लोग इस मत को स्वीकार नहीं करते, परन्तु अनेक समानताएं ध्यान देने योग्य हैं।

परमेश्वर का भेद

प्रका. 10:7

जब प्रकाशितवाक्य की सात तुरहियाँ फूंकी जाएंगी, तो परमेश्वर का भेद पूर्ण हो जाएगा। सातवीं तुरही के शब्द के साथ ही स्वर्ग में बड़े-बड़े शब्द होने लगेंगे कि ''जगत का राज्य हमारे प्रभु का, और उसके मसीह का हो गया'' (प्रका.11:15)। इससे हमें यह ज्ञात होता है कि सातवीं तुरही का शब्द महाक्लेशकाल के अन्त में सुनाई देगा, जब मसीह पृथ्वी पर राज्य करने को वापस आएगा (प्रका. 11:17)। इस अवसर पर क्लेशकाल के समय के प्रभु के विश्वासियों को प्रतिफल दिया जाएगा और उसके शत्रु नाश कर दिए जाएंगे (पद 18)।

तब परमेश्वर का भेद पूरा हो जाएगा। जो बुराई लगातार बनी हुई थी और ऐसा लग रहा था कि यह विजयी होगी अनन्त: परास्त कर दी जाएगी। ऐसा लगना समाप्त हो जाएगा कि परमेश्वर मनुष्य की दुष्टता को अनदेखा कर रहा है और वह इसे लेकर निष्क्रिय है। जैसा कि ए.डब्ल्यू. क्रिसवेल ने कहा है, ''प्रभु द्वारा राज्य को अपने नियंत्रण में लेने में और पृथ्वी पर धार्मिकता स्थापित करने में की जा रही देरी अब समाप्त हो जाएगी।'' एफ.डब्ल्यू. ग्रांट ने इसे इस तरह से कहा है, ''परमेश्वर का भेद अब पूरी तरह से समाप्त हो गया; परमेश्वर की महिमा अब सूर्य की तरह चमक रही है; विश्वास को पूरी तरह से निर्दोष ठहराया गया, सन्देह की कुड़कुड़ाहट अब हमेशा के लिए शान्त कर दी गई।''

बाबुल का भेद

प्रका. 17:5-7

बड़ा बाबुल का चित्रण प्रकाशितवाक्य 17 में सात सिरों और दस सींगों वाले एक पशु पर बैठी वेश्या के रूप में किया गया है। उसे ''भेद बड़ा बाबुल पृथ्वी की वेश्याओं और घृणित वस्तुओं की माता'' कहा गया है। भेद का स्पष्टीकरण 8-18 पदों में दिया गया है। स्त्री एक बड़ा नगर है जो पृथ्वी के राजाओं पर राज्य करता है (पद 18)। पशु वह साम्राज्य है जो एक समय अस्तित्व में था, जिसका अस्तित्व फिर समाप्त हो गया, यह फिर से अस्तित्व में आएगा, और नाश कर दिया जाएगा (पद 18)। सात सिर इस साम्राज्य के सात राजा हैं (पद 9)। दस सींग दस राजा हैं जो इस साम्राज्य के साथ मिल कर एक संघ बनाएंगे (पद 12)। वेश्या कुछ समय तक पशु की पीठ पर सवार रहेगी और फिर इसके द्वारा नाश कर दी जाएगी (पद 16)। अन्तत: साम्राज्य प्रभु के द्वारा नाश कर दिया जाएगा (पद 14)।

इस भेद की व्याख्या हम इस तरह से करते हैं। स्त्री एक बड़े धार्मिक और आर्थिक तंत्र को दर्शाती है जिसका मुख्यालय रोम में होगा; यह संसार भर में फैली एक कलीसिया होगी

जिसके पास अकूत आर्थिक संसाधन होंगे। पशु दस राज्यों के रूप में फिर से अस्तित्व में लाए गए रोमी साम्राज्य को दर्शाता है, यह यूरोपीय समुदाय की भोगौलिक रेखा से सटा हुआ होगा।

कुछ समय तक इस विश्वव्यापी कलीसिया का सहयोग करने के बाद, फिर से अस्तित्व में आया रोमी साम्राज्य और इस गठबन्धन के सहयोगी राजा इस तंत्र के विरोध में हो जाएंगे और उसे नाश कर देंगे। (अतिरिक्त जानकारी के लिए प्रकाशितवाक्य 18 में बाबुल और उसके विनाश का वर्णन देखें)।

सारांश

नया नियम में भेदों के सम्बन्ध में चार और हवाले (स्थल) हैं:

1 कुरिन्थियों 2:7 में पौलुस कहता है कि वह और अन्य प्रेरित ''परमेश्वर का वह गुप्त ज्ञान, भेद की रीति पर बताते हैं।'' उसके बाद वह यह स्पष्ट करता है कि यह भेद वे सच्चाइयाँ हैं जो पिछली पीढ़ियों से छिपा कर रखी गई थीं परन्तु अब वे पवित्र आत्मा के द्वारा प्रगट की गई हैं।

वह और अन्य प्रेरित ''परमेश्वर के भेदों के भण्डारी'' हैं (1 कुरि. 4:1)। एक बार फिर से यहाँ पर इस शब्द का प्रयोग मसीही काल–खण्ड की सभी नई सच्चाइयों को एक साथ व्यक्त करने के लिए किया गया है।

परन्तु वह 1 कुरिन्थियों 13:2 में हमें यह स्मरण दिलाता है कि सब भेदों और ज्ञान को समझ लेना ही काफी नहीं है। यदि हम में प्रेम नहीं, तो हम कुछ भी नहीं।

और अन्तिम हवाला, 1 कुरिन्थियों 14:2 में पाया जाता है, जहाँ पौलुस यह स्पष्ट करता है कि यदि कोई अन्य–अन्य भाषा में बातें करता है और वहाँ इसका अनुवाद करने वाला कोई न हो, तो वह किसी के लाभ का नहीं, भले ही वह सबसे गम्भीर भेद की बातें कह रहा हो।

अध्याय 26

मसीह की महिमाओं के विभिन्न पहलू

जब हम मसीह की महिमाओं के बारे में बात करते हैं, तो इसका अर्थ है कि हम उसकी परम श्रेष्ठताओं के बारे में बात कर रहे हैं, ये श्रेष्ठताएं उसके व्यक्तित्व, उसके पद, या उसके कार्य से सम्बन्धित हैं। इसका अर्थ उसकी नैतिक और आत्मिक सिद्धता भी हो सकता है जो परमेश्वर के वचन के माध्यम से विश्वास की आँखों से देखी जा सकती हैं। या इसका अर्थ वर्तमान समय में स्वर्ग में या राजाओं के राजा और प्रभुओं के प्रभु के रूप में उसकी वापसी के समय उसका भौतिक ऐश्वर्य और वैभव भी हो सकता है।

प्रभु यीशु की महिमाओं को गिन पाना असम्भव है। मनुष्य द्वारा प्रयोग में लाई गई शब्दावली समाप्त हो जाती है। इस अध्याय में हम इस महिमा के सात पहलुओं की ओर ध्यान केन्द्रित करेंगे जो कि पवित्रशास्त्र में पाए जाते हैं।

परमेश्वर के पुत्र के रूप में उसकी मूल, व्यक्तिगत महिमा

यह मसीह के ईश्वरत्व की सारी श्रेष्ठताओं और सिद्धताओं को दर्शाती है। यह एक ऐसी महिमा है जो अनन्त है और उसमें स्वाभाविक रूप से पाई जाती है। वह परमेश्वर की महिमा की चमक से कहीं भी कम नहीं है (इब्रा. 1:3)। प्रभु यीशु ने न ही अपने आप में इस महिमा को शून्य किया और न ही इसे उतार कर किनारे रखा। यह उसके अस्तित्व का स्वाभाविक रूप से अभिन्न अंग है। इसमें सारे अद्‌भुत गुण और चरित्र पाए जाते हैं। जब वह पृथ्वी पर आया तो उसने इस महिमा को मांस के एक देह से ढांप लिया, परन्तु यह महिमा उसमें हर समय थी, और समय-समय पर अपने तेज प्रगट करती थी, जैसा कि उसके रूपान्तर के समय (मत्ती 17:1-8; मर. 9:1-8; लूका 9:28-36)।

स्वर्ग में उसके पद की महिमा

अनादिकाल से, प्रभु यीशु एक अवर्णनीय आदर और वैभव के पद पर आसीन रहा है। वह अपने पिता के प्रतिदिन की प्रसन्नता का कारण और स्वर्गदूतों के द्वारा की जाने वाली आराधना का विषय था। परन्तु जब मनुष्य के छुटकारे की बात आई, तो उसने किसी भी कीमत पर इस पद में अपने आप को बनाए रखना आवश्यक नहीं समझा। बल्कि, उसने अपने आप को शून्य कर दिया (फिलि. 2:7अ, एक शब्दशः अनुवाद), और दास का स्वरूप

धारण किया, और मनुष्य की समानता में हो गया। नि:सन्देह चार्ल्स वेसली उसके पद की इसी महिमा के विषय में विचार कर रहे थे जब उन्होंने लिखा, ''उसने अपनी महिमा को दीनता के साथ उतार दिया, और जन्म लिया कि और किसी मनुष्य की मृत्यु न हो।''[1]

यह ध्यान रखना अत्यंत महत्वपूर्ण है कि उद्धारकर्ता द्वारा स्वयं को शून्य किया जाना सिर्फ स्वर्ग के उसके पद के सम्बन्ध में है उसके व्यक्तित्व के सम्बन्ध में नहीं। एक राजकुमार जंगल में रहने के लिए अपना राजमहल छोड़ सकता है, परन्तु ऐसा कोई तरीका नहीं है कि वह अपने व्यक्तित्व (राजकुमार होने) का त्याग करे।

यूहन्ना 17:5 में, उद्धारकर्ता ने यह प्रार्थना की थी, ''अब हे पिता, तू अपने साथ मेरी महिमा उस महिमा से कर, जो जगत की सृष्टि से पहले, मेरी तेरे साथ थी।'' दूसरे शब्दों में, वह उस पद की महिमा को फिर से दिए जाने के लिए प्रार्थना कर रहा था जो उसके पास तब थी जब वह पिता के साथ था, परन्तु पृथ्वी पर आने के द्वारा उसने इसे उतार कर रख दिया था।

मनुष्य के पुत्र के रूप में पृथ्वी पर उसके जीवन की महिमा

पृथ्वी पर एक मनुष्य के रूप में, प्रभु यीशु अपने द्वारा किए गए आश्चर्यकर्मों में महिमामय था। इसलिए सुसमाचार में लिखा है, ''यीशु ने गलील के काना में अपना पहला चिन्ह दिखा कर अपनी महिमा प्रगट की और उसके चेलों ने उस पर विश्वास किया'' (यूहन्ना 2:11अ)। वह अपने चरित्र की सिद्धता में महिमामय था। वह पाप के विषय में अज्ञात था, उसने कोई पाप नहीं किया, और उसमें कोई पाप न था (2 कुरि. 5:21; 1 पतरस 2:22; 1 यूह. 3:5)। वह नैतिक रूप से इतना सिद्ध था कि वह अपनी इच्छा से कुछ भी नहीं कर सकता था। वह सिर्फ उन कार्यों को कर सकता था जिसे पिता ने उसे करने के लिए दिया था (यूह. 5:19)[2] और वह सिर्फ उन्हीं वचनों को बोल सकता था जिन्हें पिता ने उसे कहने को कहा था (यूह. 13:50; 17:8)। पीलातुस को यह स्वीकार करना पड़ा कि उसके भीतर कोई दोष नहीं है (लूका 23:14,22; यूह. 18:38; 19:4,6)। हेरोदेस इस निष्कर्ष तक पहुँचा कि मसीह ने मारे जाने के योग्य कोई कार्य नहीं किया है (लूका 23:15)। प्रभु यीशु के साथ क्रूस पर लटकाए गए डाकू ने भी यह गवाही दी कि यीशु ने कुछ भी गलत नहीं किया है (लूका 23:41)। यहाँ तक कि यहूदा ने यह स्वीकार किया कि उसने एक ''निर्दोषी'' को पकड़वाया है (मत्ती 27:4)।

उद्धारकर्ता न सिर्फ निष्पाप होने में महिमामय था; वह अपनी वाणी में भी महिमामय था। नासरत के लोग उसके मुँह से निकलने वाले अनुग्रह के वचनों को सुन कर अचम्भा करते थे (लूका 4:22)। जो अधिकारी उसे गिरफ्तार करने को गए थे उन्हें यह स्वीकार करना पड़ा, ''किसी मनुष्य ने कभी ऐसी बातें नहीं कीं'' (यूह. 7:46)। वह अपने सिद्ध मनुष्यत्व में महिमामय था। इसे हमारे प्रभु यीशु मसीह की नैतिक महिमा के रूप में जाना जाता है।

उसके द्वारा हासिल की गई महिमा

यदि हमारा प्रभु स्वर्ग में ही रह जाता, तो वह कभी उद्धारकर्ता नहीं बन पाता। परन्तु क्रूस पर चढ़ कर और कब्र में से जी उठ कर, वह उद्धारकर्ता के रूप में सिद्ध बन गया। इसलिए लिखा है:

क्योंकि जिसके लिए सब कुछ है और जिसके द्वारा सब कुछ है, उसे यही अच्छा लगा कि जब वह बहुत से पुत्रों को महिमा में पहुँचाए, तो उनके उद्धार के कर्ता को दुःख उठाने के द्वारा सिद्ध करे (इब्रा. 2:10)

और सिद्ध बन कर, अपने सब आज्ञा माननेवालें के लिए सदा काल के उद्धार का कारण हो गया (इब्रा. 5:9)।

यह स्पष्ट है कि व्यक्तित्व में वह सिद्ध नहीं बनाया जा सकता। वह अपने व्यक्तित्व में हमेशा से ही सिद्ध है। परन्तु वह सिद्ध उद्धारकर्ता बन सकता था और वह बना।

प्रभु ने अपने द्वारा हासिल की गई इस महिमा के विषय में उल्लेख किया था, जब कलवरी की ओर देखते हुए, उसने कहा था:

वह समय आ गया है कि मनुष्य के पुत्र की महिमा हो (यूह. 12:23ब)।

सिद्ध उद्धारकर्ता के रूप में उसके द्वारा हासिल की गई इस महिमा के अतिरिक्त, प्रभु यीशु ने अपने देहधारण और बलिदान के कार्य के द्वारा कुछ और सम्मान प्राप्त किया। यदि उसने देहधारण न किया होता, तो वह कभी मसीह नहीं बन सकता था, क्योंकि यह अनिवार्य था कि मसीह दाऊद के वंश का हो। यदि वह कलवरी के क्रूस पर न चढ़ता, तो वह कभी भी महायाजक, सहायक, मध्यस्थ, हमारे लिए विनती करने वाला, छुटकारा देने वाला, अच्छा चरवाहा, सारी वस्तुओं का वारिस, न्यायधीश, या कलीसिया का सिर नहीं बन पाता। उसे वह नाम कभी नहीं मिल पाता जो सब नामों में श्रेस्ठ है और वह कभी मरे हुओं में पहिलौठा नहीं बन पाता। जो भी पदनाम उसे उसके देहधारण, उसकी मृत्यु, और पुनरुत्थान के कारण प्राप्त हुए हैं, उन्हें उसके द्वारा हासिल की गई महिमा कहा जाता है।

उसके द्वारा हासिल की गई महिमा के एक अन्य उदाहरण के रूप में वह यूहन्ना 17:10 का हवाला देता है:

और जो कुछ मेरा है वह सब तेरा है, और जो तेरा है वह मेरा है, और इनमें मेरी महिमा प्रगट हुई है।

वह अपने पवित्र लोगों में महिमा पाए, यह कलवरी पर उसके द्वारा पूर्ण किए गए कार्य के परिणाम के रूप में ही सम्भव है। 2 थिस्स. 1:10अ में, पौलुस ने इसे विशेष रूप से प्रभु यीशु

के दूसरे आगमन से जोड़ा है:

यह उस दिन होगा, जब वह अपने पवित्र लोगों में महिमा पाने और सब विश्वास करनेवालों में आश्चर्य का कारण होने को आएगा।

उसके पुनरुत्थान और स्वर्गारोहण की महिमा

एक बार फिर से यूहन्ना 17:1 में, हमारा प्रभु इस रीति से बात कर रहा है मानों कलवरी का कार्य पूरा हो चुका हो। वह यह प्रार्थना करता है कि पिता उसकी महिमा करे, अर्थात्, उसे मरे हुओं में से जिलाने के द्वारा, ताकि पुत्र, इसके बदले पिता की महिमा कर सके।

यूहन्ना 13:31–32 इससे मिलता–जुलता स्थल है:

जब वह (यहूदा) *बाहर चला गया तो यीशु ने कहा, ''अब मनुष्य के पुत्र की महिमा हुई है, और परमेश्वर की महिमा उसमें हुई है; यदि उसमें परमेश्वर की महिमा हुई है, तो परमेश्वर भी अपने में उसकी महिमा करेगा और तुरन्त करेगा।''*

वह अपनी मृत्यु को एक ऐसे माध्यम के रूप में बताता है जिसके द्वारा उसकी महिमा हुई, और जिसके द्वारा उसने पिता की बड़ी महिमा की। पद 32 का सारांश यह है: इसलिए कि मसीह के द्वारा क्रूस पर पूर्ण किए गए कार्य से परमेश्वर की महिमा हुई, परमेश्वर उसकी महिमा करेगा, अर्थात्, उसे मरे हुओं में से जिलाने के द्वारा, और वह ऐसा निश्चय करेगा। ठीक ऐसा ही हुआ। उसने उसे तीसरे दिन जिला दिया।

यहाँ पर कुछ और पद दिए गए हैं जो उसके पुनरुत्थान और स्वर्गारोहण की महिमा के विषय में हैं:

क्या अवश्य न था कि मसीह ये दु:ख उठाकर अपनी महिमा में प्रवेश करे? (लूका 24:26)।

उसने यह वचन पवित्र आत्मा के विषय में कहा, जिसे उस पर विश्वास करनेवाले पाने पर थे; क्योंकि आत्मा अब तक न उतरा था, क्योंकि यीशु अब तक अपनी महिमा को न पहुँचा था (यूह. 7:39)।

उसके चेले ये बातें पहले न समझे थे, परन्तु जब यीशु की महिमा प्रगट हुई तो उनको स्मरण आया कि ये बातें उसके विषय में लिखी हुई थीं और लोगों ने उससे इसी प्रकार का व्यवहार किया था (यूह. 12:16)।

इब्राहीम और इसहाक और याकूब के परमेश्वर, हमारे बापदादों के परमेश्वर ने अपने सेवक यीशु की महिमा की, जिसे तुम ने पकड़वा दिया, और जब पीलातुस ने उसे छोड़

देने का विचार किया, तब तुम ने उसके सामने उसका इन्कार किया (प्रेरित 3:13)।

और महिमा में ऊपर उठाया गया (1 तीमु. 3:16)।

उसके द्वारा तुम उस परमेश्वर पर विश्वास करते हो, जिसने उसे मरे हुओं में से जिलाया और महिमा दी कि तुम्हारा विश्वास और आशा परमेश्वर पर हो (1 पतरस 1:21)।

उसके पुनरुत्थान और स्वर्गारोहण की महिमा का विलय स्वर्ग में उसकी अनन्त महिमा के साथ हो जाता है। इन्हें अलग नहीं किया जा सकता।

उसके द्वितीय आगमन की महिमा

इस महिमा के विषय में नया नियम में उसकी दूसरी महिमाओं की तुलना में अधिक उल्लेख पाया जाता है। मनुष्य का पुत्र सामर्थ और बड़ी महिमा के साथ बादलों पर आएगा (मत्ती 24:30)। उस दिन, वह अपने पवित्र लोगों में महिमा पाएगा और सब विश्वास करने वालों के आश्चर्य का कारण होगा (2 थिस्स. 1:10)। जब वह अपनी महिमा के सिंहासन पर बैठेगा, वह प्रेरितों – और उसके पीछे चलने वाले सब लोगों को – प्रतिफल देगा (मत्ती 19:28), और जातियों का न्याय करेगा (मत्ती 25:31–33)। जो उससे और उसकी बातों से लजाएगा, प्रभु भी जब अपनी महिमा में आएगा तो ऐसे लोगों से लजाएगा (लूका 9:26)। याकूब और यूहन्ना ने बुद्धिहीनता दर्शाते हुए मसीह के आने वाले राज्य की महिमा में उसके दाहिने और उसके बाएँ बैठने के लिए निवेदन किया (मर. 10:37)। जो अभी मसीह के दुखों में सहभागी होते हैं वे अत्याधिक आनन्द करेंगे जब हजार वर्ष के उसके राज्य में उसकी महिमा प्रगट होगी (1 पतरस 4:13)।

मसीह के रूपान्तर के समय मसीह की उस समय की महिमा की एक पूर्वझलक देखी गई जब वह राजाओं के राजा और प्रभुओं के प्रभु के रूप में आएगा। पतरस, याकूब, और यूहन्ना ने पवित्र पर्वत पर उसकी महिमा को देखा।

और हम ने उसकी ऐसी महिमा देखी, जैसी पिता के एकलौते की महिमा (यूह. 1:14ब)।

पतरस और उसके साथी नींद से भरे थे, और जब अच्छी तरह सचेत हुए, तो उसकी महिमा और उन दो पुरुषों को, जो उसके साथ खड़े थे, देखा (लूका 9:32)।

बाद में पतरस ने रूपान्तर की ओर ध्यान दिलाते हुए यह स्पष्ट किया कि यह सामर्थ और आगमन से सम्बन्धित था, अर्थात्, हमारे प्रभु यीशु मसीह का सामर्थ में हो कर आगमन (2 पतरस 1:16)।

मसीह के राज्य में उसकी महिमा का एक और उल्लेख यूहन्ना 17:22 में किया गया है। यहाँ पर हमारा बड़ा महायाजक कह रहा है:

वह महिमा जो तू ने मुझे दी मैंने उन्हें दी, कि वे वैसे ही एक हों जैसे कि हम एक हैं।

एक अर्थ में, इस समय हम उसकी कुछ महिमाओं के सहभागी हैं – परमेश्वर के पुत्र और पुत्रियों के रूप में, उसके भाई–बहनों के रूप में, उसकी देह के अंग के रूप में, और उसके संगी–वारिस के रूप में।

परन्तु इस स्थल में, वह पृथ्वी पर के अपने राज्य के विषय में भी इस तरह से बात कर रहा है मानों इस समय यह वर्तमान है। हम उसकी महिमा के सहभागी बनेंगे जब हम उसके साथ मिलकर एक हजार वर्ष के लिए राज्य करेंगे (प्रका. 20:4स)। जब वह अपनी महिमा में प्रगट किया जाएगा, तब हम भी महिमा में दिखाई देंगे।

वर्तमान समय में, संसार परमेश्वर के लोगों को न महत्व देता है और न उनकी सराहना करता है:

...इस कारण संसार हमें नहीं जानता, क्योंकि उसने उसे (प्रभु यीशु को) भी नहीं जाना है (1 यूह. 3:1ब)।

परन्तु जब वह महिमा में प्रगट होगा, तब विश्वासी महिमा में दिखाई देंगे:

जब मसीह जो हमारा जीवन है, प्रगट होगा, तब तुम भी उसके साथ महिमा सहित प्रगट किए जाओगे (कुलु. 3:4)।

हे प्रियो, अब हम परमेश्वर की सन्तान हैं, और अभी तक यह प्रगट नहीं हुआ कि हम क्या कुछ होंगे। इतना जानते हैं कि जब वह प्रगट होगा तो हम उसके समान होंगे, क्योंकि उसको वैसा ही देखेंगे जैसा वह है (1 यूह. 3:2)।

तब संसार प्रभु यीशु और उसके अनुयायियों के बीच के एकत्व को देखेगा, और यह जान लेगा कि पिता ने पुत्र को भेजा, और यह भी कि परमेश्वर अपने विश्वासियों से भी वैसा ही प्रेम रखता है जैसा कि अपने पुत्र से।

स्वर्ग में उसकी वर्तमान महिमा

प्रभु यीशु मसीह की इच्छा, जैसा कि यूहन्ना 17:24 में व्यक्त की गई है, यह है कि जो उससे प्रेम रखते हैं वे उसके साथ स्वर्ग में हों, ताकि वे उसकी महिमा को देख सकें। विश्वास के द्वारा हम अभी से उसे महिमा और आदर का मुकुट पहिने हुए वहाँ देख सकते हैं।

पर हम यीशु को जो स्वर्गदूतों से कुछ ही कम किया गया था, मृत्यु का दुःख उठाने के कारण महिमा और आदर का मुकुट पहिने हुए देखते हैं, ताकि परमेश्वर के अनुग्रह से वह हर एक मनुष्य के लिए मृत्यु का स्वाद चखे (इब्रा. 2:9)।

स्वर्ग में उसकी वर्तमान महिमा को पतरस ने उसकी अनन्त महिमा कहा है:

अब परमेश्वर जो सारे अनुग्रह का दाता है, जिसने तुम्हें मसीह में अपनी अनन्त महिमा के लिए बुलाया, तुम्हारे थोड़ी देर तक दु:ख उठाने के बाद आप ही तुम्हें सिद्ध और स्थिर और बलवन्त करेगा (1 पतरस 5:10)।

किन्तु, एक अर्थ में यह महिमा उसकी उस व्यक्तिगत महिमा से भिन्न है जो पृथ्वी पर उसके आने से पहले थी। अब वह स्वर्ग में अपने ईश्वरत्व की महिमा के साथ-साथ एक महिमा प्राप्त मनुष्य के रूप में भी है।

उसकी वर्तमान महिमा उसकी सारी महिमाओं का, चाहे स्वाभाविक या उसके द्वारा हासिल की गई, एक मेल है। यह उसके ईश्वरत्व, उसके मनुष्यत्व, उसके गुणों, उसके पदों, और उसके चरित्रों की महिमा है। हम उनमें सहभागी होने के लिए नहीं, बल्कि उनका आनन्द उठाने और इन महिमाओं के लिए सदा उसकी स्तुति करने हेतु बुलाये गये हैं।

अन्त्य टिप्पणी

1. अपने प्रिय क्रिसमस केरोल, ''सुनो दूतगण गाते हैं'' में।

2. यह इस प्रश्न का उत्तर दे देता है, ''क्या यीशु पाप कर सकता है?'' वह सिर्फ वही कर सकता था जिसे उसने पिता को करते देखा था, पाप इसमें शामिल नहीं है। उसने हमेशा वही कार्य किया जिनसे पिता प्रसन्न होता था (यूह. 8:29), और पाप इसमें भी शामिल नहीं है।

3. यह पद पृथ्वी पर मनुष्य के पुत्र के रूप में उसकी नैतिक महिमा के बारे में भी हो सकता है, परन्तु प्राथमिक रूप से यह उसके रूपान्तर के विषय में है।

अध्याय 27

सुसमाचारों में अन्तर

जब हम सुसमाचारों का अध्ययन करते हैं, तो हम यह देखते हैं कि इनमें बहुत सारी बातें दोहराई गई हैं, विशेष कर के, मत्ती, मरकुस, और लूका में। प्रभु के वही आश्चर्यकर्म, वही दृष्टान्त, और वही सन्देश तीनों सुसमाचारों में पाए जाते हैं। किन्तु, कोई भी बात अनावश्यक नहीं दोहराई गई है। पवित्र आत्मा बिना कारण के कभी अपने आप को नहीं दोहराता।

गहराई से अध्ययन करने पर हम यह पाएंगे कि समानताएं नहीं, बल्कि भिन्नताएं महत्वपूर्ण होती हैं। हम जिन बातों को दोहराव समझ बैठते हैं, उनमें अक्सर हलका सा बदलाव रहता है जो अपने आप में अत्यंत महत्व रखता है।

सुसमाचारों के बीच के तालमेल को स्पष्ट करने के उद्देश्य से अनेक पुस्तकें लिखी गई हैं। परन्तु अधिकांश पुस्तकें प्रमुख बिन्दु (उद्देश्य) से चूक जाती हैं। तालमेल नहीं, बल्कि अलग–अलग सच्चाइयाँ महत्वपूर्ण हैं जो एक से दिखने वाले स्थलों के द्वारा सामने लाई गई हैं। आइये हम मिलते–जुलते स्थलों की तुलना करने के द्वारा इस बात को स्पष्ट करें:

चारों सुसमाचारों में, यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाले ने सुनने वालों को यह बताया है कि प्रभु उन्हें बपतिस्मा देगा। जब वह सिर्फ विश्वासियों से बात कर रहा था, तब उसने कहा, ''मैं ने तो तुम्हें जल से बपतिस्मा दिया है पर वह तुम्हें पवित्र आत्मा से बपतिस्मा देगा'' (मर. 1:8; यूह. 1:33)। परन्तु जब सुनने वालों में अविश्वासी भी थे, तब उसने कहा, ''मैं तो पानी से तुम्हें मनफिराव का बपतिस्मा देता हूँ, परन्तु जो मेरे बाद आनेवाला है, वह मुझ से शक्तिशाली है; मैं उसकी जूती उठाने के योग्य नहीं। वह तुम्हें पवित्र आत्मा और आग से बपतिस्मा देगा'' (मत्ती 3:11; लूका 3:16)। वह दो अलग–अलग बपतिस्मा के बारे में बात कर रहा था। पहला आशीष का बपतिस्मा है, और दूसरा न्याय का।

दो उपदेश, एक नहीं

पहाड़ी उपदेश मत्ती 5–7 में पाया जाता है। इसका कुछ भाग लूका 6:7 से आगे में दोहराया गया है। परन्तु ये दोनों दो अलग–अलग सन्देश हैं जो अलग–अलग अवसरों पर दिए गए हैं। मत्ती के सुसमाचार का उपदेश पहाड़ पर दिया गया। लूका के सुसमाचार में पाया जाने वाला उपदेश मैदान में दिया गया। प्रभु यीशु चेलों के साथ नीचे आ कर समतल स्थान पर खड़ा हो जाता है (लूका 6:17)। मत्ती ने स्वर्ग के राज्य के आदर्श नागरिक के गुणों का वर्णन किया है, जबकि लूका ने चेलों की जीवनशैली का वर्णन किया है जब वे सुसमाचार ले

कर जगह-जगह जाएंगे। मत्ती में मन के दीन लोगों के लिए आशीष के वचन कहे गए हैं (5:3); लूका में प्रभु ने दीन लोगों को आशीष दी है (6:20)। मत्ती में हाय का कोई वचन नहीं कहा गया है; लूका में हाय के चार वचन कहे गए हैं (6:4-26)। ऐसे अन्तर आने पर हमें जल्दी से और बिना सोचे समझे आगे बढ़ नहीं जाना चाहिए।

मत्ती और लूका दोनों ने ही लूका के इस कथन को उद्धरित किया है, ''शरीर का दीया आँख है।'' मत्ती में यह कथन इस सन्दर्भ में व्यक्त किया गया है कि धन के प्रति प्रेम आत्मिक दृष्टि को बाधित करती है (6:22)। लूका के स्थल में धन का कोई उल्लेख नहीं पाया जाता (11:33-36)। यहाँ पर यह विचार पाया जाता है कि प्रभु यीशु की शिक्षाओं को ग्रहण करने और उन्हें दूसरों के साथ बाँटने से आशीषें हमारे पास आती हैं।

सुसमाचारों में तीन बार, यह वाक्यांश पाया जाता है, ''जिस नाप से तुम नापते हो, उसी से तुम्हारे लिए भी नापा जाएगा।'' मत्ती 7:2 में, यह दूसरों पर दोष लगाने वाले रवैये के विरुद्ध में एक चेतावनी है। मरकुस इसे परमेश्वर के वचन को सुनने और ग्रहण करने के लिए एक प्रोत्साहन के रूप में हमारे सामने रखता है (4:24)। और लूका इसका प्रयोग परमेश्वर के लोगों के बीच में उदारता को बढ़ावा देने के उद्देश्य से करता है (6:38)।

मत्ती 10:24 में, प्रभु यीशु ने कहा, ''चेला अपने गुरु से बड़ा नहीं होता, और न दास अपने स्वामी से।'' उसके बाद लूका 6:40 में, वह कहता है, ''चेला अपने गुरु से बड़ा नहीं, परन्तु जो कोई सिद्ध होगा, वह अपने गुरु के समान होगा।'' ऐसा लगता है कि दोनों ही वाक्यों में एक ही बात कही गई है, परन्तु दोनों में बहुत अन्तर है। मत्ती में, उद्धारकर्ता यह शिक्षा दे रहा है कि एक चेला यह अपेक्षा नहीं कर सकता कि गुरु की तुलना में वह स्वयं सताव से अधिक मुक्त होगा, जबकि लूका में इसका अर्थ यह है कि एक विश्वासी किसी भी व्यक्ति के आत्मिक स्तर को उतनी ही ऊँचाई तक ले जाने में उसकी अगुवाई कर सकता है जिस आत्मिक स्तर को वह स्वयं हासिल कर सका है, उससे अधिक ऊँचाई तक वह उसे नहीं ले जा सकता।

निन्नानवे

निन्नानवे भेड़ों की कहानी को हम सब अच्छी तरह से जानते हैं। मत्ती 18:12-13 में, यह छोटे बच्चों के प्रति प्रभु के प्रेम का चित्रण करती है (पद 14 देखें)। लूका 15:4-7 में यह कहानी फरीसियों और सदूकियों को निशाना बनाते हुए बताई गई जो मनफिराव की आवश्यकता को स्वीकार नहीं कर रहे थे (पद 2 और पद 7)।

तोड़ों के दृष्टान्त (मत्ती 25:14-30) और मुहरों के दृष्टान्त (लूका 19:12-17) को एक ही दृष्टान्त नहीं समझ लेना चाहिए। तोड़ों के दृष्टान्त में, तीन व्यक्तियों को उनकी

योग्यता के अनुसार अलग–अलग राशि दी गई थी। पहले दो व्यक्तियों को उनकी अलग–अलग योग्यताओं के बाद भी समान सराहना मिली क्योंकि वे विश्वासयोग्य थे। तीसरे की निन्दा की गई क्योंकि उसे जो कुछ दिया गया था उससे वह कुछ न कर सका।

मुहरों के दृष्टान्त में, तीनों व्यक्तियों को समान राशि दी गई। उन्हें समान अवसर मिले। एक ने इस राशि को दस गुना बना दिया, दूसरे ने पाँच गुना, और तीसरे ने कुछ भी नहीं। पहले दो व्यक्तियों को उन्हें दिए गए धन का अधिकतम प्रयोग करने में दर्शायी गई विश्वासयोग्यता के अनुसार प्रतिफल दिया गया। तीसरे ने वह भी खो दिया जो उसे दिया गया था।

कितने बार इंकार किया गया

क्या यह सम्भव है कि पतरस ने कम से कम छह बार प्रभु यीशु मसीह का इंकार किया। यदि हम सुसमाचारों का अध्ययन सावधानीपूर्वक करें, तो हम पाएंगे कि पतरस ने निम्नलिखित लोगों के सामने प्रभु यीशु का इंकार किया (1) एक लौण्डी (मत्ती 26:69–70; मर. 14:66–68); (2) दूसरी लौण्डी (मत्ती 26:71–72; मर. 14:69–70); (3) भीड़ जो वहाँ खड़ी थी (मत्ती 26:73–74; मर. 14:70–71); (4) किसी और ने (लूका 22:58); (5) एक और मनुष्य (लूका 22:59–60); (6) महायाजक के दासों में से एक (यूह. 18:26–27)। यह अन्तिम मनुष्य अन्य सभी से अलग था, क्योंकि उसने यह कहा, ''क्या मैं ने तुझे उसके साथ बारी में न देखा था?'' शेष लोगों ने ऐसा नहीं कहा।

प्रत्येक सुसमाचार के समापन पर, प्रभु यीशु मसीह ने अपने चेलों को आज्ञा दी है, परन्तु हर बार अलग–अलग बातों पर जोर दिया गया है।

मत्ती – चेले बनाओ, प्रचार करो, सिखाओ (28:19)

मरकुस – सुसमाचार का प्रचार करो (16:15)

लूका – गवाह बनो (24:28)

यूहन्ना – मेरे पीछे हो ले)[1]

अन्त्य टिप्पणी

1. यह बात पतरस से कही गई थी, परन्तु यह सब विश्वासियों पर लागू होती है।